Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन ज्ञान

[हिन्दी मासिक]

मूल्य १-५०

सितम्बर १९७४

आश्विन २०३१

उठो ! और काम करो !

१९७५ फिर नहीं आएगा। सोते रहे तो जागरण की यह स्वर्ण वेला व्यर्थ जाएगी। बहुत थोड़ा समय बचा है, आर्य बन्धुओ !

१२ अप्रैल १९७५ को आर्य समाज का १००वाँ जन्म दिवस अभी से धूमधाम से मनाने का निश्चय करो ?

काम करो, अपने क्षेत्र के प्रत्येक व्यक्ति तक ऋषि दयानन्द संदेश पहुंचाने में लगो। कागजी योजनाओं और नारों से बचो। अपने क्षेत्र में अपनी पूरी शक्ति लगाकर आर्यसमाज शताब्दी मनाओ।

१२ अप्रैल १९७५ को आपका घर, ग्राम और नगर जगमगाए दयानन्द के गीत गाए इस लिए अभी से तैयारी करो। —भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जांच समिति और अमेरिकन राष्ट्रपति लिंकन का उत्तर

गृहयुद्ध की जांच पड़ताल करने के लिए बैठायी गयी समिति ने जब लिंकन की सख्त आलोचना की, तो एक अफसर ने उन्हें सलाह दी की आप किसी अखबार को पत्र लिखकर पूरी असलियत लोगों के सामने रखें।

लिंकन ने सलाह को अस्वीकार करते हुए कहा—अगर मैं हर किसी के आक्षेपों का जवाब देने लगूं, तो दूसरे कामों के लिए मेरे पास बहुत कम समय रह जायेगा। मैं जिसे ठीक समझता हूं, पूरी ईमानदारी के साथ करता हूं। अगर अन्त में मेरे कामों का नतीजा सही निकला, तो आज मेरे बारे में जो कुछ कहा जा रहा है, उसकी कोई कीमत नहीं रह जायेगी। और अगर अंत में नतीजा सही नहीं निकला और मैं गलत साबित हुआ, तो आज मैं चाहे कितनी भी सफाई पेश करूं, वह झूठ ही समझी जायेगी।'

धरती के प्रत्येक भू भाग में

जहाँ भी ऋषि दयानन्द का कोई अनुयायी रहता हो

१२ अप्रैल १९७५

चैत्र सुदि प्रतिपदा को

आर्यसमाज शताब्दी स्थापना समारोह

धूमधाम और पूरे बल से मनाने की तैयारी करें

२. सारे ग्राम और नगर को सजाएँ।

३. हर घर में दीवाली मनाएँ।

४. साहित्य बांटें और आर्यसमाज की विजय ध्वजा फहराएँ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

[पंजीकृत ट्रस्ट]

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली का प्रकाशन

जन-ज्ञान
(मासिक)

सम्पादक
—राकेशरानी

दूरभाष : ५६६६३९

—पता
१५९७, हरध्यानसिंह मार्ग
निकट ३१-नाईवाला
करौल बाग, नई दिल्ली-५

वार्षिक मूल्य १५)
विदेश में—३ पौंड
(हवाई डाक से)
आजीवन—२५१)

वर्ष ७ : अंक ५
आश्विन—संवत् २०३१
सितम्बर—१९७४

तुम और मैं !

आग और पानी का मेल सम्भव नहीं है। झूठ और सच एक साथ नहीं रह सकते। काम और सम्मान में कभी ताल मेल नहीं हो सकता।

जो परिवर्तन सुधार चाहते हैं उन्हें मालाएँ नहीं, गालियां और गोलियां मिलती हैं। जो सेवा करते हैं वे ठोकर खाते हैं। और संसार उनके जीवन में उनकी कभी सराहना नहीं करता।

धर्म और अधर्म, पाप और पुण्य, प्यार और युद्ध एक दूसरे के पूरक नहीं, विरोधी हैं। जीवन और मृत्यु का साथ धरती पर किसने देखा है ?

मैं और तुम भी इसी तरह दो दिशाओं के यात्री हैं। तुम्हें प्रदर्शन प्रिय है और मुझे काम। तुम योजनाएँ बनाते हो, सब को बहकाते हो और मैं कुछ करने के बाद काम की सूचना प्रसारित करती हूँ।

मैं एक बूँद हूँ जो धरती में मिल जाने की इच्छुक हूँ और तुम हो इठलाती सरिता, जो सभी को बहा ले जाने में जीवन की सफलता मान रही हो।

तुम शृंगार को अभिसार मानती हो और मैं बलिदान का अर्घ्य सजाती हूँ। मेरे गीत निर्माण की गंगा बहाते हैं और तुम संहार में सृजन के स्वप्न संजोती हो।

युग-युग तक मैं और तुम साथ नहीं रह सके और इसीलिये आज भी मैं अकेली हूँ। नितान्त एकाकी........

शून्य से निर्माण के स्वर बजाने का अभ्यास कर रही हूँ।

तुम और मैं, मैं और तुम कभी साथ नहीं रहे और रहेंगे भी नहीं इसी में जीवन का सार है।

—राकेश रानी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश के सुप्रसिद्ध शास्त्रार्थ महारथी,

श्री पं० विद्यानन्द शर्मा, मन्तिकी का पत्र

समादरणीय महोदय,

आपका वेद प्राप्त हुआ, दर्शन मात्र से तृप्ति हो गई, आपको जितना धन्यवाद दिया जाये थोड़ा है। वेदों का शुद्ध भाष्य करके पूज्य स्वामी दयानन्द जी महाराज ने वेदों को चार चाँद लगा दिये। परन्तु आपने तन-मन-धन लगाकर छपाई सफाई और जिल्दों को स्वर्णिम सौम्य रूप प्रदान कर आठ चाँद लगा दिये जिसे ज्ञान तथा चर्मचक्षु वाले आर्य महानुभाव देखकर उछल पड़ते हैं। हर्षोल्लसित मनसा गद्‌गद् हो उठते हैं। ज्ञानचक्षु से स्वामी जी का भाष्य और चर्मचक्षु से वेद की चमत्कृत सजावट। भारतेन्द्रनाथ जी ! आपने अपना जन्म सफल कर लिया। नहीं नहीं सपरिवार तर गये। भवसागर पार कर गये। यदा-कदा "वेद मुद्रण" का इतिहास लिखा जायेगा, तो जैसे आपने मसिमय वेदाक्षरों पर स्वर्णिम आवरण पट्ट चढ़ाकर शोभा बढ़ाई है। ऐसे ही इतिहास में आप स्वर्ण अक्षरों में चमकेंगें। विदुषी राकेश रानी सुलभा गार्गी की भाँति ब्रह्म वादिनी देवियों में परिगणित हो जायेंगी। लोग यूनिवर्सिटियों के दरवाजे खट-खटाते रहे, ये अनायास पूर्वापर सुकृत कर्मों के प्रताप से कभी जीर्ण-शीर्ण न होने वाली वेद की अमृतमयी वाणी के सम्पादन से इस जीवन में ही अमृतत्त्व को प्राप्त कर लीं। **"कीर्तियस्य जीवति स जीवति"** वेदों को शृङ्गारमय ढाँचे में ढाल दिया, जो देवियों का 'जन्मसिद्ध' अधिकार है। यह वैदिक दाम्पत्य जीवन सदा पुष्पित पल्लवित होता रहे।

एवं च भवदीयं समुत्कर्ष नित्यमाशासे ।
पवित्रं दयानन्द संस्थानं विजयेततमाम् ॥
मुद्रितानि शोभनानि पुस्तकानि वेदाख्यानि ।
तस्माच्छ्रेयो भवतु सञ्चालक महोदयानाम् ॥
इत्याशास्ते विद्यानन्दः सर्वदा जगदीश्वरात् ।
वेदवाणीमलङ्कृत्य ये च जीवन्ति मानवाः ॥
ते हि सर्वे सुखिनः सन्त्वार्याः जन्मनि-जन्मनि ।

—सततशुभेच्छुको

वाराणसी —विद्यानन्द शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आश्विन २०३१ | सितम्बर १९७४

अंक में पढ़िये

१—संपादकीय		१
२—मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ		५
३—उठ क्यों खो बैठा विश्वास (कविता)		१०
४—शेख और कशमीर		१२
५—वेद विचार	—सत्यपाल वेदशिरोमणि	१७
६—मुरार जी देसायी (आत्म कथा)		२१
७—छत्रपति शिवाजी	—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु	२६
८—काँच की चूड़ियां	—प्रकाशवती शास्त्री	२९
९—सब को प्यार करो (कविता)	—विद्यावती मिश्र	३१
१०—कुछ जलते प्रश्न		३२
११—धधकती ज्वाला (मंथन)	—शिवराज एम० ए०	३४
१२—मुसाफिर (भजन)		३६
१३—गायत्री मंत्र पर पुनः प्रहार क्यों ?	—शिवपूजन एम० ए०	३७
१४—योग दर्शन का साधन पाद	—योगिराज पथिक	४०
१५—समाजवादी व्यवस्था (रेखाचित्र)	—बनारसीसिंह	४२
१६—वाद नीति	—एच० पी० आर्य	४४
१७—एक ऐतिहासिक षड़यंत्र	—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए०	४७
१८—ईश्वर से इन्कार क्यों ?	—दुर्गाशंकर	४९
१९—जय हिन्दी (कविता)	—निर्भय हाथरसी	५५
२०—आर्यसमाज के सिंह भेड़िए और भेड़	—वी० एन० चौबे	५८
२१—पूरी करने आया हूँ (कविता)	—श्रीचन्द्र	६४
२२—भारतीत इतिहास के पृष्ठ	—आनन्द प्रकाश	६५
२३—मेरठ विश्व विद्यालय में दर्शन		७३
२४—किमाश्चर्यम् ?	—शशिभूषण 'श्रेष्ठ'	७५
२५—मांसाहार (एक विवेचन)	—वेदप्रकाश	७७
२६—रो रो कह रहा (कविता)	—रमेशचन्द्र	८१
२७—आप ही के पत्र		८२
२८—सिद्धान्त चर्चा	—श्री जगदेवसिंह सिद्धान्ती, शास्त्री	८९
२९—नमन उन्हें (कविता)	—दिनकर	९१
३०—ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण भी है	—सिद्धान्ती	९२
३१—सन्देह निवारण	—सिद्धान्ती	९५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदभाष्य-प्रकाशन संकल्प प्रत्येक
मूल्य पर पूर्ण होगा

जितने भी संकट आएं--सब सहेंगे
मरेंगे या जिएंगे—सब कार्य पूरा करेंगे

हम और आप सब एक हैं
जिनका लक्ष्य वेद-प्रचार है, वे सब एक हैं

आप इस पवित्र कार्य में ऐसे भी
सहयोग दे सकते हैं

१. १४०) में एक वेदभाष्य का सदस्य बनाइये। इसमें कवर और जिल्द का भी मूल्य सम्मिलित है
२. दयानन्द-संस्थान द्वारा प्रकाशित साहित्य भारी संख्या में मंगाइए
३. २५१) भेजकर जन-ज्ञान हिन्दी या अंग्रेजी मासिक के आजीवन सदस्य बनिए
४. १००१) भेजकर वेदभाष्य में अपना चित्र प्रकाशित कराएं। आप चाहें तो किसी प्रियजन का चित्र भी छापा जा सकता है

जिस संगठन के १०,००० सक्रिय सदस्य हों
वे मिल-बांटकर यदि संकल्प ले लें
तो वेदभाष्य का महान् कार्य पूरा हो सकता है
विजय का सेहरा वेद-भक्तों की प्रतीक्षा कर रहा है
जो भी सहयोग दे सकें शीघ्र दीजिए

दयानन्द संस्थान
नई दिल्ली-५

राकेश रानी
मन्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ ~ भारतेन्द्र

सेवा का मार्ग

संसार के हर आंगन में प्रकाश पहुँचाने का कार्य सेवा का कार्य है। ग्राम-ग्राम और नगर-नगर में सत्य की आवाज पहुँचाना ही क्रांति है, और निर्माण के स्वरों को साकार रूप देना ही जीवन है। मनुष्य को मनुष्य बनाना और ईर्ष्या, द्वेष, संहार और युद्ध की भावनाएं समूल नष्ट करना ही आर्यत्व का प्रसार है।

विभिन्न मत-वाद और चिन्तन के प्रहरों में शांति स्वयं नहीं आएगी, उसे लाने के लिए शांति के उपासकों को प्रयत्न करने होंगे, संघर्ष करना होगा, और देने होंगे बलिदान, तभी नए युग का स्वर्णिम प्रभात होगा।

प्यार से, श्रद्धा से, तर्क और सत्य से अज्ञान की समाप्ति का आन्दोलन आज की सब से बड़ी आवश्यकता है। आवश्यकता है कि हम मत-वादों की समाप्ति का उपक्रम करें। समय के प्रभाव प्रवाह में न बहते हुए हमें समय को बदलने का संकल्प लेना है।

आज देश में या विदेश में सर्वत्र भौतिकता की लहर है। रोटी, कपड़ा और मकान को चरम लक्ष्य मानकर संपूर्ण चिन्तन चल रहा है। ऐसे में एक ऐसे प्रबल उद्घोष की आवश्यकता है जो अध्यात्म और भौतिकता में समन्वय स्थापित करा सके।

प्राचीन वैदिक धर्म अर्वाचीन काल में हिन्दु धर्म बना, ऋषि दयानन्द ने पुनः अज्ञान धाराओं को निकाल इसे वैदिक स्वरूप में प्रतिष्ठित किया और आज भी इस के सत्य स्वरूप से मानव मात्र को परिचित कराने की आवश्यकता है।

भूख, भ्रष्टाचार, मँहगायी आदि सभी के मूल कारण में अधर्म झांकता हुआ दिखायी देता है। वह अधर्म ही है जो मनुष्य को राक्षस बनाता है। अधर्म ही स्वार्थ और संग्रह की प्रवृत्ति का जनक है। अतः संसार की सेवा के इच्छुक सभी विचारक मिलकर अधर्म के विरुद्ध युद्ध घोषणा करें, यह समय की माँग है।

समय की माँग है कि हम युग मानस का चिन्तन प्रवाह बदलें। सत्य को धारण कर सभी कुछ सत्य पर स्थापित करें। सत्य सर्वोपरि है। सत्य अजेय है, सत्य ही जीवन और सत्य ही धर्म का आधार है।

विश्व की एकता, विचारों की एकता के बिना कठिन है। भूमंडल के सभी मनुष्य विभिन्न भाषा, वेश और सभ्यताओं के होते हुए भी यदि चिन्तन की दृष्टि से एक हो जाएं, तो यह धरती स्वर्ग बन सकती है।

सेवा नाम है स्वर्ग की स्थापना का, जहाँ भी सेवा होगी वहाँ स्वर्ग होगा। और स्वर्ग का अर्थ है शांति, आनन्द और प्यार की अमृत गंगा में स्नान.........!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शताब्दी की तैयारियां

सार्वभौम आर्यसमाज शताब्दी परिषद् के आह्वान पर भूमंडल में शताब्दी समारोह रचनात्मक रूप से मनाने का संकल्प फैलता जा रहा है। निराश आर्य-जन आशा की स्वर्णिम किरणें लेकर १२ अप्रैल १९७५ [चैत्र सुदि प्रतिपदा संवत् २०३२] को आर्यसमाज का सौवाँ जन्म दिवस मनाने में लग गए हैं।

देश-देशान्तरों में परिषद् द्वारा प्रसारित कार्यक्रम का आशातीत स्वागत हुआ है। अपने अपने क्षेत्र को वेदमय बनाने के अभियान आरम्भ हो चुके हैं। साहित्य वितरण द्वारा शताब्दी की पृष्ठ भूमि तैयारी की जा रही है।

धरती के विशाल प्रांगण में "ओ३म्" पताका अधिक से अधिक स्थानों पर लहराएगी। १२ अप्रैल को सभी आर्य अपना घर-बाजार-नगर दुल्हन सा सजाएंगे और उस दिन चारों ओर ऋषि दयानन्द, आर्यसमाज की जय के स्वर गूंजेंगे।

इस बीच हमें अनेक स्थानों पर जाने का, आर्यजनता से संपर्क का अवसर मिला, जहाँ भी हम गए सर्वत्र परिषद द्वारा प्रसारित कार्यक्रम का सभी ने हृदय खोल कर स्वागत किया। जनता का यह निश्चित विश्वास बन गया है कि—**हमें अपनी शक्ति का प्रयोग अपने ही क्षेत्र में करना चाहिए।**

वेद, सत्यार्थप्रकाश, ऋषि जीवन और प्रचारपोस्टरों से अपने नगर की दीवारें और घर आंगन भर दो। छोटी-छोटी प्रचार पुस्तकों से जनता के मानस को बदलो। और अपनी-अपनी क्षेत्रीय भाषाओं में साहित्य प्रकाशित कर नया सवेरा लाने में लग जाओ।

हमें विश्वास है कि ऋषि दयानन्द के अनुयायी आर्यसमाज का सौवां जन्म दिवस शान्ति, शान और उमंग से मनाएंगे। काम में लगेंगे और विजय वरण का संकल्प लेंगे।

सार्वदेशिक सभा के नए प्रधान

१८ अगस्त को श्री रामगोपाल जी (शाल वाले) सार्वदेशिक सभा के सर्व-सम्मति से प्रधान निर्वाचित हुए। शताब्दी समारोह के ऐतिहासिक अवसर पर इस सर्वोच्च पद पर आसीन होने का सौभाग्य प्राप्त करने के लिए हम उन्हें बधाई देते हैं।

सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज का सर्वोच्च संगठन है। उस का गौरव आर्य जनता का गौरव है। हमारी हार्दिक इच्छा रही है कि यह संगठन प्रबल हो, उन्नति करे और सर्वत्र भूमंडल में आर्यसमाज की विचारधारा प्रसारित करने में सफल हो।

हम सार्वदेशिक सभा को अपनी सभा समझते हैं। उस का गौरव अपना गौरव मानते हैं हमारी दृष्टि में सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज परिवार का प्रमुख है। एक परिवार का प्रमुख जिस तरह अपनी संतानों को कार्य करते देख प्रसन्न होता है उसी तरह सभा भी आर्यसमाज की सभी संस्थाओं की संरक्षिका सभा है। सभी संस्थाओं के कार्यों को देख प्रसन्न होना सभा का स्वभाव होना चाहिए।

किन्तु सभा का यह भी कर्तव्य है कि यदि कोई संस्था गलत काम करे तो उसका सुधार करे। किन्तु जो भी संस्था ऋषि दयानन्द या वैदिक विचार धारा का प्रचार करे उस को प्रोत्साहन देना सभा का धर्म है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुर्भाग्य से पिछले ३ वर्षों से सभा में कुछ ऐसे व्यक्ति अधिकार में आ गये जो किसी भी दृष्टि से सभा के अधिकारी होने की योग्यता नहीं रखते थे। इन व्यक्तियों ने अपने स्वार्थ साधन के लिए सभा को अपनी बपौती समझ कर आर्यसमाज के गौरव की चिन्ता न करते हुए मनमानी की। इन के कार्यकाल में सभा की जितनी अप्रतिष्ठा हुयी उसे देखकर किस आर्य का सिर शर्म से नहीं झुक जाएगा ?

गत वर्ष हमने मारीशस सम्मेलन के लिए कुछ सुझाव दिए थे। उन सुझावों पर विचार करने के स्थान पर सभा के कुछअधिकारी बौखला उठे। और अपनी बुद्धि शून्यता का ऐसा प्रमाण उपस्थित किया जिसे देख कर यह सोचने के लिए जनता को बाध्य होना पड़ा कि क्या यह संरक्षिका सभा है ?

हमने कभी सार्वदेशिक सभा का विरोध न किया है न करेंगे। किन्तु यदि कोई व्यक्ति सभा में बैठकर अनार्य अवैदिक कार्य करेगा तो उस के संबंध में सत्य प्रगट करना हम अपना कर्तव्य समझेंगे।

हम से कहा गया है कि हम अपने लिखे पर खेद प्रगट करें। किन्तु बहुत सोचने पर भी हम यह नहीं समझ पाए कि हमारा अपराध क्या था ? हम ने कभी किसी का विरोध नहीं किया, यदि सत्य कहना भी अपराध है तो इस अपराध के लिए हम बड़े से बड़ा कष्ट भी सहेंगे, पर सत्य नहीं छोड़ेंगे।

आर्यसमाज किसी की जागीर नहीं है। हम आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं, करते रहेंगे। आर्यसमाज के प्रचार के अतिरिक्त कभी और कोई कार्य न किया है न करेंगे। हम कई बार लिख चुके हैं कि बताइये हमारी भूल, हम सदा सुधारने हेतु तत्पर हैं। पर त्रुटि न बताकर, ईर्ष्यावश मनमाना अनर्गल प्रलाप लिखना हमारी गौरवपूर्ण सभा के अनुरूप नहीं है, यह हमारा नम्र निवेदन है।

हमें विश्वास है कि नवीन प्रधान माननीय श्री रामगोपाल जी का नेतृत्व सभा को पुनः अपने उच्चासन पर प्रतिष्ठित करा सकेगा। उन का सहयोग, आशीर्वाद सदा संस्थान को मिलता रहा है। वेद भाष्य के प्रथम खंड के विमोचन समारोह की अध्यक्षता कर उन्होंने अपने आर्यसमाज के प्रति अटूट प्रेम और निष्ठा का परिचय दिया था।

हम उन की सफलता के लिए हृदय से कामना करते हुए उन्हें विश्वास दिलाते हैं कि आर्यसमाज के सर्वोपरि हित की दृष्टि से हमारा पूर्ण सहयोग उन के साथ रहेगा। और वे अपनी सूझ-बूझ से, पार्टी बाजी, फूट और विवाद के वातावरण से ऊपर उठकर सभा और आर्यसमाज के गौरव का मार्ग प्रशस्त करने में सफल होंगे।

जहाँ तक हमारा सम्बन्ध है हमारा मस्तक ऋषि दयानन्द के अनुयायियों के चरणों में सदा झुका रहेगा और असत्य, अन्याय के विरुद्ध सदा हम संघर्ष करते रहेंगे।

प्रभु सभा के नए प्रधान को शक्ति दें कि वे आर्यसमाज को ऋषि दयानन्द का आर्यसमाज बनाने में सफल हों। आर्यसमाज का सौवाँ जन्म दिन सारा भूमंडल उन के नेतृत्व में १२ अप्रैल १९७५ को उत्साह और उमंग से मनाए।

हम अपने सभी सदस्यों की ओर से श्री रामगोपाल जी को विश्वास दिलाते हैं कि आर्यसमाज को आगे ले चलने के प्रत्येक आयोजन में हम उन का साथ देंगे। और कामना करते हैं कि वे अपने पद की गरिमा के अनुरूप एक पार्टी के प्रधान न बनकर संपूर्ण आर्य जगत् का प्रेम और सहयोग जुटाने में समर्थ हों।

—मंगल कामनाओं के साथ—भारतेन्द्रनाथ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भू मंडल में आर्यसमाज शताब्दी की व्यापक तैयारियां

१२ अप्रैल १९७५ को समारोह के भव्य आयोजन का संकल्प

रचनात्मक कार्यक्रम के प्रति जन मानस में अपार उमंग

नई दिल्ली, देश विदेश से प्राप्त समाचारों के अनुसार भूमंडल में आर्यसमाज शताब्दी समारोह मनाने की व्यापक तैयारियां आरम्भ हो चुकी हैं। कागजी योजनाओं और धन एकत्र करने मात्र की अपीलों से तंग जनता रचनात्मक कार्यक्रम का मार्ग दर्शन पाकर १२ अप्रैल १९७५ को शताव्दी समारोह मनाने का संकल्प लेकर काम में लग गई है। इस संबंध में शताव्दी समारोह परिषद ने काम बांट दिए हैं। देश-देशान्तरों की जो परिषद् गठित की गई है, वह इस प्रकार है—

१. अध्यक्ष	[भारत]	स्वामी ओमानन्द सरस्वती
२. उपाध्यक्ष	बर्मा	डा० ओम्प्रकाश (M.B. B. S.)
३. उपाध्यक्ष	इंग्लैंड	श्री रामलाल जी
४. उपाध्यक्ष	नैटाल	श्री वी० शिवानन्द
५. उपाध्यक्ष	भारत	श्री रघुवीर सिंह शास्त्री
६. मंत्री	भारत	पं० भारतेन्द्र नाथ
७. संयुक्त मंत्री	आयरलैंड	श्रीमती ऊषा देवी आर्या
८. संयुक्त मंत्री	उत्तर प्रदेश	उमेशचन्द्र स्नातक
९. संयुक्त मंत्री	मद्रास	के. वेलायुधनं

१०. निर्देशक—शास्त्रार्थ महारथी श्री अमर स्वामी जी
११. निर्देशक—स्वामी रामेश्वरानन्द जी सरस्वती
१२. निर्देशक—स्वामी विवेकानन्द जी, प्रभात आश्रम, मेरठ

कार्यकारिणी के सदस्य

१३. श्री ज्ञानी पिण्डीदास जी अमृतसर
१४. प्रो० रत्नसिंह एम० ए० उपाचार्य महानन्द मिशन कालिज अमृतसर
१५. प्रो० लक्ष्मीदत्त जी दीक्षित, होश्यारपुर
१६. श्री जगदेव सिंह सिद्धान्ती पूर्व संसद सदस्य
१७. श्री पं० प्रेमचन्द शर्मा मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश
१८. श्री बलदेव जी मुरादाबाद
१९. कार्यक्रम संयोजक—आचार्य श्री जगदीश विद्यार्थी
२०. श्री राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर
२१. डा० नारायणदास, गोहाटी
२२, पं० अभिविनय भारती, दिल्ली
२३.

पण्डिता राकेश रानी संपादक जन-ज्ञान

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह सभी कार्य कारिणी के सदस्य उत्साह पूर्वक अपने-अपने क्षेत्र में प्रचार कार्य में लग गए हैं। आर्यसमाज का सही मार्ग दर्शन ऋषि दयानन्द के दिखाए मार्ग पर करते हुए हम सभी क्रांति और सत्य की वह ज्योति प्रसारित करना चाहते हैं जो अज्ञान और अंधकार को मिटा सके!

जागरण का शंखनाद हो रहा है। सर्वत्र ऋषि दयानन्द की जय के स्वर गुंजाने के लिए सभी कृत संकल्प होकर लगें!

अपने धन और शक्ति का प्रयोग अपने-अपने क्षेत्र में ही करें। शताब्दी के नाम पर धन बटोरने की प्रवृत्ति किसी भी दृष्टि से उचित नहीं समझी जा रही।

अतः अपने-अपने क्षेत्र को आर्यसमाज मय बनाने का व्रत लो।

शताब्दी समारोह सर्वत्र मनाने के लिए हम आप को पूर्ण योग देंगे

—भारतेन्द्रनाथ

मन्त्री—

सार्वभौम आर्यसमाज शताब्दी परिषद्, नई दिल्ली-१६

शताब्दी समारोह के लिए : मंगाएं

१—सत्यार्थप्रकाश	प्रचार संस्करण	४००) सैकड़ा
२— „ „	राज संस्करण	५००) सैकड़ा
३— „ „	उपहार संस्करण	६००) सैकड़ा
४—ऋषि दयानन्दजीवन चरित्र		१२०) सैकड़ा
५—आर्यसमाज के १०० वर्ष		२५) सैकड़ा
६—आर्यसमाज के नियम		५०) सैकड़ा
७—स्वामी जी के चित्र का पोस्टर		५०) सैकड़ा
८—गायत्री मंत्र		५०) सैकड़ा
९—दसनेताओं का चित्र पत्ती लगा		१००) सैकड़ा

जन ज्ञान – प्रकाशन --- नई दिल्ली–५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठ, क्यों खो बैठा विश्वास ?

आशा के बलबूते चलता मानवता का श्वास।
पल पल, छिन छिन, दिन दिन बीते, बीते वर्ष और मास ।।
उठ ! क्यों खो बैठा विश्वास !

तुझे खबर क्या किसी नदी ने सीखा होना निराश।
निर्झर का मधु कल कल स्वर, अविरल यति का इतिहास ।।
उठ ! क्यों खो बैठा विश्वास !

रवि शशि का निर्बाध चलन, पृथ्वी, उडुगण, आकाश ।।
दें कर्मण्यता का सन्देश, जो पहुंचे इनके पास।
उठ ! क्यों खो बैठा विश्वास !

म्लान, क्लान्त, निस्तेज वदन का, क्यों देता आभास।
देख श्रमिक के श्रम कण को, सन्तोष से भरी मिठास ।।
उठ ! क्यों खो बैठा विश्वास !

हानि लाभ सम जान, कर्म कर, छोड़ के कल की आस।
जीवन लक्ष्य 'निरन्तर गति' को क्यों भूला 'प्रकाश' ।।
उठ ! क्यों खो बैठा विश्वास !

—रामप्रकाश

आचार्य श्री वैद्यनाथ शास्त्री का

अर्थशास्त्र परिचय पर अभिमत

"वैदिक अर्थशात्र परिचय पुस्तक को मैंने पढ़ा। पुस्तक वर्त्तमान समय में और सोशलिज्म के झंझावात को दृष्टिपथ में रख कर लिखा गया है। भारत में कुछ ऐसे भी तथाकथित आर्यसमाजी व्यक्ति हैं जो विदेशीय समाजवाद और साम्यवाद को वेद और महर्षि दयानन्द का सिद्धान्त बनाने लगे हैं। जो कोरी अनभिज्ञता और निजी लिप्सा और स्पर्धा के अतिरिक्त कुछ नहीं है। वर्त्तमान सोशलिज्म और कम्यूज्मि का वेद और ऋषि दयानन्द से नाम मात्र का भी सम्बन्ध नहीं है। वेद में तो इन के विपरीत सिद्धान्त दिखाये गये हैं। वैदिकी अर्थ व्यवस्था अथक परिश्रम से अर्जन, सभी स्रोतों से जो उचित हो धर्म पूर्वक उत्पादन, व्यवस्था की नीति से व्यवस्थापन, अध्यात्म प्रणीत-भौतिक दर्शन से परिमार्जित और लोकहित और कर्त्तव्य की भावना से अनुप्राणित व्यवस्था है। इस पुस्तक में इस व्यवस्था का एक अच्छा परिचय मिलेगा। पुस्तक उत्तम और पठनीय है।

बड़ौदा

—वैद्यनाथ शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आचार्य जगदीश विद्यार्थी द्वारा संन्यास ग्रहण की तैयारी

आर्य जगत् को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि सुप्रसिद्ध लेखक, विचारक और वक्ता आचार्य जगदीश विद्यार्थी १६ फरवरी बसन्त पंचमी रविवार १९७५ को संन्यास आश्रम में प्रविष्ट हो रहे हैं।

उनके संन्यास से आर्य जगत् को एक सुयोग्य संन्यासी प्राप्त होंगे।

संन्यास ग्रहण आयोजन के लिये एक समिति बना दी गई है।

—सम्पादक

स्व० श्रीमती मधु बाला

सुपुत्री श्री जुगलकिशोर आत्रेय गढ़ी हरसू (गुड़गांव) का २९-६-७४ को देहान्त हो गया। समाज की कुरीतियों के कारण आपका विवाहोपरान्त बलिदान आज भी इस बात का प्रतीक है कि सामाजिक कुरीतियां कितनी सर्वनाशिनी हैं ?

श्रीमती मधुवाला अत्यन्त मेधावी और परिश्रमी कार्यकर्त्री थीं। गुड़गांव जिले के जिलाधीश व अन्य उच्च अधिकारी इन्हें अपनी पुत्री के समान मानते थे।

श्री जुगलकिशोर जी ने इनकी स्मृति में १००१) वेदभाष्य के लिये दान दिये हैं। प्रभु दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे।

—सम्पादक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शेख अब्दुल्ला और काशमीर प्रश्न

कई मास से केन्द्रीय नेताओं एवं कशमीरियों के एकमात्र नेता होने के दावेदार शेख अब्दुल्ला से वार्ता का क्रम जारी है। विषय है कशमीर का भविष्य। ऐसी सम्भावनाएं भी अनेक क्षेत्रों में व्यक्त की जा रही हैं कि इस वार्ताक्रम का परिणाम अक्टूबर तक स्पष्ट होगा और उस समय कशमीर राज्य में नवीन उथल-पुथल होगी। इसका रूप क्या होगा, इस सम्बन्ध में अभी दावे से तो कुछ कह पाना संभव नहीं, हाँ अनेक अटकलें और शंका आशंकाएं विभिन्न क्षेत्रों में व्यक्त की जा रही हैं। प्रस्तुत लेख में शेख अब्दुल्ला के द्वारा अतीत में कशमीर में किए गए क्रियाकलापों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत है। इनका आधार है सुप्रसिद्ध अंग्रेजी साप्ताहिक "इलस्ट्रेटेड वीकली" में प्रकाशित श्री के० आर० सुन्दरराजन के कुछ रोचक रहस्योद्घाटन जो पत्रकार के रूप में कुछ ही मास पूर्व की उनकी कशमीर यात्रा तथा श्रीनगर में कई वर्ष तक आकाशवाणी के संवाददाता के तौर पर कार्य करते समय प्राप्त अनुभवों का परिणाम है। —सम्पादक

स्वातन्त्र्य सूर्य की स्वर्ण रश्मियों के भारत भूमि के भाग्याकाश पर प्रमुदित होने के साथ ही साथ भारत माता के भव्य भाल कशमीर की केसर क्यारियों में रक्त के फव्वारे भी फूट पड़े थे! क्योंकि दुर्दान्त दस्युओं (पाकिस्तानी कबाइलियों) के सघन घन इस स्वर्गोपम घाटी में विनाश की वर्षा करने के लिए चढ़ दौड़े थे। भारतीय सेना के जयिष्णु जवानों ने अपने रक्त का फाग खेलकर और अनेकों ने अपने प्राणों की वर्तिकाएं बलिकर इन आक्रान्ताओं के नापाक इरादों को खाक में मिला दिया। तदुपरान्त भारत के तत्कालीन प्रधान मंत्री ने स्वयं ही इस समस्या को राष्ट्रसंघ के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। तब से अनेक घटनाओं के तान वितान तने हैं, पुनः कई बार पाकिस्तान ने अपने नापाक इरादों को पूर्ण करने अर्थात् सम्पूर्ण कशमीर को हड़पने के मंसूबे बनाकर अपने सैनिकों को कशमीर की केसर क्यारियों को पदतल से रौंदने के लिए बढ़ाया है किन्तु भारत के सिंह सपूतों ने हर बार ही उन्हें जीभर कर छकाया किन्तु इन सब ऐतिहासिक तथ्यों के बावजूद भी कशमीर संबंधी विषय गत् २७ वर्षों से स्वराष्ट्र को प्लेग के तुल्य पीड़ित किए हुए हैं। अतः प्रधानमंत्री इन्दिरा गाँधी ने इस समस्या के निदान के प्रयास में ही उन्हीं शेख अब्दुल्ला से वार्तालाप किया है, जिन्हें उनके स्वनामधन्य पिता और तत्कालीन प्रधानमंत्री पं० जवाहर लाल नेहरू के समय में ही अपदस्थ होना पड़ा था। यह वार्ता इन दिनों प्रधानमंत्री के प्रतिनिधि श्री पार्थसारथी तथा शेख के प्रतिनिधि मिर्जा अफजल बेग के बीच हुई है, जो जनमत मोर्चे के अध्यक्ष हैं।

सम्भवतया कशमीर ही एक ऐसी राजनीतिक समस्या बना हुआ है कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसके संबंध में प्रतिवर्ष ही अनेक सत्य अर्धसत्य और कई बार असत्य और मनगढ़न्त कहानियां भी सुनने को मिलती है। सम्भवतः कोई दिन ही बीतता होगा कि जब समाचारपत्रों के किसी न किसी पृष्ठ पर कशमीर संबंधी कोई न कोई समाचार प्रसारित न होता हो। पिछले कुछ मास में प्रायः यही सुनने को न मिला कि शेख अब्दुल्ला ने भारतीय संघ में कशमीर के विलय को अन्तिम बताते हुए उसे भारत का अटूट अंग स्वीकार कर लिया है। और अब तो केवल इस संबंध में निर्णय होना शेष है कि कशमीर को किस सीमा तक स्वतन्त्रता प्रदान की जानी है। परन्तु शेख अब्दुल्ला का इस संबंध में संशय अभी भी विद्यमान है और उनके द्वारा रह-रह कर यही कहा जा रहा है कि १९५३ की स्थिति बहाल होनी चाहिए।

शेख के इरादे—श्री के० आर० सुन्दरराजन के अनुसार वे जब कुछ सप्ताह पूर्व श्रीनगर में गोल्फ क्लब के पीछे बनी नवीन शानदार कोठी में शेख अब्दुल्ला से मिले तो शेख ने उनसे यही कहा "क्या यह प्रश्न (विलय) इतना महत्वपूर्ण है? आन्तरिक समस्या तो भारत और कशमीर के हृदयों के मिलन की है। जब तक मेरे साथ १९५३ से किया गया अन्याय दूर नहीं कर दिया जाता तब तक मैं कशमीरियों से यह किस भांति कह सकता हूँ कि वे भारत के अभिन्न और अटूट अंग हैं?"

शेख अब्दुल्ला के प्रमुख सहयोगी और जम्मू कशमीर जनमत मोर्चे के अध्यक्ष मिर्जा अफजल बेग का भी श्री सुन्दरराजन के अनुसार लगभग यही मत है। श्री बेग का कथन है कि "कशमीर की जनता को अपने भविष्य का निर्णयअभी ही करना है। यह इन्दिरा जी का काम है कि वे साहस के साथ निर्णय लें और समझौते की स्थिति के लिए वायुमंडल उत्पन्न करें।"

विलय अस्थायी

इतना ही नहीं शेख अब्दुल्ला ने अपने इरादों की अभिव्यक्ति १६ जुलाई को "स्टेट्समैन" के श्री कुलदीप नैयर से हुई भेंट के दौरान भी की। इस भेंट में भी आपने यही कहा कि "महाराज हरिसिंह के साथ जिस विलय संधि पर हस्ताक्षर संपन्न हुए हैं, उसके अनुसार भी कश्मीर का भारत के साथ विलय अस्थायी ही था।

ऐसा लगता है कि शेख अब्दुल्ला विभिन्न पैंतरेबाजियों के द्वारा भारत सरकार से अधिकाधिक सुविधायें प्राप्त कर कश्मीर घाटी की जनता में अपना मूल्य बढ़ाना चाहते हैं। इसीलिए वे कभी लोगों को धैर्य रखने की सलाह देते हैं, तो कभी भारत के निवासियों से अपना अभेद्य सम्बन्ध जताते हैं और फिर साथ ही "कश्मीर के भाग्य का निर्णय स्वयं कश्मीरी ही करेंगे" का उद्घोष भी गुंजा जाते हैं।

शेख की कल्पना का कश्मीरी प्रशासन

इसमें सन्देह नहीं कि शेख अब्दुल्ला बार-बार धर्म निरपेक्षता की दुहाई देते हैं और अनेक बार अपनी धर्म निरपेक्षता का दावा भी कर चुके हैं। किन्तु उनकी धर्म निरपेक्षता गांधी जी की धर्म निरपेक्षता नहीं है। यह पृथक बात है कि शेख के श्रीमुख से अनेक बार गान्धी जी का नाम भी गूंजता है। श्री सुन्दर राजन द्वारा प्रस्तुत विचारों के अनुसार जहाँ गांधी जी की धर्म निरपेक्षता के सम्बन्ध में यह कल्पना थी कि भारत के सभी प्रदेशों में हिन्दुओं, मुसलमानों, सिखों और ईसाईयों तथा अन्य धर्मावलम्बियों को नागरिकता के समान अधिकार प्राप्त हों, वहाँ शेख सम्भवतः यह चाहते हैं कि कश्मीर को अधिकाधिक स्वतन्त्र कश्मीरी राज्य बनाया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाये, और नई दिल्ली से उन्हें अधिकाधिक आर्थिक सहायता प्राप्त हो पर नई-दिल्ली (केन्द्र) का कश्मीर के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप न्यूनतम हो। उनकी कल्पना के प्रशासनिक ढांचे में बौद्धों, सिखों एवं अन्य अल्पसंख्यकों को हर संभव संरक्षण तो प्रदान किया जायेगा परन्तु राजनीतिक, प्रशासनिक तथा आर्थिक शक्तियां कश्मीरी मुस्लिमों के हाथ में ही केन्द्रित रहेंगी।

अफजलबेग का दृष्टिकोण

मिर्जा अफजल बेग का यह कथन बताया जाता है कि " हम कश्मीरी लोग हिन्दुओं के प्रभुत्व वाले भारत से अपने वजूद को जोड़ नहीं सकते। इस तथ्य को भी नहीं भूल सकते कि यदि १९४७ में हुए विभाजन के सिद्धान्तों को पूर्णतः लागू कर दिया जाये तो कश्मीर पाकिस्तान को चला गया होता। यह तो शेख के हाथ ही थे जिनके कारण यह दुखद घटना न हो सकी।

शेख अब्दुल्ला की भूमिका

इतिहास इस तथ्य का भी साक्षी है कि १९४७ में शेख अब्दुल्ला ने कश्मीर को भारत से मिलाने का प्रस्ताव किया तो उन्होंने इस देश पर कोई उपकार नहीं किया था। वे अपनी नेतागिरी सुरक्षित रखना चाहते थे और साथ ही यह भी नहीं चाहते थे कि कश्मीर एक ऐसा प्रदेश बन जाए कि जिसका पाकिस्तान शोषण करता रहे और वह उपनिवेश बन जाए। पूर्वी पाकिस्तान (जो अब बंगला देश) में बंगाली मुसलमानों को पाकिस्तानी शासन के हाथों जो नारकीय और अमानवीयता झेलनी पड़ी हैं, सम्भवतः उन्होंने भी शेख को कुछ शिक्षा प्रदान की है। इसके साथ ही शेख साहब को यह भी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि १९४७ में जब कश्मीर पर पाकिस्तानी आक्रान्ता चढ़ दौड़े थे तो उस समय उनके द्वारा कोई पूर्व शर्त प्रस्तुत नहीं की गई थी। वस्तुतः कश्मीर के नए संवैधानिक ढाँचे का बखेड़ा तो उस समय खड़ा किया जिस समय कि कश्मीर पाकिस्तानी आक्रमण से सुरक्षित हो गया तथा उसके उपरान्त देश के संविधान में कश्मीर के दर्जे के सम्बन्ध में भी विचार विमर्श हुआ।

काश सरदार होते

यह असन्दिग्ध है कि पं० जवाहरलाल जी शेख अब्दुल्ला से प्रभावित थे। एक प्रकार से उन्होंने ही कश्मीर को भारतीय संघ में 'विशेष दर्जा दिए जाने सम्बन्धी धारा ३६० को संविधान में जुड़वा दिया था। पटेल जीवित होते तो संविधान में धारा ३६० को कोई स्थान हीं प्राप्त न हो पाता।

कश्मीरी नेताओं (शेख अब्दुल्ला से अब तक के) की दृष्टि में सरदार पहले हिन्दु देश प्रेमी थे। सरदार अपनी दूरदर्शिता के कारण यह समझते थे कि नई दिल्ली तथा श्रीनगर के सम्बन्धों में तनिक सी भी ढिलाई हुई तो विवादों का अन्त न हो पाएगा।

अविस्मरणीय !!!

श्री सुन्दर राजन का कथन है कि "मैं न तो हृदय को आघात लगाने वाली इस बदमिजाजी की बात को भूल सकता हूँ और न क्षमा ही कर सकता हूँ कि जब सरदार पटेल का निधन हुआ तब नेशनल कान्फ्रेंस के नेताओं ने (जिनमें शेख अब्दुल्ला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिर्जा अफजल बेग भी हैं) खुशियां मनायीं। बख्शी गुलाम मुहम्मद ने तो यहाँ तक कहा कि "खुदा का शुक्रिया, हमारी सब से जबर्दस्त अड़चन दूर हो गयी। अब शेख साहब के लिए पंडित जी को पूर्ण स्वायत्तता हेतु राजी करना आसान होगा।

एक और रहस्योद्घाटन

श्री सुन्दरराजन ने यह रहस्योद्घाटन भी किया है कि अगस्त १९५३ में शेख अब्दुल्ला की अपदस्थता और नजरबंदी श्री नेहरू की जानकारी के बिना नहीं की गई। उन्होंने कहा है कि घटनाओं के निकट साक्षी के रूप में मैं यह कह सकता हूँ कि अब्दुल्ला को अपदस्थ करने की योजना नेहरू जी की पूरी निगरानी में बख्शी गुलाम मुहम्मद, डी. पी धर, रफी अहमद किदवई और कश्मीर संबधी मामलों के सचिव श्री विष्णु सहाय द्वारा तैयार की गयी थो। श्री सहाय तो कई दिन तक श्रीनगर में रहे और उन्होंने श्री बख्शी और श्री धर से एक-एक दिन में दो-दो, तीन-तीन बार मन्त्रणा की। तत्कालीन युवराज श्री कर्ण सिंह भी इस तस्वीर में थे।

मौ० आजाद की भूमिका

श्री सुन्दर राजन का यह भी कथन है कि स्वर्गीय मौलाना आजाद भी तस्वीर में थे। जहाँ तक मौलाना आजाद का संबन्ध है वे अब्दुल्ला प्रशासन को नैतिक भ्रष्टाचार के कारण कभी क्षमादान नहीं कर सकते थे जो उन्होंने स्वयं अपनी आंखों से देखा था। एक रात जब मौलाना आजाद चश्माशाही मुगल उद्यान के समीप अतिथि गृह में ठहरे हुए थे तो अपने शयन कक्ष के नीचे हुए शोर-गुल से उनकी नींद खुल गई। जाँच के बाद उन्हें पता चला कि कुछ मंत्री और वरिष्ठ अधिकारी अपनी मित्र लड़कियों से छेड़छाड़ कर रहे हैं। जब मौलाना आजाद ने शेख से इस बारे में शिकायत की तो उन्हें करारा उत्तर मिला।

उस समय नेहरू जी के एक निकटस्थ और विश्वासपात्र व्यक्ति के हवाले से श्री सुन्दरराजन ने कहा है कि मौलाना आजाद ने इस मामले की शिकायत श्री नेहरू से भी की। मौलाना आजाद ने कहा कि "पंडित जी पीर पंचाल पर्वतीय शिखरों में किस प्रकार का नया कश्मीर बन रहा है। श्रीनगर का आम व्यक्ति भी यह कह रहा है कि महाराज हरिसिंह भी इतना नैतिक अधःपतन सहन न कर सकते थे।

शेख की गिरफ्तारी क्यों हुई थी ?

यह प्रश्न उपस्थित होता है कि क्या राजनैतिक आधार पर शेख की गिरफ्तारी उचित थी ? निसन्देह स्वतन्त्रता के बाद वे इतिहास की यह एक अप्रिय घटना थी किन्तु शेख स्पष्टतः विवादों को निमन्त्रण देते थे। वे भारतीय सेना से "कश्मीर छोड़ो" की माँगे गुंजा रहे थे तो साथ ही साथ कश्मीर में राष्ट्रसंघीय हस्तक्षेप की माँग भी। शेख की गिरफ्तारी किसी षडयन्त्र का परिणाम थी या नहीं किन्तु विशेष जेल में शेख अब्दुल्ला को नजरबंद किये जाने के उपरान्त बख्शी ने श्री सुन्दर राजन को बताया कि "यदि मैंने शेख साहब को बन्दी न बनाया होता तो ऐसी ही कार-वाई वे मेरे भी साथ कर सकते थे।"

सतर्कता आवश्यक

श्री सुन्दर राजन का मत है कि शेख अब्दुल्ला और उनके अनुयायियों का मन जीतने का तो प्रबन्ध करना ही चाहिए किन्तु उनकी शक्ति को भी अधिक नहीं सम-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कागज की महंगाई ; वेदभाष्य और
हमारा संकल्प

कागज की भारी महंगाई ने वेद भाष्य प्रकाशन की समस्या विकट कर दी है। हम किसी भी स्थिति में अपना संकल्प अधूरा देखना पसन्द नहीं करेंगे।

हम ने २ मई १९७३ को वेदभाष्य पूर्ति के लिए अन्न का त्याग किया था। इस बात को आज १६ मास हो रहे हैं और समस्या और भी कठिन हो गई है।

अब हम और भी अधिक तपस्या की आवश्यकता अनुभव कर रहे हैं। अतः हम ने निर्णय कर लिया है कि दीपावली १९७४ तक यदि अथर्ववेद का प्रकाशन पूर्ण न हुआ तो हम फल और सब्जी लेना भी बन्द कर देंगे। और ३१ दिसंबर तक भी अथर्ववेद पूर्ण न हुआ तो पानी व नींबू के अतिरिक्त और कुछ भी ग्रहण न करेंगे।

जीवन में यदि प्रण पूर्ण न हो तो जीवन का क्या लाभ......हम कार्य पूर्ण न होने पर मरना अधिक पसन्द करेंगे।

—भारतेन्द्रनाथ

झना चाहिए। उनका यह भी कथन है कि जम्मू और लद्दाख के लोग अब शेख अब्दुल्ला को अपनी पुरानी स्थिति पर जाने देना निश्चित रूप से पसन्द नहीं करेंगे क्योंकि १९४७ से १९५३ तक इन क्षेत्रों की घोर उपेक्षा की गयी थी।

विस्मरणीय सुझाव

श्री सुन्दर राजन का यह सुझाव भी स्मरणीय है कि वर्तमान परिस्थितियों में कश्मीर की समस्या का सर्वोत्तम समाधान यही है कि कश्मीर घाटी को उपयुक्त स्वतन्त्रता दी जाए, लद्दाख को केन्द्रीय क्षेत्र बना दिया जाए और जम्मू को हिमाचल प्रदेश के साथ मिलाकर एक तीसरा प्रदेश बना दिया जाए। यदि जम्मू-कश्मीर भारत के भाग हैं तो कोई कारण नहीं कि अन्य राज्यों की भांति इनकी सीमाओं का पुनः निर्धारण न किया जा सके।

अब तक शेख और देवी इन्दिरा के प्रतिनिधियों में हुई वार्ता के संदर्भ में १९५३ की स्थिति की बहाली की चर्चा बहुत अधिक सुनाई पड़ी है। किन्तु विश्वास किया जाना चाहिए कि प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ऐसा कोई पग नहीं उठायेंगी कि जिससे इतिहास की सुई को पीछे मोड़कर २१ वर्ष पूर्व कि स्थिति में लाकर खड़ा किया जाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह मेरे कितने पास है ?

—सत्यपाल शास्त्री वेद शिरोमणि

(यजुर्वेद ४०/५ Yaju 40 5)

ऋषि—दीर्घतमा
देवता—आत्मा

ओ३म्, तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके। तदन्तरस्य सर्वस्य तदु सर्वस्यास्य बाह्यतः।

OM, Tadejati Tannaijati Taddoore Tadvantike. Tadantarasya Sarvasya Tadu Sarvasyaasya Baahyatah.

पदपाठः

तत्। एजति। तत्। न। एजति। तत्। दूरे। तत्। उ। अन्तिके। तत्। अन्तः। अस्य। सर्वस्य। तत्। उ। सर्वस्य। अस्य। बाह्यतः।

Tat. Ejati. Tat. Na. Ejati. Tat. Doore. Tat. U. Antike. Tat. Antah. Asya. Sarvasya. Tat. U. Sarvasya. Asya. Baahyatah.

महर्षिः

(तत्) (एजति) कम्पते चलति मूढ दृष्ट्या (तत्) (न) (एजति) कम्पते कम्प्यते वा (तत्) (दूरे) अधर्मात्मिभ्योऽविद्वद्भ्योऽयोगिभ्यः (तत्) (उ) (अन्तिके) धर्मात्मनां विदुषां योगिनां समीपे (तत्) (अन्तः) आभ्यन्तरे (अस्य) (सर्वस्त्य) अखिलस्य जगतो जीवसमूहस्य वा (तत्) (उ) (सर्वस्य) समग्रस्य (अस्य) प्रत्यक्षाऽप्रत्यक्षात्मकस्य (बाह्यतः) बहिरपि वर्तमानः।

सान्वयः पदार्थः

तत्—वह, He

एजति—काँपता है, विक्षुब्ध होता है, चलता है, हिलता है, stirs, is agitated, moves, shakes

तत्—वह, He

न—नहीं, not

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एजति—काँपता है, विक्षुब्ध होता है, चलता है, हिलता है, stirs, is agitated moves, shakes

तत्—वह, He

दूरे—दूर है, is far off

तत्—वह, He

उ—निश्चय ही, certainly

अन्तिके—पास है, is nearby

तत्—वह, He

अस्य—इसके, of this

सर्वस्य—सब संसार और जीवसमूह के, of universe and of all living beings.

अन्तः—अन्दर, inside

तत्—वह, He

उ—निश्चय ही, certainly

अस्य—इसके, of this

सर्वस्य—प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्षात्मक जगत् के, of the universe (perceptible and inperceptible both)

बाह्यतः—बाहर वर्तमान है, is covering outside.

भावार्थः

मूर्ख अज्ञानियों की दृष्टि में वह सर्वव्यापक परमात्मा चलता है, ज्ञानियों की दृष्टि से नहीं चलता। वह अधर्मात्मा, अविद्वान् और अयोगी व्यक्तियों के लिये दूर है और धर्मात्मा, विद्वान् और योगियों के लिए पास है। वह इस प्रत्यक्षात्मक और अप्रत्यक्षात्मक दोनों ही संसार के तथा जीवसमूह के अन्दर भी है और उसने इनको बाहर से भी आच्छादित किया है।

The ignorant people think that the Lord, who is omnipresent, moves from place to place but for the wise He never moves. He is far off for the people who are unrighteous, impious, ingnorant and devoid of 'yoga' but is always near to them who are righteous, pious, wise and endowed with 'yoga'. He is existing inside the whole universe, perceptible and imperceptible both, and all biving beings as well as He is enveloping them all from outside.

पिछले मन्त्र में परमात्मा को 'अनेजत्' कहा गया है। 'अनेजत्' का अर्थ जैसे पहले कहा गया है न काँपने वाला, न चलने वाला, मार्ग से विचलित न होने वाला होता है। इस मन्त्र में 'अनेजत्' शब्द की ही व्याख्या करते हुए विस्तार से वर्णन किया गया है। मन्त्र कहता है कि परमात्मा काँपता नहीं है चलता नहीं है और यह भी साथ में कहा है कि वह चलता है और काँपता है। दूसरे अंश में यह कहा गया है कि परमात्मा दूर है। लेकिन साथ में फिर कहा गया है कि वह पास है। ये दोनों बातें साथ-साथ कैसे सम्भव हो सकती हैं? इसकी व्याख्या महर्षि दयानन्द सरस्वती ने बहुत सुन्दर ढंग से तर्कसम्मत रूप में की है।

(१) परमात्मा काँपता है, चलता है। यह हमें पता है कि परमात्मा सर्व-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

व्यापक है अर्थात् संसार के एक-एक स्थान पर परमात्मा पहले से ही व्याप्त है। जो अज्ञानी हैं, जिनको सर्व व्यापकता का अर्थ या परमात्मा की सर्व व्यापकता का ज्ञान नहीं है उनकी दृष्टि में परमात्मा काँपता है या चलता है। अर्थात् जब ऐसे अज्ञानी यह देखते हैं कि जो परमात्मा दिल्ली में था, आज वह परमात्मा मद्रास में है तो वे यह तो नहीं जानते कि जो परमात्मा दिल्ली में था और जिस समय दिल्ली में था वह उसी समय मद्रास में भी था। उनको तो ऐसा प्रतीत होता है कि जिस समय दिल्ली में था उस समय मद्रास में नहीं था और जिस समय मद्रास में है उसी समय वह दिल्ली में नहीं है। यह एक वात का और बहुत सुन्दर संकेत करता है। मैं जब यह कहता हूँ कि परमात्मा की छाया मेरे साथ है तो क्या मैं जहाँ-जहाँ घूमता हूँ मेरे सिर पर मेरे साथ परमात्मा भी घूमता चला जाता है ? अज्ञानी ऐसा ही समझते हैं कि मैं जहाँ-जहाँ घूमता हूँ या चलता हूँ परमात्मा भी मेरे साथ मेरी छाया बनकर घूमता चला जाता है। लेकिन जो ज्ञानी हैं वे ऐसा नहीं समझते। अवतार-वाद इसी अज्ञानपूर्ण भावना का परिणाम है। उन व्यक्तियों का कहना है कि भगवान राम और कृष्ण के रूप में अवतार लेते हैं और उन्होंने पहले भी अवतार लिए हैं। प्रश्न पूछा गया है कि परमात्मा को अवतार लेने की आवश्यकता क्या है ? इसका उत्तर यह दिया गया कि रावण को मारने के लिए कोई भी लौकिक व्यक्ति समर्थ नहीं हो सकता था या कंस को मारने के लिए कोई भी लौकिक व्यक्ति शक्ति-शाली या सामर्थ्यवान् नहीं हो सकता था। उसको मारने के लिए भगवान ही शक्ति-शाली थे और उन्हीं को मनुष्य के रूप में आना पड़ा। इन सारे तर्कों के मूल में एक बहुत बड़ा अज्ञान दिखाई पड़ता है। प्रश्न यह उठता है कि क्या परमात्मा लंका में नहीं था ? क्या परमात्मा रावण के अन्दर व्याप्त नहीं था कि उस रावण को मारने के लिए विष्णु को या भगवान् को राम का अवतार धारण करके आना पड़ा ? जब यह प्रश्न पूछा जाता है तो वे इसका उत्तर देते हैं कि रावण से लड़ने के लिए परमात्मा का शरीरधारी होना आवश्यक है तो फिर प्रश्न पूछा गया कि क्या भगवान् किसी से बिना लड़े उसको मार नहीं सकता ? अब इस प्रश्न का उत्तर कुछ नहीं बन सकता। अवतारवाद के इस सिद्धान्त के मूल में भी यही अज्ञानपूर्ण भावना है कि परमात्मा चलता है, परमात्मा को एक जगह से दूसरी जगह आना पड़ता है। लेकिन इस बात को कहते हुए, इस वात को सोचते हुए ऐसे व्यक्ति एक वात भूल जाते हैं कि माना जैसे एक आदमी दिल्ली में है, वह दिल्ली छोड़कर मद्रास चला गया तो वह आदमी अब दिल्ली में नहीं है, मद्रास में है। यदि परमात्मा अपने स्वरूप को छोड़-कर, अपने स्थान को छोड़कर, दूसरे स्थान पर, दूसरे स्वरूप में आ जाता है तो उस स्थान पर जहाँ पहले परमात्मा था अब कौन है ? यदि यह कहा जाय कि वहाँ पर दूसरा परमात्मा आ जाता है तो इसका मतलब यह हुआ कि परमात्मा एक नहीं है, कई हैं जो न केवल सिद्धान्तों के विरुद्ध है बल्कि तर्कसम्मत भी नहीं है। वेद ने तो स्पष्ट रूप में कहा है 'अनेजत् एकम्' परमात्मा कई नहीं हैं वह एक है। जब एक है तो उसका एक जगह को छोड़कर दूसरी जगह आना या एक जगह से दूसरी जगह जाना कैसे सम्भव हो सकता है ? लेकिन अज्ञानी इन तर्कों को न लेते हुए इन सब चीजों पर विचार न करते हुए, उसकी व्यापक शक्ति को तथा उसकी व्यापक शक्ति के प्रभाव एवं परिणाम को अनेक स्थानों पर देखकर यह समझते हैं कि परमात्मा चलता है। तो वेद ने कहा है तत् एजति 'अर्थात् परमात्मा चलता है', यह उस दृष्टि से कहा कि जैसे अज्ञानी समझते हैं। लेकिन इसके साथ ही यह कह दिया कि

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अज्ञानी की दृष्टि गलत है। 'तत् न एजति' वह चलता नहीं है, वह काँपता नहीं है। और वह चलता नहीं है या कांपता नहीं है इसके मूल में जो सिद्धान्त है वह यह है कि एक तो वह सर्वव्यापक है, शुरू से ही सब स्थानों में बसा हुआ है। चलने की आवश्यकता उसको पड़ती है जो एकदेशी हो, एक स्थान पर रहने वाला हो। मैं दिल्ली में हूँ, मद्रास में नहीं हूँ तो मुझे दिल्ली से मद्रास जाने के लिये चलना पड़ेगा। मद्रास में अपना अस्तित्व बनाने के लिए मुझे दिल्ली को छोड़ना पड़ेगा।

दूसरी बात इसके अन्दर यह है कि चलना उसके लिए जरूरी है जो बिना चले अपनी शक्ति का, अपनी सत्ता का प्रयोग नहीं कर सकता हो। उदाहरण के लिए भारत का प्रधान मंत्री है। प्रधान मंत्री अगर दूसरे किसी राज्य में, उस राज्य के किसी गाँव में या शहर में कोई भी काम कराना चाहे तो वह दिल्ली में बैठकर भी करा सकता है। प्रधान मंत्री को उस राज्य के उस गाँव या शहर में जाकर उस खास आदमी से लड़ने या झगड़ने की या उसको पकड़ने की जरूरत नहीं है। क्योंकि प्रधान मंत्री की शक्ति की व्यापकता सारे देश में है। इसी प्रकार परमात्मा को रावण को मारने के लिए राम के रूप में अवतार लेने की तभी जरूरत मानी जा सकती है जब उस परमात्मा की शक्ति की व्यापकता इतनी न हो कि वह बिना राम के रूप में आये रावण को मार नहीं सकता। परन्तु यह बात गलत है। परमात्मा की शक्ति, परमात्मा की सत्ता सर्वव्यापक है और उसको किसी भी व्यक्ति को मारने के लिये देहधारी बनकर उस विशेष स्थान में आने की आवश्यकता नहीं है। इसलिये वेद ने स्पष्ट रूप में कहा कि वह कभी भी चलता नहीं है, वह एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाता नहीं है। यदि परमात्मा के अन्दर यह बात मान ली जाये कि वह चलता है तो पीछे कहे गये प्रश्न फिर उठ खड़े होंगे और परमात्मा की शक्ति में एक बहुत बड़ी न्यूनता आ जायेगी।

तीसरी बात वेद ने कही 'तत् दूरे' परमात्मा दूर है। लेकिन साथ में कहा कि वह पास है। इसमें भी वही विरोधाभास है। विरोध तो यह है कि जो दूर है वह पास कैसे हो सकता है या जो पास है वह दूर कैसे हो सकता है? लेकिन यह विरोध केवल आभास मात्र है। वास्तव में इन दोनों बातों में विरोध नहीं है। वह दूर है। किसके लिए? उसके लिए जो परमात्मा को भूल चुका है, उसके लिए जो परमात्मा की आज्ञा का पालन नहीं करता, उसके लिए जिसको परमात्मा की दी हुई आज्ञा में विश्वास नहीं है, उसके लिए जिसको परमात्मा के अस्तित्व पर विश्वास नहीं है, उसके लिए जिसने परमात्मा को मंदिरों या मस्जिदों में कैद कर दिया है। ऐसे व्यक्ति जब मंदिर या मस्जिद से निकलते हैं तो उनको यह महसूस होता है कि परमात्मा तो मंदिर में है और मैं मंदिर से काफी दूर हूँ। मुझे परमात्मा नहीं देख रहा। इसी प्रकार गिरजाघर में जाने वाले भी यही समझते हैं कि परमात्मा तो वहीं है और काफी दूर है। वे समझते हैं कि वह हमें नहीं देख रहा। परन्तु यदि हम यह समझें कि परमात्मा वास्तव में हमसे दूर हो जाता है या पास आ जाता है तो परमात्मा के न्याय में बहुत बड़ी गड़बड़ी होगी। जब मैं कुछ देख नहीं सकता तो किसी दोष का परिहार मैं नहीं कर सकता, किसी को सज्जनता पुरस्कार मैं नहीं दे सकता। इसी प्रकार परमात्मा भी हो जायेगा। परमात्मा के न्याय में गड़बड़ी हो जायेगी, परमात्मा का न्याय ऐसा न्याय है जिसमें कभी कोई कमी नहीं आती। कभी वह पक्षपात नहीं करता। उसके न्याय में कभी कोई गलती नहीं होती। एक बार दुनिया की दृष्टि में परमात्मा का न्याय कुछ दिनों के लिए गलत मालूम दे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकता है। उदाहरण के लिए दुनिया में यदि कोई आदमी रिश्वत लेकर अधर्म के मार्ग पर चलता हुआ बढ़ता चला जाता है तो दुनिया यह समझती है कि परमात्मा ने आँखें बन्द कर ली हैं और वह दुनिया को नहीं देख रहा। इसलिए उसकी आज्ञा के विरुद्ध चलने वाला व्यक्ति भी आनन्द कर रहा है। परन्तु ऐसी बात नहीं है। परमात्मा सब कुछ देख रहा है और ऐसे अधर्म के मार्ग पर चलने वाले व्यक्ति को दण्ड अवश्य मिलेगा, कभी भी वह उसका पक्षपात नहीं कर सकता। साथ ही जैसे पहले सिद्ध किया जा चुका है, परमात्मा सर्वव्यापक है तो यह कैसे सम्भव है कि परमात्मा दूर हो जाये ?

इन दोनों अंशों को उपस्थित करने के बाद वेद में संक्षेप में यह सिद्धान्त रूप दे दिया गया कि वह इस प्रत्यक्ष दीखने वाले या परोक्ष में वर्तमान सभी संसार के और जीवमात्र के अन्दर व्याप्त है। वह अन्तर्यामी है और अन्तर्यामी होने की वजह से वह सबके कर्मों को, सबके व्यवहारों को निकट से देख रहा है और वही परमात्मा सारे संसार की वस्तुओं को बाहर से भी आच्छादित किये हुए है और इस प्रकार संसार की कोई भी वस्तु ऐसी नहीं है जिसके बाहर या भीतर परमात्मा व्याप्त न हो।

इस सब कुछ कहने का अर्थ यह हुआ कि मनुष्य संसार में जब भी व्यवहार करे, यह सोच कर करे कि परमात्मा उसके अत्यन्त निकट है, उसके बाहर और भीतर व्याप्त है और उसके हर एक कर्म को देख रहा है। यह ज्ञान मनुष्य को बुरे मार्ग से बचाता रहेगा और जब इसके विपरीत वह यह सोच लेगा कि परमात्मा एकदेशी है, या दूर है तो वह अज्ञानी होकर बुरे मार्ग पर चलने लगेगा और वास्तविकता से दूर होने के कारण उसको परमात्मा के न्याय का भोग करना पड़ेगा।

□

श्री मोरारजी देसाई की आत्मकथा

—दयानन्दसिंह

□

यह विचार भ्रमपूर्ण है कि अपनी इस कल्पना के बावजूद कि जवाहरलाल नेहरू के बाद मैं ही प्रधानमंत्री बनूँगा, जब मोरारजी देसाई षडयंत्रकारी राजनैतिक नेताओं द्वारा मंत्रिमण्डल छोड़ने पर विवश कर दिये गये थे, तब से वह अत्यंत निराशा और चिन्तापूर्ण जीवन बिता रहे हैं। यह ठीक है कि मोरारजी की कल्पना साकार न हो सकी, लेकिन इसके साथ ही यह भी ठीक है कि वह न

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तो किसी प्रकार की कटुता अनुभव कर रहे हैं और न चिन्ता। उनके अपने शब्दों में वह चिन्तन तो खूब करते हैं, लेकिन चिन्ता बिलकुल नहीं। हाल ही में उनकी जो आत्मकथा दो खण्डों में प्रकाशित हुई है, वह इस बात का प्रमाण है कि उनका कर्म करने की हिन्दू थ्योरी पर दृढ़ विश्वास है और आप सब पाठक जानते ही हैं कि इस थ्योरी में निराशा और कटुता की कोई गुन्जाइश नहीं।

अपनी आत्मकथा के प्रथम खण्ड की भूमिका में वह लिखते हैं कि "हमारे पिछले कर्मों का फल हमारे सामने आता है। जो लोग इस स्थिति का दृढ़ता से मुकाबला करते हैं, उन्हें कठिनाइयों का सामना करने से नहीं कतराना चाहिये। यदि किसी व्यक्ति का भगवान् पर विश्वास है, तो वह कठिनतम परिस्थितियों में भी प्रसन्न और शांत रह सकता है। इसके फलस्वरूप उसे और अधिक शक्ति प्राप्त होती है और उसका जीवन समृद्धतर होता है। उसे दूसरों के लिए उपयोगी बनने की प्रेरणा भी मिलती है।"

हिन्दू-नैतिकता मोरारजी के सारे जीवन पर छाई हुई है। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, उनका पक्का विश्वास है कि हमारे कर्म ही फलरूप में हमारे सामने आते हैं। ऐसा व्यक्ति कभी यह शिकायत नहीं करता कि उसे अमुक प्राप्तव्य से वंचित क्यों रखा गया। जो लोग उसे उसके अधिकार से वंचित रखते हैं, वह उन्हें भी दोषी नहीं ठहराता। वह सोचता है कि सब लोग अपना-अपना पार्ट अदा कर रहे हैं, फिर किसी पर क्रोध करने का क्या मतलब? कुछ लोग रस्मी तौर पर गीता पढ़ते हैं कुछ लोग इसे दर्शन की पुस्तक समझकर पढ़ते हैं। लेकिन मोरारजी के लिए गीता जीवन-दर्शन है। गीता के निम्नलिखित श्लोकों को अपने जीवन में ढालकर मोरारजी ने क्रोध पर विजय पाई—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते,
संगात्संजायते काम. कामात्क्रोधोऽभिजायते।
क्रोधाद्भवतिसम्मोहःसम्मोहात्स्मृतिविभ्रम ॥
स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति

मोरारजी का कहना है कि सन् १९२०-२१ में उन्होंने यह महसूस कर लिया था कि क्रोध के वशीभूत होना अच्छा नहीं, लेकिन १९५२ तक उन्होंने यह महसूस नहीं किया था कि "क्रोध अपने आप में एक अनुचित बात है और इसे किसी भी स्थिति में तर्कसंगत नहीं ठहराया जा सकता।" क्रोध के प्रति उनकी नई दृष्टि का जन्म ऊपरिलिखित श्लोकों का परिणाम था।

मोरारजी का यह पवित्रतापूर्ण रुख प्रशंसनीय है, लेकिन आत्मकथा-लेखन की दृष्टि से भी यह गुण ही हो, यह आवश्यक नहीं। सम्भवतः यही कारण है कि प्राचीन काल के सन्त-महात्मा आत्मकथायें नहीं लिखा करते थे। मोरारजी ने सन्त होने का दावा तो नहीं किया, लेकिन वह लगातार सचाई का जीवन जीने के लिये प्रयत्नशील रहे हैं। लगता है कि उन्हें अधिक संघर्ष नहीं करना पड़ा। अन्यथा क्या कारण है कि उनकी आत्मकथा महात्मा गांधी की आत्मकथा 'सत्य के साथ मेरे प्रयोग' के मुकाबले में इतनी हलकी पड़ती है। प्रतीत होता है कि मोरारजी को इस बात की अनुभूति थी कि आत्मकथा लिखते समय उन्हें कुछ सीमाओं में रहना होगा। यही कारण है कि जब अनेक मित्रों ने उनपर जोर डाला कि "वह सार्वजनिक जीवन बिताने वालों को लाभ पहुँचाने की खातिर आत्मकथा अवश्य लिखें, तभी वह उसके लिये राजी हुए। एक अन्य उद्देश्य यह भी था कि अनेक लोगों को इससे अनेक प्रकार की जानकारी मिलेगी, जिससे वे लाभान्वित होंगे। अपने इन उद्देश्यों की प्राप्ति में मोरारजी सफल रहे हैं। इन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दोनों खण्डों से मूल्यवान् जानकारी मिलती है और सार्वजनिक जीवन बिताने वालों को इससे लाभ ही होगा।

लेकिन इस आत्मकथा में मोरारजी के वास्तविक रूप में दर्शन नहीं होते। मोरारजी गुजरात के एक गाँव में पैदा हुए। बारह वर्ष तक डिप्टी कलेक्टर के रूप में सरकारी नौकरी करते रहे। उसके बाद उन्होंने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने का फैसला किया। अनेक बार जेल गये। कांग्रेस के नेतृवर्ग में ऊँचे उठते गये। १९३७ में कांग्रेस ने बम्बई में जो मंत्रिमण्डल बनाया, उसमें वह राजस्व मंत्री थे। सन् १९४२ में कांग्रेस ने 'भारत छोड़ो' आन्दोलन चलाया तो वह फिर जेल में डाल दिये गए। १९४६ से १९५२ तक बम्बई के खेर मंत्रिमण्डल में अत्यंत सफल गृहमंत्री रहे। १९५६ तक बम्बई के मुख्यमंत्री रहे। इसके बाद केन्द्र में पहले वाणिज्य और उद्योगमंत्री और बाद में वित्तमंत्री रहे। कामराज योजना के अधीन पदत्याग किया। प्रधानमंत्री के पद के लिए लालबहादुर शास्त्री के मुकाबले में आये, प्रशासनिक सुधार आयोग के अध्यक्ष बने, श्रीमती इंदिरा गांधी के विरुद्ध प्रधानमंत्री पद के लिए चुनाव लड़ा। फिर उन्हीं के अधीन उपप्रधान मंत्री और वित्त मंत्री रहे। १९६९ में काँग्रेस के दो टुकड़े हो जाने के बाद से लोकसभा में प्रतिपक्षी सदस्य बने। इन सब बातों का वर्णन इस पुस्तक में है। लेकिन इन सबके बावजूद यह नहीं लगता कि यह आत्मकथा उस व्यक्ति के पूरे जीवन की कहानी है, जो प्रधानमंत्री बनते-बनते रह गया। आत्मकथा में केवल पार्श्व दृश्य हैं, पूरा जीवन-चरित्र नहीं। क्या ही अच्छा होता, यदि कोई सुलेखक मोरारजी का जीवन-चरित्र लिख देता और मोरारजी स्वयं अपनी आत्मकथा लिखने का "कष्ट" न उठाते। मोरारजी फोटो की तरह सत्य को उसके पूर्णरूप में चित्रित करते हैं; इससे वह अपने आपको समग्ररूप में उद्घाटित नहीं कर पाते। उनके बारे में पूर्ण सत्य वही लेखक लिख सकता है, जिसमें प्रतिभा के साथ अन्तर्दृष्टि भी हो।

आप कह सकते हैं कि मोरारजी ने अपनी आत्मकथा में अपने आपको पूर्ण रूप में उद्घाटित किया है और इससे अधिक उनमें कुछ है ही नहीं। आप यह भी कह सकते हैं कि उनका व्यक्तित्व कर्त्तव्यनिष्ठा और प्रशासनिक कुशलता समन्वित सच्चाई का तानाबाना है। वह महापुरुषों के संग रहे हैं, लेकिन स्वयं महापुरुष नहीं। उस स्थिति में आप कह सकते हैं कि आत्मकथा की दुर्बलताएँ वस्तुतः मोरार जी की अपनी दुर्बलताएं हैं।

यह ठीक है कि मोरारजी में प्रशासनिक योग्यता प्रचुर मात्रा में है, किन्तु वह लोकप्रिय नेता नहीं बन पाये। वह जनता को अपनी ओर आकृष्ट करने में सफल नहीं हो सके। लेकिन तसवीर का एक दूसरा पहलू भी है। यह असम्भव है कि इन्सान की सही परख करने में समर्थ गांधी जी और सरदार पटेल जैसे महापुरुषों ने अकारण ही मोरारजी को राजनैतिक उन्नति की सीढ़ियाँ चढ़ने दीं और कम से कम एक प्रान्तीय नेता के रूप में उभरने दिया। मोरारजी के निन्दकों को इस प्रश्न का उत्तर देना होगा, अन्यथा कोई उनके कथन से सहमत न होगा। मोरारजी ने अपनी आत्मा को कभी भी गांधी जी अथवा सरदार पटेल के पास गिरवी न रखा। जब कभी मतभेद हुआ, उन्होंने न केवल उसे प्रकट किया, अपितु अपनी बात मनवाई, उस पर डटे रहे। जब वह गांधी जी और सरदार पटेल से बात करते थे, तब भी उनकी बातचीत गुरु-शिष्य संवाद का रूप धारण नहीं करती थी, अपितु वह समान स्तर पर बात करते थे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आत्मकथा में ऐतिहासिक दृष्टि से भी अनेक महत्त्वपूर्ण बातें हैं। मोरारजी ने लिखा है कि एक बार वह सैद्धान्तिक स्पष्टीकरण के लिए गांधी जी से मिलने सेवाग्राम गये। कहना चाहिए कि वह गांधी जी के दरबार में उपस्थित होने गये। महादेव भाई और एक दो अन्य आश्रमवासी सदा उनके साथ रहते थे, इसलिये मोरारजी को एकान्त में गांधी जी का सामीप्य प्राप्त न हो सका। मोरारजी ने आग्रह किया कि बातचीत एकान्त में ही होनी चाहिये। इस पर गांधी जी ने उन्हें रात के २॥। बजे का समय दिया। इसके बावजूद चन्दूभाई नामक एक व्यक्ति को न टाला जा सका। वह भी बातचीत के समय उपस्थित थे। चन्दूभाई ने सरदार पटेल की शिकायत की कि "कई बार उनका आचरण सचाई के अनुकूल नहीं होता।" यह बात सरदार पटेल तक पहुँच गई। प्रश्न उठा कि किसने यह गोपनीय बात उनतक पहुँचाई? मोरारजी का संक्षिप्त उत्तर है कि "महादेव भाई बाहर सो रहे थे, सम्भवतः उन्होंने हमारी बात सुन ली होगी।"

सन् १९३१ की गांधी-अरविन वार्ता के समय मोरारजी दिल्ली में ही थे। उन्होंने उस समय की एक रोचक घटना पर प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं कि "सरदार पटेल और जवाहरलाल जी डा० अन्सारी के मकान में ठहरे हुए थे। सरदार पटेल गांधी जी के पास आये और उनसे कहने लगे कि जवाहरलालजी इस समझौते से बहुत अप्रसन्न हैं—यहाँ तक कि उनकी आँखों से आँसू झर रहे हैं। गांधी जी तुरन्त जवाहरलाल जी के पास गये और उनसे इन सबका कारण पूछा। जवाहरलाल जी का उत्तर था कि यह समझौता हमारे लिए अच्छा नहीं और इससे हमारी साख कमजोर होगी। गांधी जी ने कहा कि यदि आप इस समझौते से इतने दुःखित हैं और समझते हैं कि यह नहीं होना चाहिये तो अभी यह सब वाइसराय को कह डालने का समय है और यदि जवाहरलाल जी का आग्रह हो तो मैं तुरन्त इस आशय का पत्र डाल दूं। जवाहरलाल जी ने तुरन्त कहा कि "मैं नहीं चाहता कि गांधी जी ऐसा करें और भविष्य में इस बारे में कोई शिकायत भी नहीं करूँगा।"

इस पर मोरार जी की टिप्पणी यह है कि "इस घटना का मुझ पर यह प्रभाव पड़ा कि जवाहरलाल जी एक ओर तो समझौते के लाभ से वंचित न होना चाहते थे और दूसरी ओर इसकी कमियों के लिए अपने पर कोई दोष भी न लेना चाहते थे।"

आत्मकथा में वर्णित एक घटना से पता चलता है कि स्वाधीनता-प्राप्ति के चार महीने के अन्दर ही गांधी जी का अपने अनुयायी सत्तारूढ़ नेताओं के बारे में मोहभंग हो चुका था। घटना नवम्बर १९४७ के एक प्रातःकाल की है, जब मोरारजी गांधी जी से मिले। गांधीजी ने मर्मस्पर्शी शब्दों में मोरारजी से कहा कि अब मुझे सेवानिवृत्त हो जाना चाहिये, क्योंकि कोई मेरी बात ही नहीं सुनता। मोरारजी को पता लगा कि गांधी जी देवप्रयाग अथवा हिमालय के किसी अन्य अज्ञात स्थान पर एकान्त-वास करना चाहते हैं। मोरारजी ने गांधी जी से कहा कि अभी भी जनता सत्तारूढ़ नेताओं की अपेक्षा आपकी बात को अधिक ध्यान से सुनती है।

मोरार जी को इस बारे में कोई सन्देह नहीं कि जवाहरलाल नेहरू सुविचारित किन्तु शिष्ट ढंग से श्रीमती इन्दिरा गांधी को अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए प्रशिक्षित कर रहे थे। इसी सिलसिले में उन्होंने कांग्रेस दल में मोरारजी को गिराने का प्रयत्न किया। इसी कारण श्रीमती इन्दिरा गांधी को कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर बिठाया गया। नागपुर में जब कांग्रेस कार्यसमिति की

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बैठक में गोविन्दवल्लभ पन्त ने यह आशंका प्रकट की कि क्या इन्दिरा जी अपने दुर्बल स्वास्थ्य के कारण इस पद का भारी बोझ उठाने में असमर्थ तो न रहेंगी, तब नेहरू जी उनसे सख्त नाराज हुए। इसी श्रृंखला की एक अन्य कड़ी यह है कि पण्डित पन्त के देहान्त पर मोरारजी को कांग्रेस संसदीय दल का उपनेता न बनने दिया गया। कामराज-योजना में इन प्रयत्नों की चरम परिणति सामने आई। लेकिन नेहरू जी ने यह सारा काम इतनी आसानी और स्वाभाविकता से किया कि मोरारजी को अपनी आत्मकथा में मानना पड़ा है कि "उन्होंने कभी भी मेरे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया और न ही कभी मेरे काम में हस्तक्षेप किया।"

श्री लालबहादुर शास्त्री के बारे में मोरारजी की राय विवादास्पद है। उनके विचार में "विशाल हृदय किन्तु छोटे कद वाला वह व्यक्ति मंजा हुआ राजनैतिक पैंतरेबाज था। मोरारजी के विचार में रेल-दुर्घटनाओं पर शास्त्री जी का पदत्याग भी इसी प्रकार की पैंतरेबाजी थी। मोरारजी ने अनेक स्थानों पर इस बात की चर्चा की है कि नेहरू-शासन के अन्तिम दिनों में कांग्रेस हाईकमान के लोगों में एक-दूसरे के विरुद्ध खूब षड्यंत्र होते थे और ऐसी बात नहीं कि शास्त्री जी इन षड्यंत्रों में भाग न लेते हों! मोरारजी ने रहस्योद्घाटन किया है कि तिरुपति में कांग्रेस के बड़े नेताओं की जो गुप्त बैठक हुई थी—उन नेताओं की जो बाद में सिण्डाकेट के नाम से प्रसिद्ध हुए—उस बैठक में शास्त्रीजी भी सम्मिलित थे। मोरारजी ने यह सन्देह प्रकट किया है कि उक्त बैठक में इस विषय पर विचार किया गया कि नेहरूजी का देहान्त हो जाने पर शासन चलाने के लिए क्या व्यवस्था की जाये। मोरारजी लिखते हैं कि लालबहादुरजी इस योजना की धुरी में थे, क्योंकि उनमें इस प्रकार का तालमेल बिठाने की बहुत योग्यता थी।

मोरारजी दो बार प्रधान मंत्री के पद के चुनाव में पराजित हुए। दोनों अवसरों पर परदे के पीछे जो कुछ होता रहा, मोरारजी ने उस पर विस्तार से प्रकाश डाला है। ऐसा प्रतीत होता है कि जब कांग्रेस के नेता सत्ता के लिए छीना-झपटी करते हैं, तब उन्हें इस बात का ध्यान नहीं रहता कि कांग्रेस एक गांधीवादी संगठन है। इस प्रसंग में मोरारजी ने विशेष रूप से इन्दिराजी की पैंतरेबाजियों की चर्चा की है। मोरारजी का कहना है कि इंदिराजी बार-बार वचन देकर मुकर जाती हैं। मोरारजी लिखते हैं कि "मेरा अनुभव यह है कि वह आमतौर पर इस तरह मुकरकर कठिन परिस्थिति में से बच निकलती हैं।"

जैसा स्वाभाविक है, मोरारजी ने १९६९ के कांग्रेस विभाजन के बारे में ऐसी कोई बात नहीं लिखी, जो पहले से ही सुविदित न हो। इसी प्रकार, क्योंकि आत्मकथा १९७१ तक की है, इसलिए आज के ज्वलन्त प्रश्नों की उसमें चर्चा नहीं। ऐसा ही होना भी चाहिये था। मोरारजी अपने जीवन के ७९वें वर्ष में चल रहे हैं। अब उनके लिए कोई राजनैतिक सफलता प्राप्त करने को नहीं बची। लेकिन कोई भी व्यक्ति इस बात से इन्कार न कर सकेगा कि उन्होंने राजनैतिक क्षेत्र में पर्याप्त सफलता पाई। मोरारजी के सदृश विचारों वाले व्यक्तियों के लिए उच्चतम पद प्राप्त करने का अधिक महत्त्व नहीं। दूसरे लोग कह सकते है कि नैतिकता अथवा नैतिकता के उपदेश पुराने वक्तों की बातें हैं, लेकिन मोरारजी की शक्ति का यही रहस्य है। यदि वह जय-पराजय दोनों में सन्तुलित रहे हैं तो अपने विश्वास और जीवनदर्शन के कारण। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कांच की चूड़ियाँ

—प्रकाशवती शास्त्री, एम० ए०

एक दिन मैं अपनी कक्षा में पढ़ा रही थी, अकस्मात् चपरासी ने आकर कहा—बहिन जी आपको कोई बुला रही हैं, शीघ्र बुला रही हैं। मैं तुरन्त बाहर आई, तो आकर देखा तो सन्न रह गई। वह तो मेरी एक प्रिय सखी लक्ष्मी थी जो लगातार रो रही थी, आहें भर रही थी। मैंने करुणा से भरकर उससे पूछा—बहिन! क्या बात है? वह बोली—बहिन क्या बताऊँ? तुम्हारी बिटिया के विवाह का निमंत्रण-पत्र पाकर यहाँ आने के लिए बस स्टाप पर क्यू में खड़ी थी। अचानक मेरे हाथ पर किसी का स्पर्श हुआ। देखूँ तो मेरे हाथ का ३½ तोले का कंगन गायब है। मुड़कर पिछले आदमी का हाथ पकड़ा, क्योंकि मुझे उसी पर संदेह था। मैं बोली—तुम्हीं ने मेरा कंगन उतारा है। वह लड़ने लगा—शोर मचाया, पुलिस को बुलाया, पर कुछ परिणाम न निकला। इस प्रकार क्षण भर में इतनी बड़ी हानि हो गई, मन बड़ा दुखी हुआ, घर लौट गई, आज तनिक मन स्थिर हुआ तो तुम्हें बधाई देने आ गई। यहाँ तुम्हें देखकर पुनः मन भर आया।

अपनी प्रिय सखी की दुःखगाथा सुनकर मुझे तत्सम्बन्धी कई अन्य घटनाओं का तुरन्त स्मरण हो आया।

मन में विचार आया कि इन स्वर्णाभूषणों ने न केवल नारी जाति के ही वरन् उनके साथ चलने वाले पुरुषों के प्राणों को भी संशय में डाला है, इसका एक उदाहरण मैंने बचपन में भी पढ़ा था—

एक नवयुवक जब अपनी विविधाभूषणों से अलंकृत नववधू को लेकर ससुराल से अपने घर जा रहा था तो मार्ग में उसे डाकुओं ने घेर लिया। अचानक कुछ सज्जनों के आ जाने से उनके प्राण और सम्मान की रक्षा हुई। आधुनिक युग की बात सुनो, एक दिन एक बहिन का सारा हाथ ही काट दिया गया क्योंकि वह सोने की चूड़ियों से भरा था। एक छोटी सी लड़की गली में खेल रही थी तो एक दुष्ट उसे उठाकर ले गया। उसके कानों से सोने की बालियाँ उतार लीं और उसे मारकर कुएँ में फेंक दिया ताकि उसकी चोरी छिपी रहे।

स्त्रियों और बच्चों की बात तो एक ओर रही, इस संकट से वृद्ध भी न बचे। एक दिन एक बहिन मेरे घर बहुत दिनों पश्चात् आई, वह बहुत उदास थी। मैंने कारण पूछा तो बोली—उसके पिताजी एक दिन बससे उतर रहे थे तो कुछ दुष्टों ने उनकी उँगली काट ली क्योंकि उसमें हीरे की अँगूठी पहिन रक्खी थी। वे तुरन्त बेहोश होकर सड़क पर गिर पड़े। कुछ परिचितों ने उन्हें अस्पताल पहुँचाया तथा उनके घर में सूचना दी। लीजिए, छोटी सी अँगूठी पहिनना भी संकटप्रद सिद्ध हो गया।

आपको पता है पाकिस्तान क्यों बना? राजनैतिक कारण तो साधन बन गए,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहाना बन गए, एक सामाजिक कारण यह था कि पंजाब की महिलाएं सोने की चूड़ियों से हाथ भरे रखती थीं। लोभी मुसलमानों का मन उन्हें देख देखकर ललचाता रहता था, उनको लूटने का अवसर मिला। वही सोने की चूड़ियाँ जिन्हें पहिनकर प्रसन्न होती थीं उनके मान सन्मान के साथ उनके ही नहीं उनके सम्बन्धियों के प्राण भी ले गयीं और देश को पाकिस्तान दे गयीं। काश! उन्हें काँच की चूड़ियों से प्रेम होता तो देश की यह दुर्दशा न होती।

मैथिलीशरण जी ने लिखा था—

कुल नारियाँ जिनको हमारी हैं करों में धारतीं।
सौभाग्य का शुभ चिह्न जिनको वे सदैव विचारतीं॥
वे चूड़ियाँ तक हैं विदेशी और आगे क्या कहें?

खैर विदेशी की शिकायत तो दूर हो चुकी, हमारे देशमें ही रंगबिरंगी कांच की चूड़ियाँ बनने लगी हैं।

मेरे विचार में जिस भी मस्तिष्क में काँच की चूड़ियों का विचार आया था वह साधारण नहीं था। कांच की चूड़ियाँ पहिनकर जाती हुई नारी सचमुच सौभाग्यवती प्रतीत होती है। साथ ही अपनी शोभा और गरिमा से स्वर्ण-धारण करने वाली बहिनसे किसी भी अंशमें घटिया नहीं प्रतीत होती। किसी लोभी का मन उसकी ओर आकर्षित नहीं होता।

महान् खेद का विषय है कि इतना सब होने पर भी हमारे मन से सोने का मोह नहीं जाता। हमारे यहाँ एक कहावत भी है "वा सोने को जारिए, जाते फाटें कान" ऐसा सोना आग लगाने योग्य है जो नारी के प्राण और सन्मान दोनों ही संकट में डाल दे। राह चलती नारी के गले से जब कोई चेन छीनकर ले जाता है या कान से बालियाँ काट लेता है तो उसे आभूषण पहनने का क्या सुख मिलता है? आप कहेंगे इससे नारी का सौन्दर्य बढ़ता है तो सुनिए श्रृंगाररस के प्रसिद्ध कवि बिहारी लाल जी क्या कहते हैं—

पहिर न भूषण कनक के, कहि आवत इहि हेत।
दरपन के ये मोरचे, लगे दिखाई देत॥

लीजिए सौन्दर्य भी कम होता है।

सौंदर्य तो स्वच्छता और कलात्मकता में है। साधारण वेषभूषा में कई बहिनें इतनी सुन्दर और भव्य प्रतीत होती हैं कि देखते ही रह जाओ। इसके विपरीत बहु-मूल्य आभूषणों से लदी नारी भी भद्दी या फूहड़ प्रतीत होती है। हमारे संस्कृत के कवियों ने तो गुणों को ही मनुष्य के सच्चे आभूषण माना है—

लिखा है—

श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिनं च कंकणेन।
विभाति काया करुणापराणां परोपकारेण न तु चंदनेन॥

कान—श्रुति श्रवण से, न कि कुण्डलों से
हाथ—दान देने से, न कि कंगन से
शरीर—परोपकार से, न कि चन्दन पाउडर से
शोभा पाता है।

महाभारत में तो सोने के अन्दर कलियुग का वास बताया है। राजा परीक्षित

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

...न का मुकुट सिर पर धारण किए हुए वन में चल गए, मन में अभिमान जागृत हुआ और उसने एक समाधिस्थ ऋषि के गले में मरा साँप डालकर उसका उपहास किया और फलस्वरूप उसे शाप मिला और उसकी मृत्यु सर्प दंश से हुई।

बिहारी ने लिखा है—

कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय,
यह खाये बौरात हैं, वह पाये बौराय।

लीजिए सोना धतूरे से भी अधिक मादक है क्योंकि यह बिना खाए ही मद उपजाता है।

काँच की चूड़ियाँ सचमुच सौभाग्य का चिह्न होने के साथ-साथ समानता का प्रतीक भी हैं।

आप कहेंगी वह कैसे? देखिए जहाँ एक सौभाग्यवती दरिद्र महिला काँच की चूड़ियाँ धारण करती है, एक महारानी भी इसे शुभ समझकर अपने हाथों से पृथक् नहीं करती। कोई है इससे बड़ा समानता का उदाहरण?

मैंने यह भी देखा है कि सोने की चूड़ियाँ पहिनने वाली बहिनों के हाथ कभी तो चूड़ियों से भरे होते हैं कभी सर्वथा शून्य, जो सर्वथा अमंगल सूचक लगते हैं। सोना तो सामर्थ्य के अनुसार कोई कम कोई अधिक पहिनता है। भला एक अकिंचन नारी जिसके पास खाने को अन्न नहीं, पहिनने को पूरा वस्त्र नहीं, सोने की चूड़ी कैसे पहिने? काँच की चूड़ियाँ उसके सौभाग्य की भी रक्षा कर सकती हैं, क्योंकि वे सस्ते से सस्ते दामों पर मिलती हैं। काँच की चूड़ियाँ पहिनने वाली बहिनों के हाथ सदा नई-नई चूड़ियों से जगमगाते रहते हैं। सोने की चूड़ियाँ चाहे कितनी सुन्दर बनवाई जाएँ वे मन भर देती हैं क्योंकि वे रोज रोज बदली नहीं जा सकतीं, जबकि काँच की चूड़ियाँ आप प्रत्येक रंग की पहिन सकती हैं। त्यौहार इत्यादि पर सजने के लिए और उपहार देने के लिए काँच की चूड़ियाँ ही उपयोगी और सुलभ प्रतीत होती हैं।

केवल चूड़ियाँ ही नहीं, मेरे विचार में तो हम सुशिक्षित बहिनों को इस युग में अपनी सुरक्षा और सन्मान का विचार करते हुए सभी प्रकार के स्वर्णाभूषणों का परित्याग कर देना चाहिए।

सबको प्यार करो!

त्याग, दया, ममता से पावन
यह संसार करो!
सबको प्यार करो!!
बन्धन में उलझे अलियों से,
शूलोंपर हँसती कलियों से,
गन्धभरी स्वप्निल गलियों से,
प्रकृति-नटी के प्रति निज
मन में मंजुल भाव भरो!
सबको प्यार करो!!
मानवके चिर पीड़ित मन को,
तन को, यौवन को, जीवन को,
जग की व्यापकता, जन-जनको,
अपने विविध स्वरूप समझ
कर अंगीकार करो!
सबको प्यार करो!!
उसको जो पग में गति देता,
वर देता शापों को लेता,
मूक भाग्य की नौका खेता,
उसके चरणों पर श्रद्धा के
मनहर सुमन धरो!
सबको प्यार करो!!

—विद्यावती मिश्र—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छत्रपति शिवाजी महाराज, वेद एवं महर्षि दयानन्द

—प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु

६ जून १९७४ को छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की त्रिशती सारे देश में मनाई गई। महाराष्ट्र प्रदेश में तो राजकीय स्तर पर मनाई गई। आर्यसमाज इस विषय में कोई रुचि नहीं दिखा रहा। यह खेद की बात है। महर्षि दयानन्द जी को महाराणा प्रताप एवं शिवा जी की शूरता, देश सेवा, तप, त्याग पर बड़ा गर्व था। 'सत्यार्थ-प्रकाश' की भूमिका में ग्रन्थ-लेखन का स्थान महर्षि ने उदयपुर नहीं लिखा 'महाराणा जी का उदयपुर' लिखा है। इससे स्पष्ट है कि ऋषिवर को अपने देश के वीर सपूत पर कितना गर्व था।

महर्षि ने 'सत्यार्थ प्रकाश' के एकादश समुल्लास के आरम्भ में ही गुरु गोविन्द सिंह तथा छत्रपति शिवाजी की वीरता और पराक्रम की चर्चा की है कि किस प्रकार इन्होंने साधनों के अभाव में भी साधन सम्पन्न विशाल परन्तु क्रूर अन्यायी इस्लामी राज्य की शक्ति को छिन्न-भिन्न कर दिया।

शिवाजी के राज्यारोहण की त्रिशती के ऐतिहासिक वर्ष पर हम 'जनज्ञान' के पाठकों की सेवा में छत्रपति के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंग रखते हैं :—

अपने पराक्रम व पौरुष से जब शिवाजी अपने सार्वजनिक जीवन के शैशवकाल में दृढ़ता से पग आगे बढ़ा रहे थे तो बीजापुरियों की निद्रा भंग हुई। अफ़ज़ल खाँ के रूप में एक डींगमारखाँ एक विशाल सेना, तोपखाना आदि लेकर शिवाजी को पकड़ने निकला। राज माता ने आशीर्वाद दिया। डींग तो बड़ी हाँक कर निकला, अपने हृदय के कम्पन की घर से निकलते समय स्वयं ही पोल खोल गया। वैसे तो डींग मार कर गया कि घोड़े की पीठ से एक बार भी उतरे बिना शिवा को बाँधकर वन्दी के रूप में बीजापुर लाऊँगा परन्तु जब घर से पग बाहर धरना पड़ा तो अपनी ६३ बेगमों का वध करके निकला। वह नहीं चाहता था कि शिवाजी के हाथों मरने के बाद उसकी बेगमें किसी अन्य नवाब के भोग विलास का साधन बनें। फ्राँसीसी यात्री ABBE CARRE जो १६७३ ई० में (अफजल वध के केवल १४ वर्ष पश्चात्) बीजापुर आया, लिखता है कि वह अपनी २०० बेगमों का वध करके अफजलपुर से प्रस्थान करता है।* आज भी उन कब्रों के खण्डहर वहाँ देखे जा सकते हैं।

पन्हाला के दुर्ग में बीजापुरियों ने शिवाजी का घेरा डाला। सिद्दी जौहर

* द्रष्टव्य Shivaji And His Times By J. N. Sarkar Page 70.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हब्शी अपनी आकृति व नीति दोनों दृष्टियों से क्रूर था। वही सेना का संचालन कर रहा था। अफजल खाँ का पुत्र फजल खाँ भी अपने बाप के वध का बदला लेने के लिए घर से निकला था। चप्पे-चप्पे पर बीजापुरी सैनिक थे। पूरी नाकाबन्दी, फिर भी शिवाजी अपने अमर बलिदानी सेनानी बाजी प्रभु जी व कुछ सैनिकों सहित एक रात्रि को पन्हाला से विशालगढ़ को निकल गये। बीजापुरी हाथ मलते रह गये। पता लगने पर शिवाजी का पीछा किया। बीजापुरी घुड़सवारों ने मराठा वीरों को एक तंग पर्वतीय घाटी पार करते देख लिया। दोनों ओर से घमासान युद्ध के लिए तलवार चली। बाजी प्रभु का शरीर घावों से छलनी हो गया। परन्तु वह शत्रु का संहार करने में तब तक संलग्न रहे जब तक उनके कानों में विशालगढ़ से महाराज शिवाजी की पहुँच की सूचना पाँच तोपों की गर्जना से न पहुँची। आवाज सुनकर उसकी आत्मा को शान्ति हुई कि उसने अपना कर्त्तव्य पूरा कर दिया। उसके शेष बचे साथी उसके शव को भी उठाकर विशालगढ़ ले गये।* श्री यदुनाथ सरकार आदि सब प्रतिष्ठित इतिहासकारों ने बाजी प्रभु की शूरता का गौरवगान किया है। विश्व-इतिहास में देश भक्तों, बलिदानियों, सेनानियों की अग्रिम पंक्ति में बाजी प्रभु का नाम सदा सम्मान से लिया जाएगा। पन्हाला से शिवाजी का विशालगढ़ सुरक्षित पहुँचना एक चमत्कारी घटना है। शूरों के इन चमत्कारों के सन्मुख पाखण्डी साधुओं के चमत्कार क्या हैं? तुच्छ क्या, कुछ भी नहीं।

शाइस्ता खाँ एक लाख मुगल सेना लेकर शिवाजी को पकड़ने निकला। फारसी पदों में शिवाजी को एक पत्र में उसने लिखा 'तुम बन्दर की भाँति पर्वतों में जान छिपाते फिरते हो तनिक सामने आओ।' शिवाजी ने संस्कृत में उत्तर भेजा कि मैं बन्दर नहीं पर्वतीय वानर हनुमान जी सरीखा हूँ। माता जीजा बाई की सुनाई रामायण का पाठ कैसे समय स्मरण हो आया। जब शाइस्ता खाँ पर धावा बोला तो बेगमों और बीबियों के साथ पूना के दुर्ग में शाइस्ता खाँ की जो दुर्गति हुई वह किसे पता नहीं। तब किसी बीबी, बेगम ने जल रही बत्ती बुझाकर कुछ लाज रख ली। छः बेगमें अँधेरे में कट गईं, एक पुत्र मरवा डाला, अपना अँगूठा दे बैठा और दो पुत्र घायल करवा लिए। अन्य जो मरे उनका लेखा जोखा अलग है। औरङ्गजेब भी मामा साहिब की दुर्गति सुनकर थर्रा गया। जब वहुत वड़ी शक्ति लगाकर शिवाजी को आगरा लाने में सफल हुआ तो फिर वह मौत की कोख से भाग गया। इतिहास में यह घटना कभी भी भुलाई नहीं जा सकती। शिवाजी का चातुर्य तो इसमें है ही उस महावीर हीरा जी को राष्ट्र क्या भूल सकेगा जो शिवाजी की अँगूठी पहने चादर से बाहर हाथ निकालकर शिवाजी के स्थान पर सोया रहा और फिर १२–१४ घण्टे बाद स्वयं भी पहरेदारों के सामने से सुरक्षित निकल गया।

अब शिवाजी ने राजतिलक की सोची। राज्य करने का अधिकार वेदोक्त रीति से क्षत्रिय को ही है। वह प्रमाणित कर चुके थे कि वह असाधारण क्षत्रिय हैं। पौराणिक ब्राह्मणों ने जन्म जाति का झगड़ा खड़ा कर दिया तो शिवाजी की वंशावली दिखाई गई कि वह उदयपुर के महाराणा के कुल के सूर्यवंशी क्षत्रिय हैं। क्षत्रिय के लिए यज्ञोपवीत चाहिए। महाराष्ट्र में कोई भी यज्ञोपवीत देने को उद्यत न हुआ। हा! तब कोई देव दयानन्द न था! काशी के गागा भट्ट को पुष्कल राशि दी गई, तब यज्ञोपवीत संस्कार हुआ।

*द्रष्टव्य तारीख महाराष्ट्र लेखक श्रीभाई परमानन्दजी पृ० १८८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षत्रिय बनकर शिवाजी ने पुनः अपनी जीवित दो रानियों से वेदोक्त रीति से विवाह करवाया। कारण एक यह भी तो था कि वैदिक राज्य व्यवस्था में गृहस्थी के लिए राज व्यवहार है। संन्यासी के लिए Political Activities निषिद्ध हैं। देश का, जनता का, राजनीतिज्ञों का उपदेश द्वारा मार्गदर्शन करना तो संन्यासी का कर्त्तव्य है। Politics (राजकाज) में कूदना वर्जित है। महर्षि दयानन्द जी ने भी लिखा है कि **"इस राज्य व्यवहार में गृहस्थ को छोड़ किसी ब्रह्मचारी, वनस्थ वा यति की प्रवृत्ति होनी योग्य नहीं।"***

फिर राज्याभिषेक की बारी आई। शिवाजी से युद्धों में प्राणियों के मारे जाने के पाप का भी प्रायश्चित्त करवाया गया। मूर्खता की कोई सीमा न थी। ५०,००० ब्राह्मण रायगढ़ में डेरा डाले भोजन करते रहे। शिवाजी ने वेद मन्त्र सुनाने का आग्रह किया। ब्राह्मणों ने विद्रोह कर दिया कि इस युग में केवल ब्राह्मण ही शुद्ध हैं शेष सब अपवित्र; अतः वेद मन्त्र क्यों सुनाएँ। शिवाजी को तब रोष भी आया और ब्राह्मणों को पवित्र होने के नाते केवल वेद आदि शास्त्रों का पाठ करने की आज्ञा दी। सब राजकीय पदों से उनको एक बार हटा दिया गया। राजकाज तो अपवित्र ठहरा।

श्री भाई परमानन्दजी ने तो लिखा है कि गागा ने शिवाजी के कान में गायत्री मन्त्र पढ़ा। प्रतीत होता है कि ब्राह्मणों को एक और भी भय खाए जा रहा था। छत्रपति की रानियाँ, माता जीजा बाई व स्वयं ब्राह्मण देवियां भी तो वहाँ उपस्थित थीं। औरों से तो छुट्टी पा भी लें, शिवाजी की रानियों से कैसे छुट्टी पाएँ। गृहस्थी ही राज्य व्यवहार का अधिकारी है इस सनातन आर्य नीति का पालन भी आवश्यक समझा गया। स्त्रियों के होते ब्राह्मण वेद का मन्त्र कैसे सुनाएं? गौ ब्राह्मण वेद के रक्षक शिवाजी की कामना तड़पती तरसती रही कि श्रुति का श्रवण कर सकें। एक नहीं, दो बार राज्याभिषेपक करवाया। यज्ञोपवीत भी लिया। एक करोड़ से ऊपर दान दक्षिणा में व ब्राह्मणों को खिलाने में व्यय किया परन्तु वेद मन्त्र फिर भी न सुन पाये। काश! तब महर्षि दयानन्द होते। शिवाजी के प्यारो! वेद प्रचार करो।

वेद के भक्तों!

ॐ प्रत्येक हिन्दू (आर्य) परिवार में 'वेद' पहुँचाने
ॐ के लिए सभी पूर्ण प्रयत्न करें। 'वेद' ही हमारा
ॐ कल्याण कर सकता है। 'वेद' परिवार में लाने
ॐ से सभी को नयी शक्ति प्रेरणा मिलेगी—

संपादक—

---

* द्रष्टव्य ऋग्वेद भाष्य १. १००. ११.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुछ जलते प्रश्न

श्रद्धेय बहिन,

नमस्ते !

—एक लम्बे समय से मैं आपको पत्र लिखने का विचार कर रहा था। परन्तु आज मेरा सौभाग्य है कि मैं अपने अन्तःकरण की अपरिमित श्रद्धा, अटल विश्वास और अपना अथाह स्नेह आप तक अभिव्यक्त कर रहा हूँ।

वैसे मैं ऊपरी दिखावे, महज शिष्टाचार, झूठी या सच्ची प्रशंसा, मीठी आकर्षक, लच्छेदार भाषा अथवा कोरी भावुकता में लेशमात्र भी विश्वास नहीं करता, पर फिर भी मेरी लेखनी का हर शब्द न चाहते हुए भी—आप जैसी 'तपस्विनी देवी, 'संघर्षों के बीच अविचलित बुलन्द व्यक्तित्व—पूज्य भारतेन्द्रनाथ जी, ज्योत्स्ना जी, कुल मिलाकर पूरे परिवार की महानता व्यक्त करता है।

मैं एक विद्यार्थी हूँ—इन्जीनियरिंग अंतिम वर्ष का और २ वर्ष पूर्व ही युग-द्रष्टा देव दयानन्द के महान् संदेश की प्रेरणा, आपके या, वास्तव में मेरे ही पत्र 'जनज्ञान' के माध्यम से मुझे मिली। मैं जनज्ञान से, निरन्तर जो भी ले सक ने में समर्थ हूँ, ले रहा हूँ। मैं स्वयं तो 'जनज्ञान' मँगाता हूँ, परन्तु मैंने चाहा—अनुभव किया—आपके हृदय की पुकार शायद, पुराने 'दिग्गज' मठाधीश, आर्य समाजी नेता कभी न सुन सकेंगे। तो निरन्तर पतन की ओर बढ़ रही दिशाहीन युवा पीढ़ी तक पहुँचाने का बीड़ा मुझे ही उठाना है। मैंने महाविद्यालय के छात्रसंघ का चुनाव लड़ा। मैं स्वयं तो संयुक्त मंत्री बना ही, परन्तु साथ ही, अपने अभिन्न मित्र, कैलाश शर्मा के सहयोग से छात्र संघ में अपना बहुमत लाने में सफल रहा। संयुक्त मंत्री बनने के पश्चात्, सर्वप्रथम मैंने महाविद्यालय के वाचनालय में, जनज्ञान' मँगाना अपना कर्तव्य समझा। मुझे अपने प्रयत्न में सफलता मिली। आज हमारे महाविद्यालय में 'जनज्ञान' प्रतिमास आता है एवं अनेकों छात्र अथवा देश के भावी इन्जीनियर उसका लाभ लेते हैं।

मैं इस पत्र के माध्यम से, राष्ट्र के दो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण वर्गों से कुछ पूछना चाहूँगा।

पहला और सर्वाधिक उत्तरदायी वर्ग है—देश की कायापलट करने में समर्थ वैदिक विचारधारा के वाहक, आर्यसमाज के नेता, जो आर्यसमाज की धन दौलत, पदों, सबको अपनी विरासत समझ, मठाधीश बने बैठे हैं। मैं इनसे पूछना चाहूँगा—आप आर्य समाज के लिए क्या त्याग कर रहे हैं? आप राष्ट्र की विषम परिस्थितियों के बीच महर्षि के सन्देश को फैलाने के, कठिन उत्तरदायित्व को कहाँ तक पूर्ण कर रहे हैं? दूसरी बात—पाश्चात्य सभ्यता, झूठी फैशनपरस्ती और चरित्रहीनता की ओर बढ़ रही युवा पीढ़ी के लिए आप क्या कर रहे हैं? 'आर्य वीर दल' की रट लगाने से नई पीढ़ी आप तक नहीं पहुँच सकती। गुरुकुलों और आपके द्वारा सञ्चालित महाविद्यालयों से निकलने वाले छात्र कहाँ तक हमारी महान् वैदिक विचारधारा से ओत-प्रोत होते हैं?

यदि इन सबका उत्तर नकारात्मक है तो मैं स्पष्ट कहूँगा—क्यों नहीं छोड़ देते इन सब पदों को और क्यों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वास नहीं करते कर्मठ, ईमानदार और हमारी विचारधारा को संसार के जन-जन तक पहुँचाने में कृत सङ्कल्प लोगों पर।

दूसरी बात मैं विद्यार्थियों से पूछना चाहूँगा। आप सबने अपने स्वर्णिम भविष्य के लिए सुन्दर स्वप्न अवश्य संजोए होंगे। पर यह एक अटल सत्य है कि आप सबका स्वर्णिम भविष्य अपने देश के भविष्य के साथ जुड़ा है। क्या आप अपने देश के भविष्य के बारे में कुछ भी सोचते हैं? और आप अपने २४ घण्टों में राष्ट्र के लिए कितना समय देते हो? आप राष्ट्र के लिए क्या कुछ करना चाहते हैं? यदि हां—तो मैं एक ही निवेदन करूँगा, अपना थोड़ा-सा समय 'जनज्ञान' जैसे मासिक, अथवा महर्षि की विचारधारा का परिचय कराने वाले साहित्य को पढ़ने में दें।

पूज्य बहिन, मैं एक और आपसे निवेदन करूँगा—शायद उचित हो। मैं कुछ पत्र जनज्ञान में पढ़ता हूँ—एवं कुछ लेखकों के विचारों से प्रभावित भी होता हूँ। चाहता हूँ—ऐसे लोगों से मित्रता पत्र के माध्यम से हो जावे, तो कितना सौभाग्य रहे। यदि उनके पते नाम के साथ छापे जावें तो इससे मेरे जैसे अनेकों को लाभ पहुँचेगा।

मैं महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का कार्य प्राणपण से करने के लिए कृत-सङ्कल्प हूँ, और विश्वास दिलाता हूँ कि यदि आपका आशीर्वाद और मार्ग-दर्शन मुझे मिला तो कोई भी परिस्थिति मुझे निराश नहीं कर सकेगी।

आपका ही लघुभ्राता—
ओम्प्रकाश
लालापुरा, बजरिया विदिशा (म० प्र०)

★

कुरुक्षेत्र में ६ अप्रैल, १८९४ को सूर्यग्रहण के अवसर पर मेले में आर्य समाज का भी प्रचार मण्डप लगा। उसमें पण्डित लेखराम जी के अच्छे ओजस्वी और प्रभावोत्पादक व्याख्यान हुए। उन्होंने कुरुक्षेत्र के तालाब में डुबकी लगाने से स्वर्ग प्राप्ति आदि असत्य धारणाओं का खण्डन किया। पण्डित जी टाँग में फोड़े के कारण करनाल के आर्य समाज में ठहर गये। पण्डित जी ने सभासदों से पूछा—"किसी आर्य-डाक्टर के पास मुझे ले चलो तो फोड़ा दिखाऊँगा।" एक समाज के अधिकारी ने एक मुसलमान डाक्टर का नाम लिया। लेखराम जी ने पूछा—क्या कोई आर्य डाक्टर नहीं है? लाला कर्ताराम ने कहा "पण्डित जी! डाक्टर तो कोई आर्य-समाज का सभासद नहीं है। इलाज में आर्य अनार्यपना क्या घुसा है?"

आर्य-पथिक लेखराम जी की आँखें लाल हो गईं और वह बोले—"खाक आर्य-समाज है! एक डाक्टर को भी आर्य नहीं बना सकते?" किसी सभासद् ने पण्डित जी से पूछा कि जिस समाज का कोई डाक्टर सभासद् न हो क्या उसे आर्य-समाज ही न कहा जाये? पण्डित जी ने गम्भीर होकर उत्तर दिया—"जिस आर्य-समाज ने डाक्टरों, स्कूल के अध्यापकों और विद्यार्थियों को आर्य नहीं बनाया, उसने क्या खाक काम किया। जड़ को सींचने से ही वृक्ष हरा होता है।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—शिवराज एम० ए०

धधकती ज्वाला

विद्यालय के परिचायक से मैंने पूछा, 'सत्यपाल ! सिंह साहब नहीं दिखाई पड़ते हैं आजकल ! बीमार हैं क्या ?"

वह परिचित मुस्कान के साथ बोला, "आज आये तो हैं। पुस्तकालय में बैठे हुए हैं। मैं अभी उनको वहीं छोड़ आया हूँ।"

मैं अध्यापककक्ष से निकलकर पुस्तकालय की ओर चल दिया।

सिंह साहब परिश्रमी और विद्वान् अध्यापक हैं। शायद इसीलिए अधिकतर अध्यापक उनको सनकी कहते हैं। मैंने उनको कभी गप्पें मारते या व्यर्थ की बातें करते नहीं देखा। वे हर समय किसी न किसी कार्य में व्यस्त रहते हैं। कोई कार्य न हो तो अध्ययन तो है ही। भारतीय संस्कृति, वेद, उपनिषद्, रामायण, महाभारत आदि का उनको अगाध ज्ञान है।

मैंने देखा कि पुस्तकालय के एक कोने में सिंह साहब अकेले गुमसुम बैठे हैं। मैंने चुपचाप जाकर उनकी पीठ पर हाथ रख दिया। उन्होंने यह जानने की भी आवश्यकता नहीं समझी कि पीठ पर हाथ रखने वाला कौन है ! वे उसी तरह बैठे रहे। मैंने कहा, "भाई साहब, आप इस तरह चुपचाप यहाँ बैठे क्या कर रहे हैं ? सूरत ऐसी मातमी बना रक्खी है, क्या बात है ?"

सिंह साहब उठ खड़े हुए, बोले, "चलो, बाहर नीम के नीचे बैठेंगे।"

पुस्तकालय के बाहर नीम के नीचे चार कुर्सियाँ पड़ी थीं। वहाँ कोई नहीं था। हम दोनों वहाँ जाकर बैठ गये। दोनों दुए।

मैंने कहा, "सिंह साहब, आप कई दिन से दिखाई नहीं दिये। कहाँ रहे ?"

सिंह साहब ने आश्चर्य से कहा, "मैं तो प्रतिदिन आ रहा हूँ।"

"दिखाई नहीं देते हो। कहाँ रहते हो ?"

"जहाँ से इस समय आया हूँ। वहीं पुस्तकालय के कोने में बैठा रहता हूँ।"

मैंने कहा, "मित्र, संसार में पुस्तकें पढ़ना ही तो एकमात्र कार्य नहीं है ? घूमना-फिरना, मिलना-जुलना भी तो है।"

सिंह साहब हँसकर बोले, "मैंने यह कब कहा कि मैं वहाँ पढ़ता हूँ ? मैं वहाँ चुपचाप बैठा रहता हूँ।"

मैंने आश्चर्य से पूछा, "चुपचाप क्यों बैठे रहते हो ?"

"यों ही।"

मैंने धीरे से कहा, "क्या किसी आपत्ति में पड गये हो ?"

"नहीं।"

"फिर उदास क्यों रहते हो ?"

"पता नहीं।"

"कमाल है। अपनी उदासी का कारण भी नहीं जानते ? कोई विश्वास कर सकता है तुम्हारे कथन पर ?"

सिंह साहब चुप रहे।

मैं बोला, "भगवान् के लिए मुझे कुछ बताइए सिंह साहब ! आप जरूर किसी बड़ी परेशानी में हैं।"

"नहीं···नहीं···कुछ नहीं है।"

"नहीं, कुछ रहस्य है !"

"सब पागलपन है, सनक है।"

मैं कुछ-कुछ समझा। मैंने कहा, "और लोग कहते हैं, लेकिन मैंने आपको

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी सनकी नहीं कहा। फिर आप मुझ से बदला क्यों ले रहे हैं ?"

सिंह साहब चुपचाप मेरी ओर देखने लगे। मैं आगे बोला, "आप जानते हैं कि मैं आपकी विद्वत्ता का भक्त हूँ। दिन में एक-दो बार जब तक आप मिल नहीं जाते, तब तक चैन नहीं पड़ता। आप आजकल विशेष परेशान हैं। कुछ बताइए तो ?"

कुछ देर चुप रहकर सिंह साहब बोले, "सब सनक है, पागलपन है।"

"पागलपन ही सही।"

"आप को कोई लाभ नहीं होगा।"

"हानि भी क्या है ?"

'अच्छा तो एक बात बताओ। गाय को हिन्दू माता कहते हैं ?"

"हाँ कहते हैं।"

"क्यों कहते हैं ? भेड़, बकरी या भैंस को माता क्यों नहीं कहते ?"

"मैं नहीं जानता।"

सिंह साहब कुछ देर चुप रहकर बोले, "कम से कम इतना तो जानते ही हो कि गाय को माता कहकर हिन्दुओं ने गाय नामक प्राणी के साथ अपना विशेष सम्बन्ध स्थापित किया है। गाय को उन्होंने पूज्य मातृ-पद दिया है। यह सम्बन्ध धार्मिक हो सकता है।"

मैं आश्चर्य मुग्ध-सा बोला, "निश्चय ही।"

"तो फिर तुम्हारा चुनाव आयुक्त यह क्यों कहता है कि गाय धार्मिक नहीं है ?"

सिंह साहब जानते हैं कि मैं कांग्रेसी हूँ। इसीलिए उन्होंने 'तुम्हारा चुनाव आयुक्त' कहकर व्यंग्य किया था। मैंने कहा, "लेकिन इससे तुम्हारी उदासी का क्या सम्बन्ध ?"

सिंह साहब बोले, "यही उदासी का कारण है। हमारी धार्मिक आस्थाओं पर आघात होते हैं, फिर भी हम चुप रहते हैं। हमारी कर्त्तव्य-भावनाएँ मृत हो चुकी हैं। हम कब जागेंगे ? एक बात बताओगे ? कश्मीर में जनमत संग्रह क्यों नहीं कराते हो ?"

मैंने कहा, "आप कैसी बात कह रहे हैं, सिंह साहब ? वहाँ मुसलमानों की संख्या अधिक है। निश्चय ही वे कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाना चाहेंगे।"

"क्यों ? क्या वे भारत के प्रति कोई भक्ति नहीं रखते ?"

मैं चुप रहता हूँ।

सिंह साहब पुनः पूछते हैं, "भारत के मुसलमान अपने लिए अलग अलग प्रांतों की माँग क्यों करते हैं ? अपनी भाषा के लिए क्यों अरब देश की अरबी लिपि प्रयोग करते हैं और क्यों अपनी भाषा में अरबी-फारसी के ही शब्दों को प्रयुक्त करते हैं ?"

मैं धीरे से कहता हूँ, "लेकिन इन सब बातों से तुम क्यों परेशान होते हो ?"

सिंह साहब एकदम उत्तेजित हो हो गये। धीरे से किन्तु दृढ़ शब्दों में बोले, "मैं इसलिए परेशान हूँ कि मैं इस देश को और इस देश की सांस्कृतिक परम्पराओं को प्यार करता हूँ। मुसलमान अपने लिए पाकिस्तान ले चुके हैं, किन्तु अभागे हिन्दुओं को भारत नहीं मिला। जब मुसलमानों ने अपने लिए पाकिस्तान लिया तो क्यों नहीं यहाँ के मुसलमानों को पाकिस्तान भेज दिया गया ? कम से कम साम्प्रदायिक दंगों की समस्या तो समाप्त हो जाती। क्या पाकिस्तान में भी कभी हिन्दू-मुसलमानों में साम्प्रदायिक दंगे हुए हैं ? तिब्बत चीन ने ले लिया, हम अपनी कायरता को छिपाने के लिए शांति की रट लगाते रहे। हजारों वर्ग मील हमारी भूमि चीन ने दबा रक्खी है, उसको वापिस लेने की हमको कोई चिन्ता नहीं है। वास्तव में हम निर्वीर्य हो चुके हैं। पाकिस्तान ने कश्मीर का आधा हिस्सा अपने अधिकार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में कर रक्खा है, उसको मुक्त कराने की बात भी हम नहीं सोचते। वह तो शायद हमने पाकिस्तान को दे ही दिया है। इसके सैकड़ों उदाहरण मिल चुके हैं कि भारत के मुसलमान भारत के प्रति नहीं, बल्कि पाकिस्तान के प्रति निष्ठावान् हैं। फिर हम अपने देश से इनको वहीं क्यों न भेज दें ?"

मैं चुप हूँ। मेरी समझ में नहीं आता क्या कहूँ ?

सिंह साहब कहते जा रहे हैं, "मेरे हृदय में भीषण ज्वाला धधक रही है। मैं चीख कर कहूँगा—इस शासन ने देश को बर्बाद कर दिया है, देश को नपुंसक बना दिया है। मैं भारतीय हूँ। निराश होना मैं नहीं जानता। अवतारों की इस भूमि में फिर कोई विक्रमादित्य अवतरित होगा जो देशद्रोही शकों के चंगुल से इस भूमि को मुक्त करके धर्म की संस्थापना करेगा। मुझको उसी वीर विक्रमादित्य की प्रतीक्षा है।"

सिंह साहब चुप हो गये हैं। उनकी दृष्टि पश्चिमी क्षितिज पर स्थिर है। प्रतीची की लालिमा और सिंह साहब के हृदय की ज्वाला में शायद कुछ साम्य है—मैं सोचता रह जाता हूँ।

मुसाफिर !

मुसाफिर क्यों पड़ा सोता भरोसा है न इक पल का।
दमादम बज रहा डंका तमाशा है चलाचल का॥
सुबह जो तख्तशाही पर बड़े सज धज के बैठे थे।
दुपहरे वक्त में उनका हुआ है वास जंगल का॥मु०॥
कहां हैं राम और लक्ष्मण कहाँ रावण से बलधारी।
कहां हनुमान से योद्धा पता जिनके न था बल का॥मु०॥
उन्हीं को काल ने खाया, तुझे भी काल खायेगा।
सफर सामान बढ़ा ना तू, बना ले बोझ को हलका॥मु०॥
जरा सी जिन्दगी पर तू, न इतना मान कर मूरख।
यह जीवन चन्द दिन का है, कि जसे बुदबुदा जल का॥मु॥
नसीहत मानले 'ज्योति', उमर पल पल में कम होती।
जो करना आज ही करले, भरोसा कुछ न कर कल का॥मु०॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्री मंत्र पर पुनः प्रहार क्यों ?

—डॉ० शिवपूजनसिंह कुशवाह, एम० ए०

मासिक पत्रिका 'सरिता', नई दिल्ली, सितम्बर (प्रथम) १९७३ ई० अंक ४४२ में श्री सुरेन्द्रकुमार शर्मा 'अज्ञात' का 'गायत्री मंत्र' शीर्षक लेख प्रकाशित हुआ था। यह लेख अत्यन्त आपत्तिजनक था जिसका उत्तर मैंने मासिक पत्रिका 'वेदवाणी', "जनज्ञान' द्वारा दिया। अन्य कई विद्वानों ने 'जनज्ञान' व 'परोपकारी' द्वारा उत्तर दिया था फिर 'अज्ञात जी' को सन्तोष नहीं हुआ और उन्होंने पुनः मासिक पत्रिका 'सरिता' अप्रैल (द्वितीय) सन् १९७४ ई०, अंक ४५७ पृ० ७९ से ८२ तक में गायत्री मंत्र, आलोचनाओं और आपत्तियों का उत्तर' शीर्षक लेख में अपने पूर्व लेख की पुनरावृत्ति की है।

लेखक को यह उचित था कि आलोचनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़कर उनकी प्रत्यालोचना करता, पर उन्होंने किसी लेखक की आलोचना का हवाला न देते हुए वेसुरा राग आलाप है। यह 'सरिता' के पाठकों को बहकाने और आँखों में धूलि-प्रक्षेप करने के समान है।

लेखक आलोचकों को कोसते हुए पृ० ७९ में कहता है—"कुछ एक सम्मानित भिखारी उर्फ परान्नभोजी फर्म के एकाधिकारी अपने गुरुडम और रोटीरोजी का खतरा समझ दुर्बासा का वेश धारण करके भी आये।···अपने वास्तविक भैरव एवं बीभत्स रूप का परिचय दिया। वह एक अपनी किस्म का ही अप्रिय अनुभव है।"

समीक्षा-आलोचकों को लेखक का 'भिखारी, परान्नभोजी, धर्म के एकाधिकारी आदि शब्दों का प्रयोग करना कहाँ तक उचित है यह विज्ञ पाठक ही समझ सकते हैं। इनमें से कोई भी आलोचक भिखारी, परान्नभोजी नहीं है, लेखक को शायद दिवा-स्वप्न हुआ है तभी तो अनर्गल प्रलाप कर रहा है। आलोचकों की आलोचनाओं की सही प्रत्यालोचना न कर "खिसियानी बिल्ली खम्भा नोचे' कहावत चरितार्थ कर रहा है। पाठक ही निर्णय करें कि कौन दुर्बासा बनकर कटु शब्दों का प्रयोग कर रहा है। लेखक अपने नाम के अन्त में 'शर्मा' लिखता है जो जन्मगत ब्राह्मणों की उपाधि है। संभवतः लेखक भी जन्मगत ब्राह्मण हो जिसका वंश परम्परा से भीख माँगना, परान्न-भोजन करना, घुट्टी में ही पिलाया गया है। चंद चाँदी के टुकड़ों पर (जो 'सरिता' परिवार से मिलते हैं) गायत्री मंत्र पर प्रहार करने का कुप्रयास करता है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ ७९-८० में—"हमने लेख में स्वामी दयानन्द के विषय में इतना ही लिखा है कि "पिछली शताब्दी में उन्होंने गायत्री मंत्र का बहुत ज्यादा प्रचार किया—आर्य समाजी संन्यासियों के बारे में सिर्फ यह लिखा गया कि "वे सप्ताह-सप्ताह तक गायत्री मंत्र पर भाषण देते हैं और इधर-उधर की सब कथा-कहानियाँ सुनाते रहते हैं जिनका कि गायत्री मंत्र से प्रत्यक्ष सम्बन्ध नहीं होता।"

हमारे अप्रौढ़ आलोचक इन तथ्यों में भी आक्षेप योग्य स्थल ढूंढ़ने का प्रयत्न करते रहे हैं……।"

समीक्षा—लेखक कितना मिथ्यावादी है जो लिखता है कि स्वामी दयानन्द जी के विषय में इतना ही लिखा है। उसने 'सरिता' सितम्बर (१) १९७३ ई०, पृष्ठ ७७ में महर्षि दयानन्द जी पर आक्षेप करते हुए लिखा था—"उन्होंने वेदमंत्रों को मोम की नाक समझ कर सर्वत्र अपने अनुसार ठीक अर्थ करने का उपक्रम किया है।"

क्या यह आक्षेप नहीं है ? लेखक स्वयं समझ ले कि वह प्रौढ़ लेखक है या अप्रौढ़ लेखक ! जो वेद, शास्त्रों को किञ्चिन्मात्र भी समझने में असमर्थ हैं वे भी टाँग अड़ाकर पाँचवें सवार में अपना नाम लिखाने का प्रयास कर रहे हैं। आश्चर्य है !!!

महर्षि दयानन्द जी सरस्वती के भाष्य को समझने के लिए विद्वत्ता की आवश्यकता है। आपके सदृश अप्रौढ़ लेखक खाक भी नहीं समझ सकता। महर्षि दयानन्द जी के वेदभाष्यों की पाश्चात्य व प्राच्य विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की है।[1]

महर्षि दयानन्द जी ने गायत्री ही क्या सभी वेदों का विशेष प्रचार किया है। इसलिए विद्वानों ने उन्हें 'वेदोद्धारक' कहा है।

आर्यजगत् के प्रसिद्ध नेता व योगी श्री आनन्द स्वामी जी ही दिल्ली में सप्ताहों गायत्री पर कथा कहते हैं। लेखक का संकेत शायद उन्हीं की ओर हो। कठिन से कठिन विषय को सुलभ रीति से समझाने की अपनी-अपनी शैलियाँ होती हैं। स्वामी जी महाराज भी लघु कथा कहानियों व सच्ची घटनाओं के आधार पर गायत्री को जनता को समझाने का प्रयत्न करते हैं जो उनकी शैली सराहनीय है। क्या 'हितोपदेश', 'पञ्चतंत्र' आदि में वर्णित कथाओं द्वारा गूढ़ से गूढ़ उपदेश नहीं दिया गया है ? यही शैली स्वामी जी महाराज की है। आक्षेप व्यर्थ है।

"जिनका गायत्री मंत्र से सम्बन्ध नहीं" यह लिखना आर्य समाज के संन्यासी पर आक्षेप नहीं है ? लेखक गाली प्रदान भी करता है और अस्वीकार भी करता है; "उल्टे चोर कोतवाल को डाँटे" कहावत को चरितार्थ कर रहा है।

पृष्ठ ८०"……मनुस्मृति, शंखस्मृति और पराशरस्मृति आदि धर्मग्रन्थों में गायत्री मंत्र के जाप के फल बताते हुए अतिशयोक्ति का आश्रय लिया गया है। इनमें नरहत्या, सुवर्णचोरी और गुरुपत्नीगमन जैसे जघन्य अपराधों से मुक्ति के लिए कुछ हजार बार गायत्री मंत्र की आवृत्ति का विधान किया गया है……।"

समीक्षा—यह ठीक है कि पराशर स्मृति ११।५६ में दश हजार गायत्री जप

---

१. द्रष्टव्य मेरी लिखित पुस्तक 'महर्षि दयानन्द जी कृत वेदभाष्यानुशीलन'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

से परम शुद्धि की प्राप्ति; शंखस्मृति अ० १२ श्लोक १ से ३१ तक में 'गायत्री जप विधिवर्णनम्' की चर्चा है। लेखक स्वयं इन प्रमाणों को अतिशयोक्ति समझता है।

राजर्षि मनुजी कहते हैं "धर्मं जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः" (मनुस्मृति २।१३)=जो धर्म के ज्ञान की इच्छा करें, वे वेद द्वारा धर्म का निश्चय करें। क्योंकि धर्माऽधर्म का निश्चय बिना वेद के ठीक-ठीक नहीं होता।" इससे स्मृतियों का प्रमाण गौण ही समझें।

योगदर्शन १।२८ में "जप" शब्द का जो अर्थ बतलाया गया है कि "उसके" अर्थ का भावन—उसके अर्थ का अनुभव है।

अतः गायत्री मंत्र के जप का अर्थ यह है कि उसका अर्थ भली-भाँति समझा जाये और पुनः जो कुछ उसमें करने को कहा गया है उसके प्रभाव का अनुभव किया जावे।

लेखक को पहिले 'गायत्री मंत्र' का जप करके देखना चाहिये, यदि लाभ न होता तो उलाहना देना था।

पृष्ठ ८० से ८२ तक—"···छन्दगत अशुद्धता, हमने छन्दःशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार लिखा था कि ऋग्वेद में यह छन्द लँगड़ा है ·····"

समीक्षा—मैंने इस पर पूर्णरूप से लिखा था, पर लेखक ने मेरे समाधान को न पढ़कर या जान बूझकर पुनः छन्द का प्रश्न उठाया है। इससे ज्ञात होता है कि लेखक छन्दःशास्त्र को समझने में सर्वथा ही असमर्थ है या जान बूझकर मक्कारी कर रहा है।

मैं अपने उस उत्तर को पुनः लिख देता हूँ।

"वैदिक छन्दः शास्त्र भेद-प्रभेद मिलाकर लगभग ५० तरह का है। उसमें एक भेद है—'निचृद् गायत्री। निचृद् में २३ ही अक्षर होते हैं। यह छन्द लँगड़ा नहीं। यजु० ३६।३ का मंत्र उसका व्याहृति भाग का देवी बृहती और शेष का निचृद् गायत्री छन्द है। यदि वेद को पढ़ा होता और उसमें लिखे छन्द पर ध्यान दिया होता तो इस प्रकार प्रलाप न करता।

यजुर्वेद ३१।५, २२।७, ३०।२ तथा ऋ० ३।६२।१०, सामवेद १४६२ में २३ अक्षर वाला 'निचृद् गायत्री' नामक छन्द वाला मंत्र है। यजु० ३६।३ में 'भुर्भूवः स्वः' व्याकृति सहित गायत्री मंत्र है उसका छन्द भी पृथक् है।

गुरुमंत्र को 'गायत्री मंत्र' गायत्री छन्द के कारण नहीं कहा जाता, क्योंकि गायत्री छन्द के तो वेदों में शतशः मंत्र हैं। वे गायत्री मंत्र नहीं कहाते, 'गायत्री छन्दस्क' मंत्र कहलाते हैं। 'गायत्री' कहने का तात्पर्य शास्त्रकारों ने "गायन्तं गायते या ऋचा सा गायत्री" शब्दों में प्रकट किया है। अज्ञात जी का लिखना कि शास्त्रीय नाम 'सावित्री' है यह भी उनका अज्ञान है। इस ऋचा को सविता (मंत्र वाच्य अर्थ) होने से 'सावित्री' कहते हैं। 'सविता' देवता की वेद में जितनी भी ऋचायें हैं चाहे वे किसी भी छन्दावली में हों, सभी 'सावित्री' कहलाती हैं।

इस प्रकार श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा अज्ञात ने 'गायत्री मंत्र' पर जो भी आक्षेप करने की कुचेष्टा की है उनका पूर्ण रूप से समाधान कर दिया गया। ●

प्रत्येक परिवार में 'वेद' पहुँचाकर अपना कर्त्तव्य पूर्ण करें!

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योगदर्शन का साधन पाद

—ब्रह्मचारी जगन्नाथ पथिक

पतञ्जलि ऋषि इस पाद में दो मुख्य साधन उन व्यक्तियों के लिए बताते हैं जो क्लिष्ट वृत्ति वाले हैं। ये दोनों साधन कर्मयोग और राजयोग हैं। वस्तुतः योग के रथ के कर्म और ज्ञान-ध्यान ये दो पहिए हैं, तथा कर्म विना ज्ञान के अन्धा है, और ज्ञान विना कर्म के पंगु है। तो 'तपः स्वाध्यायेश्वर प्रणिधानानि क्रिया योग :' राग-द्वेष, सुख-दुःख, क्षुधा-पिपासा, शीत-उष्ण आदि द्वन्द्वों पर विजय पा लेना अर्थात् हमारे कार्य साधन में— उद्देश्य पूर्ति में ये बाधक न बन सकें ऐसा अभ्यास कर लेना तप है। 'तज्जपस्तदर्थ भावनम्'—ऐसा स्वाध्याय तथा निष्काम कर्म जो फल की भावना को त्याग कर केवल भगवान् की प्रसन्नता तथा आज्ञापालन करने के उद्देश्य से—भावना से प्रभु को ही समर्पित करते हुए, किए गए सर्व कर्म ईश्वर प्रणिधान हैं; मन वचन कर्म द्वारा अहंकार का सर्वभावेन समर्पण कर देना।

किसी के मन में यह विचार भी उत्पन्न हो सकता है कि पातंजल कर्मयोग एक साधन मात्र है, यथा—समाधि भावनार्थः क्लेश तनु करणार्थश्च; किन्तु

> लोकेऽस्मिन् द्विविधा निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ,
> ज्ञानयोगेन सांख्यानां कर्मयोगेन योगिनाम् ॥

गीता में ये दो निष्ठाएं हैं। इनमें से किसी एक के अनुष्ठान से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है। 'कर्मणैव हि संसिद्धिमास्थिता जनकादयः' आदि। परन्तु ध्यान रहे कि एक ही पहिए की गाड़ी आज तक देखने में नहीं आई, तो यौगिक रथ एक चक्र से कैसे चलेगा ? हाँ, इतना अवश्य है कि कहीं मुख्यता ज्ञान को दे दी है—कर्म को गौण कर दिया है, और कहीं कर्म को प्रधानता है तो ज्ञान गौण है—पर चलना होगा दोनों पैरों से ही। कर्म और ज्ञान के नेत्रों से सुआँखा बन जाता है।

इस क्रिया योग से—अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष, अभिनिवेश रूपी क्लेश, सूक्ष्म-दुर्बल-न्यून-ढीले पड़ जाते हैं और फिर—ध्यान हेयास्तद् वृत्तयः—सूक्ष्म-दुर्बल हुए ये क्लेश ध्यान विचार द्वारा नष्ट किए जा सकते हैं। जब तक ये क्लेश रहेंगे तबतक कर्माशय अर्थात् वासनाएँ उत्पन्न होती रहेंगी और तबतक ही जाति आयु भोग का चक्र बना रहेगा। अतः क्लेशों के मूलोच्छेदन के लिए राजयोग मुख्य उपाय है। इसी का आगे वर्णन है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चिकित्सा की जाती है किसी रोग की—रोग के कारण की, तो आओ देखें हमें रोग क्या है ? रोग का कारण क्या है ? उसके हटाने के साधन क्या हैं ? इन्हें योग की परिभाषा में—हेय, हेयहेतु, और हान कहते हैं। हेयं दुःखमनागतम्—भविष्य में आनेवाला दुःख हेय है—त्याज्य है—यह है रोग। इस रोग का कारण है—द्रष्टृ दृश्ययोः संयोगो हेय हेतुः—आत्मा और प्रकृति का संयोग—रागात्मक संयोग ही इस क्लेश का कारण है, यह है रोग का निदान। तस्य हेतुरविद्या—यह रागात्मक संयोग होता है अज्ञान से, तो फिर—तद् अभावात् संयोगाभावो हानम् तद् दृशेः कैवल्यम्—उस अज्ञान के नाश से आत्मा और प्रकृति के साथ मेल का नाश हो जाना—हान है। उस हान का उपाय है—विवेक ख्यातिरविप्लवा हानोपायः—निर्मल विवेक ख्याति—ऋतम्भरा प्रज्ञा द्वारा प्राप्त आत्मा और बुद्धि का पृथग् दर्शन। इस विवेक ख्याति की प्राप्ति के लिए अगले सब उपाय हैं—

यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार (इन्द्रिय संयम), धारणा, ध्यान, समाधि। धारणा, ध्यान, समाधि ये तीन योग के अन्तरंग साधन हैं। इनसे प्रकृति के आन्तरिक सूक्ष्म स्वरूप का साक्षात् होता है, और यम नियमादि है संसार में व्यवहृत व्यवहार की शुद्धि के लिए। प्राणायाम से ततः क्षीयते प्रकाशावरणम्, प्रकाश को दबा लेनेवाला तम और रज का पर्दा हट जाता है, और नैसर्गिक प्रकाश का स्रोत, जो राग-द्वेषजन्य क्लिष्ट वृत्तियों से रुक गया था—खुल जाता है। उससे—धारणासु च योग्यता मनसः—परमाणु से लेकर महान् आकाश तक में मन को स्थिर और एकाग्र करने की क्षमता आ जाती है। तथा प्रत्याहार—इन्द्रियों को अपने-अपने विषयों में आसक्त न होने देने से—आहार रहित करने से—उपवास से, इन्द्रिय संयम से—ततः परमावश्यतेन्द्रियाणाम्—इन्द्रियों पर इतना अधिकार प्राप्त हो जाता है कि फिर इन्द्रियाँ अपने विषयों में तभी प्रवृत्त होती हैं, जब आत्मा इन्हें विषयों में लगाए; अन्यथा विषय पास पड़ा रहे फिर भी इन्द्रियाँ विषय को ग्रहण नहीं करतीं—अनुरक्त वा आसक्त होना तो दूर रहा।

१९वां सूत्र—गुण—सत्त्व-रज-तमोमयी प्रकृति की चार अवस्थाएँ हैं।

१—विशेष—पृथिवी आदि ५ महाभूत, ५-५ ज्ञान और कर्मेन्द्रियाँ, ११ वां मन।

२—अविशेष—शब्दादि ५ तन्मात्राएँ, छठा अहम्।

३—लिंगमात्र—महत्तत्व—व्यापक बुद्धि, ज्ञान-विज्ञान, ऋत।

४—अलिंग—गुणों की साम्यावस्था—मूल प्रकृति।

मैनेजर को इस दफ्तर में आये अभी केवल छह महीने हुए थे, पर वह महसूस करने लगा कि लोग उसे पसंद नहीं करते। एक दिन उसने बड़े बाबू को अपने पास बुलाया और बड़े व्यथित हृदय से कहा, "बड़े बाबू, इस दफ्तर में लोग मुझे पसंद क्यों नहीं करते। मैं जिस दफ्तर में पहले था वहाँ विदाई-समारोह में मुझे 'चाँदी का टी-सेट' भेंट किया गया था।

"सिर्फ चाँदी का टी-सेट हुजूर ! आप जिस दिन यहाँ से जायेंगे हम आप जो चाहेंगे आप को भेंट करेंगे," बड़े बाबू ने कहा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समाजवादी व्यवस्था

ग्राम की कूपमंडूकता की स्थिति से उबर कर नगर के कालेज के छात्र बन गये थे छैल बिहारी। प्रभु की कृपा थी और माता पिता का वरद हस्त। पढ़ाई-लिखाई के लिए छात्रावास में रहले वाले छैल बिहारी को काफी मात्रा में नकदनारायण की प्राप्ति प्रतिमास होती थी। अक्ल के अंधों और गांठ के पूरों की टोह में रहने वाले कुछ छात्र 'कामरेडों' की दृष्टि छैल बिहारी पर गड़ गई और उन्हें आद्योपांत पढ़ गई। बस फिर आरम्भ हुआ प्रयास। कई कामरेड आते और छैल बिहारी जी से संपर्क बढ़ाते। उनकी प्रशंसा कर जाते और कई बार पत्र-पुष्प भी मेहनताने के रूप में ले जाते। अन्ततः उन्होंने योजना बनाई और छैल बिहारी जी की ताजपोशी का निश्चय कर ही लिया।

एक दिन उन्हें निमन्त्रण दिया कि अगले सप्ताह 'पार्टी आफिस' में प्रगतिशील छात्रों की एक सभा होगी और उसमें होगा छात्रसंघ के पदाधिकारियों का चुनाव। छैल बिहारी भला आदर और प्रेम सहित दिया गया निमन्त्रण कैसे ठुकराते वे सजधजकर बैठक में आए। योजनानुसार उनका राजतिलक कामरेडों ने कर दिया और अध्यक्ष पद का ताज उनके सिर पर धर दिया।

धीरे-धीरे छैल बिहारी का अध्ययन सत्र आरम्भ हो गया। कभी मार्क्स का 'कैपिटल' उन्हें दिया जाता तो कभी लेनिन की जीवनी उन्हें पकड़ा दी जाती। पढ़-पढ़कर छैल बिहारी समाजवाद के पंडित हो गए। सम्मान का सिलसिला भी बढ़ता जा रहा था। छैलबिहारी पर 'प्रगतिशीलता', 'समानता' और 'सर्वहारा की सेवा' का ज्वर भी तेजी से चढ़ता जा रहा था।

अन्ततः छैल बिहारी तन मन से लाल हो गए। वे मीटिंगों में जाते। उनका भाषण होता तथा उन्हें बांस पर चढ़ाने और उनकी जेब का भार हलका करने की मन में सदैव ठाने रहने वाले लोग डटकर और जमकर तालियाँ बजाते। छैल-बिहारी जी की मालाओं के भार से दबी हुई गर्दन और ढकी हुई छाती दोनों ही जय जयकार की गर्जनाओं को सुनकर तन जातीं। धीरे धीरे छैल बिहारी नेता जी हो गए। नारों ने उन्हें उठा दिया था, कामरेडों ने 'लीडर' बना दिया था।

× × ×

छैल बिहारी कालेज के छात्रसंघ-अध्यक्ष पद के लिए प्रगतिशील छात्र-छात्राओं के संगठन द्वारा अपने प्रत्याशी मनोनीत हो चुके थे। रोज सभाएँ, रोज जलूस और जनसंपर्क। कई दिनों तक सिलसिला चलता रहा। छैल बिहारी जी की बाप दादा की कमाई जो घर से 'एमर्जेन्सी' के कारण भारी मात्रा में मँगाई गई थी, वितरण की वैतरणी में समाती गई। किन्तु अन्ततः परिश्रम सफल हो गया और छैल बिहारी जीत गए। यह अलग बात है कि चुनाव की इस लड़ाई में उनके पाकेट रीत गए। किन्तु सौदा तो सौदा ही था। फिर छैल बिहारी तो इस इस संघर्ष में हारे हुए जुआरी नहीं, अपितु जीते हुए खिलाड़ी थे। कई दिन तक दावतों के सिलसिले चले, खुशियों का आलम रहा।

× × ×

नेता बनने के उपक्रम में छैल बिहारी का पहला साल अकारथ गया, तो नेताजी बनकर दूसरा भी व्यर्थ चला गया। अर्थात् दो-दो बार परीक्षा में बैठे किन्तु भाग्य ने साथ न दिया या यों कहिए कि भाग्य को न मानने की जो फिलासफी छैलबिहारी ने रटी थी, उससे रुष्ट

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होकर भाग्यदेवता ने उनसे प्रतिशोध ले लिया।

अन्ततः प्रगतिशीलता के विचारों और समाजवादी सिद्धान्तों के पोथे उठाए छैल बिहारी महानगरी से अपनी नगरी को वापस लौट गए।

घर लौटे तो बुर्जुआ बुजुर्गों के पल्ले पड़कर उन्हें शादी की घिसी-पिटी रीति भी निभानी ही पड़ी। अब परिवार बस ही गया तो उन्होंने समाजवादियों की फौज को और कुछ बढ़ाने की दृष्टि से परिवार-नियोजन के नारे की उपेक्षा कर दी और उनके यहां दो पुत्ररत्न व एक पुत्री पधार गए।

× × ×

बालक बड़े हो गए थे। स्कूल जाने लगे। बालक-बालिकाएँ स्कूल जाते हैं तो हाथ खर्च भी ले ही जाते हैं। बेटे-बेटी स्कूल में पढ़ते थे। बड़ा दसवीं में तथा छोटा पुत्र नौवीं कक्षा में आ गया तो बेटी भी छठी कक्षा से सीढ़ियाँ पार कर सातवीं में जा चढ़ी थी।

नेता छैल बिहारी घर पर पत्नी से लेकर बालकों तक को समाजवादी दर्शन और साम्यवादी सिद्धान्त समझाते थे। अब वे छात्र संघ न सही तो क्षेत्र में किसानसभा का आन्दोलन चलाते थे। लुटेरे और कमेरे का दर्शन व फिलासफी लोगों को समझाते थे। सब की बराबरी का नारा भी लगाते थे। बेटों व बेटी पर भी इस दर्शन का प्रभाव हो रहा था।

× × ×

एक दिन बड़े बेटे क्रान्ति तथा छोटे पुत्र तूफान व पुत्री विद्युत्लता में विद्यालय जाते हुए परस्पर यह वार्ता छिड़ गई कि उन्हें 'डेडी' ने हाथ खर्च के लिए कितना-कितना दिया है। क्रान्ति ने बताया कि उसे आज एक रुपया मिला है तो तूफान का कलेजा धक्क से रह गया। क्योंकि लिखाई-पढ़ाई में अपेक्षाकृत कुछ कमजोर था वह, अतः डेडी ने उसे आठ आने में ही टाल दिया था जबकि विद्युत्लता को दो रुपए मिले थे। तीनों ही बालक समाजवादी थे लेकिन, मार्क्स व एंजिल्स के दर्शन को उन्होंने जन्म घुट्टी में ही पी लिया था। डेडी के इस असमानतापूर्ण व्यवहार के विरोध में पग उठाने के लिए उन्होंने समाजवादी दर्शनशास्त्र टटोला तो उसमें यह ब्रह्म वाक्य पाया "हर जोर जुल्म की टक्कर में संगठन हमारा सहारा है।" अतः भाई-बहन मिले और पिता की इस असमान वितरण व्यवस्था के विरुद्ध संघर्ष करने के लिए 'यूनियन' बनाने का निश्चय कर लिया। त्रिगुट की यह यूनियन ही संघर्ष समिति भी बन गई और उसका संयोजक बना क्रान्ति कुमार।

संयोजक के नाते क्रान्ति ने छैल-बिहारी को नोटिस दे दिया कि यदि समान राशि सभी को जेब खर्च के लिए न दी गई तो सीधी कार्रवाई आरम्भ कर दी जाएगी। नोटिस छैल बिहारी को मौखिक ही दिया गया था, अतः उसने इसे अधिक गम्भीरता से न लिया। परिणामतः एक दिन क्रान्ति, तूफान व विद्युत्लता तीनों ने धरना दे दिया और घोषणा कर दी कि जब तक डेडी समानता का व्यवहार न करेंगे, वे स्कूल न जाएँगे।

छैल बिहारी ने उनके समक्ष स्थिति का स्पष्टीकरण किया और कहा कि क्रान्ति को वह इसलिए एक रुपया देते हैं कि वह मेधावी है और विद्युत्लता को इसलिए दो रुपए मिलते हैं कि उसे अपनी सहेलियों में अपनी धाक कायम रखनी होती है तथा तूफान को इसलिए अठन्नी पल्ले पड़ती है कि वह पढ़ता कम है और उपद्रवों में अधिक रुपया गंवाता है।

यह दर्शन बालकों की समझ में न आया और वे नारे लगाने लगे "क्रान्ति होकर रहेगी। प्रत्येक का समान जेब खर्च लेकर रहेंगे। डेडी का अन्याय हम न सहेंगे।" नारों का शोर बढ़ता गया तो गली-मुहल्ले के लोगों का टोला भी वहाँ पहुँच गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब छैल बिहारी परेशान थे। अंततः वे बोले "बच्चो ! समाजवादी व्यवस्था और दर्शन तुम्हारे लिए नहीं, वे तो नारे हैं, जनता में रौब गालिब करने व नेतागिरी चलाने के। तुम सभी मेरी संतान हो किन्तु यथा-योग्य ही व्यवहार अपेक्षित होता है। तूफान भी पढ़ाई में अधिक ध्यान देगा तो समान राशि पाएगा और क्रान्ति यदि अधिक प्रतिभा दिखाएगा तो और अधिक पाएगा। अतः परिश्रम करो।"

बालकों ने डेडी के मुख से जब यह सुना तो बोल उठे "डेडी, आप जनता को गुमराह करना छोड़ दो, हम भी हठ त्याग देंगे।"

और अन्ततः प्रगतिशील व समाज-वादी छैल बिहारी बच्चों से हार मान गए और बोल उठे "हाँ, बच्चो यथायोग्य वेतन ही सत्य सिद्धान्त है, शेष नारे धोखा। आज मेरा समाजवाद का बुखार उतर रहा है।

—एच० पी० आर्य

वाद-नीति

बनाम विवादग्रस्त-मानवधर्म

भारतवासियों को एक दिन विश्व का चक्रवर्ती-शासक होने का स्वाभिमान था और सारा संसार उनकी बल-बुद्धि-विद्या के सामने नतमस्तक था। उनकी विश्वमान्य संस्कृति का एक मात्र नारा था :—

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु,
लक्ष्मीः समाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम्।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा,
न्याय्यात्पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः॥

परन्तु आज रोटी-रोजी-रहनुमाई के भिखारी दीन-हीन भारतवासियों की वर्तमान अधोगति का दोष हम चाहे ब्रिटिश काल को दें या मुगल साम्राज्य को, "पराधीनता" समझें या "साम्प्रदायिकता", पर ऐतिहासिक सत्य तो यह है कि भारतीय संस्कृति और मानवता का पतन सत्तामद में मदान्ध दुर्योधन की राजनैतिक दुर्बुद्धि से शुरु हुआ था और अन्त में नकली "स्वाधीनता" की धर्म-कर्म-हीन राजनीति ने आज उनको पतन की पराकाष्ठा के उस पार पहुंचा दिया जहाँ उनके साथ न तो ईश्वर ही रहा न अल्लाह। विश्व में अब न तो उनका "स्वदेश" ही है न "स्वधर्म"॥ नाना प्रकार की "वादनीति" के कीचड़ में फँसे हुए भारतवासियों को, स्वाधीन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

होकर भी, न तो शासक होने का स्वाभिमान है—न शासित ही रहना चाहते हैं, पथभ्रष्ट लोगों का "इनक्लाब" अब और क्या चाहता है यह स्वयं नारा लगाने वालों को भी पता नहीं है – दूसरा तो कोई क्या जाने !!!

दुराचारो हि पुरुषो लोके भवति निन्दितः।
दुःखभागी च सततं व्याधितो ऽल्पायुरेव च ॥

अपमान किया ऋषियों का उसने,
धूर्तों का बना पुजारी।
शास्त्र संस्कृति सब ठुकराई,
शिक्षा केन्द्र बना अखबारी ॥

यह दुर्भाग्य नहीं दुर्बुद्धि है, बिन मारे मर जाओगे।
अब भी अगर न सोचा कुछ, तो सर पीट-पीट पछताओगे ॥

अवतार-वाद के माननेवालों के देश में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव निस्सन्देह एक सामयिक चमत्कार ही था। पतित-पावन ऋषि ने सत्य सनातन मानव-धर्म के उत्थानार्थ अज्ञानान्धकार में सत्यार्थ-प्रकाश का सूर्य चमकाया था। परन्तु लोगों की 'विनाशकाले-विपरीत बुद्धि' ने इस प्रकाश का भी उसी प्रकार अनादर किया जैसे भील गजमुक्ता को त्याग कर गुन्जा की माला पहिनते हैं।

न वेत्ति यो यस्य गुणप्रकर्षं स तस्य निन्दां सततं करोति।
यथा किराती करिकुम्भजाता मुक्ताः परित्यज्य बिभर्ति गुञ्जाः ॥

राम-राज्य का स्वप्न देखने वाले बेहया हिन्दुओं और 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' का नारा लगाने वाले आर्यों के लिए तो यह एक सबसे अधिक लज्जाजनक बात है जिन्होंने जान-बूझकर सत्यार्थ-प्रकाश की अवहेलना की और देखिये वे क्या कहते हैं जिनको आज भी हम शत्रुवत् देखते हैं :—

"The most important family of Caucasins man to which all the chief civilisation. of modern times belong. A tall, fair-skinned, long-head d race, whose origin is still doubtful, though it was probably in central Asia and who spread in prehistoric times over the whole of Europe and parts of Asia and Africa. Almost all modern Europeans are of Aryan descent. The family is also called Indo-European or Indo-Germanic, but these names are open to objection from which the term Aryan is free."

HARMS WORTH HISTORY OF THE WORLD

It has been remarked by various authors that in Analogy with Manu or Manus as the Father of mankind or of the Aryas, German mythology recognises Manush as the Ancestor of Teutons. The English MAN and the German MANU appears also to be akin to the word MANU as German MANESH presents a close resemblance to MANUSH of Sanskrit."

MANINGS ANCIENT AND MEDIEVAL INDIA

यह था प्रभाव उस ऋषि के सत्यार्थ-प्रकाश का जिससे प्रभावित होकर ही अंग्रेजों ने अपने आपको आर्य सिद्ध करने की कोशिश की थी। परन्तु "गांधीवाद" और "नेहरू-नीति" से प्रभावित पागल भारतवासियों ने सिन्ध सरकार द्वारा सत्यार्थ-

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रकाश पर "रोक" तक लगाने की कुचेष्टा की थी। अखण्ड भारत के टुकड़े करने के लिए मुस्लिम-लीग से सौदा किया था। विशुद्ध हिन्दी को "हिन्दुस्तानी" बनाया गया था। हिन्दु-मुस्लिम एकता का हल्ला मचाकर हिन्दू-मुस्लिम विवाह रचाये गये। स्वयं गांधी-पुत्र "अब्दुल्ला-गांधी" बनातो भी हिन्दू-मुस्लिम एकता तो दूर रही--हिन्दू-हिन्दू की एकता का ही धुंवां उड़ा कहा।

नकली स्वराज के संघर्ष ने स्थिति बदल डाली।
धोखा दिया जनतत्र ने वो मानवता कुचल डाली।।

किसी कवि ने कहा था :--"खिरद का नाम जुनूं रख दिया जुनूं का खिरद, अब तेरा हुस्न रिश्मा चाहे जो साज करे"। ठीक इसी प्रकार नकली स्वराज्य ने "गणतंत्र" का नाम जनतंत्र इसीलिये रखा था जहाँ चोर-डाकू-मूर्ख-आदि सभी इनको वोट दे सकें। हठाग्रह को "सत्याग्रह" कहा गया और हड़ताल जैसी हिंसक हरकतों को शान्तिपूर्ण आन्दोलन माना गया जिससे व्यापार जगत में दंगे होते रहें। कर्मवीरों का कर्मक्षेत्र, जिसकी वह विश्वकर्मा नाम से हर वर्ष पूजा किया करते हैं, उसके विरुद्ध तो विद्रोह करना सिखाया गया और शहरों की सड़कों पर भाड़े का कमरा उनका "वैलफेयर सैंटर" बताया गया। अमानुषिक कन्ट्रोल द्वारा सर्वत्र काले बाजार का निर्माण किया और गुण-कर्म स्वभाव से सर्वहितकारी वैदिक वर्ण व्यवस्था को ठुकरा कर अनेकों परस्पर विरोधी राजनैतिक पार्टियाँ गठित की गई जिनके दैनिक गृह-युद्ध से राज्य और प्रजा दोनों ही बुरी तरह से पीड़ित हैं।

पाँच हजार वर्ष पूर्व महाभारतकाल में विदुर जी महाराज ने कहा था कि—

पुरुषा बहवो राजन् सततं प्रियवादिनः।
अप्रियस्य तु पथ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः।।

भारतवर्ष में आज भी यही चापलूसी काम कर रही है। दीपावली का त्योहार है पर सरकार होली जलाकर फगवा खेल रही है और प्रजा भी सरकार के साथ अबीर गुलाल उड़ाने में लगी हुई है! वेदों में कहा है—

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम्।
तक्षारिष्टं हतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वंतमिच्छति।।
जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम्।
कर्मारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवतामिच्छति।।

सभी के लिये सुखदायी उक्त वैदिक वर्ण-व्यवस्था को न मानकर असम्भव एवम् अनधिकृत "समाजवाद" या "साम्यवाद" के गीत गाने वालों को कौन समझाए? वेद-भाष्य को कौन पढ़ेगा? क्या शराब की बोतलों में शरबत काम का रह जायेगा? गुरु-ग्रन्थ की तरह क्या वेद भी एक पाठ्य-पुस्तक ही बनकर नहीं रह जायेगी? जो तरकारी काटने में ही अपनी उंगली कटा लेता हो उसको तलवार देकर लड़ाई में भेजना क्या बुद्धिमानी है?

मैं तो समझता हूँ कि वर्तमान कलह है मानवता के विधान और जनतंत्र के विधान में! इस कलह को मिटाये बिना न तो धर्मोपदेश काम करेगा न वेदभाष्य!! इस कलह को तभी मिटाया जा सकता है जब हम अपने-पराये की पहचान सीख लेंगे—ऋषि की राजनीति समझ लेंगे और निष्पक्ष-न्याय पर हमारा कार्य-क्रम आधारित होगा। अन्यथा "कस्यस्वित् धनम्" का अर्थ अनधिकारी पापियों के ही पक्ष में जायेगा, वही आज के प्रजापालक या प्रजापति हैं! परमात्मा नहीं!!

तू फंस गया उस जाल, जो कुत्ता बिछा रहा था।
मरी हड्डी चबा-चबार, खून अपना वहा रहा था।। ※

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक ऐतिहासिक षड्यंत्र

[श्री डा० सूर्यदेव शर्मा विद्यावाचस्पति एम० ए०, डी० लिट्०]

भारत के लिये ब्रिटिश शासन आर्थिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से तो एक शोषण-शाप था ही, ऐतिहासिक दृष्टि से भी वह एक भयंकर अभिशाप था। "Divide and Rule" (फूट डालो और राज्य करो) की अंग्रेजी राजनीति भारत में उन्होंने पूर्णतया सफल करके दिखा दी। इसे एक भयंकर षड्यंत्र ही समझिये कि ईस्ट इंडिया कम्पनी के समय से ही अंग्रेज लेखकों ने भारत में फूट डालने के लिए लिखना आरम्भ कर दिया कि भारत के उत्तरी भाग में निवास करने वाले तो उन आर्यों की सन्तान हैं जो मध्य एशिया की ओर से यहाँ आये थे—वे भारत के असली निवासी नहीं—उन्होंने यहाँ के मूल निवासी कोल, भील, संथाल और द्राविड़ जातियों को पराजित कर और मारकर दक्षिण की ओर भगा दिया और स्वयं उत्तरी भारत पर अधिकार जमा बैठे। इस प्रकार उत्तर भारत के आर्य लोग दक्षिण भारत के द्रविड़ लोगों से नितान्त भिन्न हैं—पूर्णतया पृथक् हैं। अंग्रेजों का यह षड्यंत्र पूर्णतः सफल हुआ और दक्षिण के द्रविड़ जाति के लोग अपने को उत्तर के आर्यों से बिलकुल पृथक् समझ बैठे—वे राम के स्थान पर रावण को अपना प्राचीन आदर्श महापुरुष मानने लगे, रामायण और गीता को भस्मसात् करने लगे; आर्य संस्कृति से द्रविड़ संस्कृति को पृथक् बताने, समझने लगे......इत्यादि। परन्तु बाद के ऐतिहासिक अनुसन्धानों ने उस अंग्रेजी षड्यन्त्र का भंडाफोड़ कर दिया।

(१) द्रविड़ (तमिल) के महान् लेखक श्री शुद्धानन्द भारती ने स्वयं लिखा है कि..."द्रविड़ मुन्नेत्र कजगम के काली कमीज वाले लोग संस्कृत ग्रन्थों को जलाते हैं, रामायण के स्थान पर 'कीमायण' रचकर रावण को अपना पूर्वज महान् द्रविड़ राजा मानते हैं—उनकी मान्यता है कि हिरण्यकश्यप द्रविड़ था—मनुस्मृति को जलाते हैं—ईश्वर,वेद को नहीं मानते। उनके विचार में 'ईश्वर का अर्थ' है जातिवाद = दासता। परन्तु मेरे [शुद्धानन्द भारती के] विचार में दोनों [आर्य तथा द्रविड़] संस्कृतियाँ एक हैं—राम जन्मे उत्तर में बसे दक्षिण में; वालमीकि ने राम गाथा उत्तर में गाई, कम्बन ने दक्षिण में; गीता उत्तर में कुरुक्षेत्र में बनी, भाष्य किया दक्षिण के शंकर, रामानुज और माध्वाचार्य ने; वेद उत्तर में फैले, भाष्य किया दक्षिण के विजयनगर में बैठकर विद्यारण्य और सायणाचार्य ने...तमिल की प्राचीन राजधानी कवाटपुर भव्य नगर था। वाल्मीकि ने "कवाटं पाण्डयानां" लिखा है। तमिल ऋषि मणिक्क वाचकर ने कहा है, "प्रभु ! तुम आर्य भी हो, तमिल भी हो"। तमिल कोष के पृष्ठ २४४ पर आर्य का अर्थ दिया गया है, आर्य=आर्यावर्त का निवासी, भद्र, सम्भ्रान्त, गुरु, द्रष्टा, श्रेष्ठ, विद्वान्, आचार्य ! द्रविड़ भाषायें संस्कृत के बिना एक कदम नहीं चल सकतीं।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) तमिल संस्कृति के आदि प्रवर्तक तो आर्य ऋषि अगस्त्यमुनि थे जिन्होंने उत्तर से जाकर पोदिकै पर्वत पर वाणतीर्थ के पास अपना आश्रम बनाया था। उन्होंने ही (जैसे पाणिनि ने संस्कृत को) तमिल भाषा को एक व्यवस्थित रूप दिया था। उसका प्रथम व्याकरण रचा जिसे "अगस्त्यम" कहते हैं। ग्रन्थलिपि का आविष्कार किया।

इस प्रकार अगस्त्य ऋषि को **"तमिल संस्कृति का पिता"** [Father of Tamil Culture] माना जाता है और यह सर्वथा उपयुक्त है।

इन्हीं अगस्त्य ऋषि ने पहले हिमालय में केदारनाथ के पास महान् तप किया था, वहाँ उनके नाम का "अगस्त्य-आश्रम" अब तक विद्यमान है जो "अगस्त्यपीठ" कहा जाता है। इन उत्तर हिमालय के वासी अगस्त्य ऋषि को प्रेरणा कैसे कहाँ पर मिली जिससे उन्होंने दक्षिण में जाकर एक संस्कृति तथा तमिल भाषा को जन्म दिया और उसका आदि व्याकरण रचा। यह एक पृथक् लेख का विषय है जिस पर पुनः कभी लिखा जायगा।

(३) अगस्त्य ऋषि दक्षिण में चन्दन-पर्वत [मलय गिरि] पर रहे—उनके १२ ब्राह्मण शिष्यों ने द्रविड़ सुन्दरियों से विवाह कर लिये—अगस्त्य ने स्वयं विदर्भ राजकन्या लोपामुद्रा से विवाह किया जिससे "सिद्ध" नाम का प्रसिद्ध चिकित्सक पुत्र उत्पन्न हुआ। ऋषि के शिष्यों में सर्व प्रसिद्ध था तृणधूमाग्नि, जिसने "तोलक वियम" की रचना की जिसमें १६१२ सूत्र है जिनमें समस्त तमिल संस्कृति का विधान है। उसमें भाषा, व्याकरण, साहित्य, छन्द, विवाह पद्धति, कामकला, स्थापत्य, युद्ध, राजनीति, धर्मशास्त्र आदि सबका अति संक्षिप्त वर्णन है।

(४) इसी कारण से लोकमान्य तिलक ने सन् १९१५ में लखनऊ कांग्रेस में कहा था, "आर्य और द्रविड़ में कोई अन्तर नहीं—उत्तर में भी नाटे काले लोग हैं, दक्षिण में भी लम्बे गोरे लोग हैं—हम सब भारतीय एक हैं—संस्कृत भाषा और संस्कृति हमको बाँधती है [Politics divides, Culture unites]

(५) पांडुचेरी आश्रम में योगी अरविन्द ने भी एक बार कहा था, "दक्षिण के ब्राह्मणों में उत्तर के आर्यों के चेहरे मिलते हैं और तमिल भाषा में संस्कृत के सैकड़ों-सहस्रों शब्द हैं।"

(६) "तिरु कुरल" महान् ग्रन्थ के रचयिता श्री तिरुवल्लुवर उत्तरे दक्षिण दोनों संस्कृतियों के समन्वयरूप थे। उनके पिता उत्तर के ब्राह्मण "भगवान्" और माता तमिल हरिजन कन्या "आदि" थीं। "तिरु कुरल" में गीता, उपनिषद, मनुस्मृति, चाणक्य आदि के समस्त विचारों का समन्वय है।

इस प्रकार के अन्य अनेक प्रमाण दिये जा सकते हैं जिनसे पूर्णतया सिद्ध होता है कि उत्तर भारत के आर्य और दक्षिण भारत के द्रविड़ एक ही जाति के लोग हैं—दोनों की संस्कृति एक है और अंग्रेजों का षड्यंत्र असत्य, निराधार था। इसलिये

—भौगोलिक परिस्थिति से रंगभेद होने पर भी, आवाज दो हम एक हैं।
एक जाति, एक संस्कृति, रूप यद्यपि अनेक हैं॥
एक भारत माँ हमारी, हम उसी की टेक हैं।
आर्य ऋषियों की अमर सन्तान हम सब नेक हैं॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

—दुर्गाशंकर महिमवत् सत्यार्थी

ईश्बर से इन्कार क्यों ?

कहा जाता है कि वेद ईश्वरीय ग्रंथ है, उसे ईश्वर ने प्रकाशित किया है और उसमें इस सम्पूर्ण सष्टि के लोगों के जीने और भलीभाँति जीने के लिये पथ प्रदर्शन है। परन्तु प्रश्न तो यह उठता है कि ईश्वर है किस चिड़िया का नाम ? वह होता ही कहां है ? और जब वह होता ही नहीं तो वह किसी ग्रंथ का प्रकाशन भला कैसे करेगा ? यह है वह बात जो वेद के सम्बन्ध में कुछ भी सुन कर या पढ़कर आजकल के "शिक्षित" मस्तिष्क में गूंज उठती है—और फिर बस ! दैट्स आल ! वह उस के आगे कोई भी बात नहीं सुनना चाहता। फिर आप लाख चिल्लाते रहिए कि भाई सुनो तो ! हमारे पास तुम्हारे इस प्रश्न का उत्तर है—और परब्रह्म परमेश्वर की सौगंध ! एकदम सम्यक् उत्तर है-किन्तु वह आपकी बात नहीं सुनता। "शिक्षित" है न ! फिर कोई "शिक्षित" भला किसी "अशिक्षित" की बात किस प्रकार सुन सकता है ! "शिक्षा" का ठेका जब उसी के जैसे लोगों ने ले रखा हो, तो आप उसे क्या दे सकते हैं ? वह माडर्न है, आप दकियानूसी हैं, वह प्रगतिशील है, आप अप्रगतिशील हैं, वह आधुनिक विचारों का है, आप पुराने विचारों के हैं। भला पुराने विचारों वाले "नये विचारों वालों" को क्या दे सकते हैं !!!

यह है वह दम्भ, जिसे हम आज सच्चाई की तराजू पर तोलने बैठे हैं। प्रश्न यह है कि क्या ये "शिक्षित" वास्तव में "शिक्षित" ही हैं ? ये "माडर्न" वास्तव में "माडर्न" ही हैं ? ये "प्रगतिशील" वास्तव में "प्रगतिशील" ही हैं ? और ये "आधुनिक विचारों वाले" वास्तव में "आधुनिक विचारों वाले" ही हैं ? विचार विमर्श निर्णय देता है कि नहीं, ऐसी बात कदापि नहीं है। यह केवल इनका दम्भ है, इनका अपने मुंह मियाँ मिट्ठू बनना है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर का अस्तित्व इतना बड़ा यथार्थ है, जिससे बड़ा यथार्थ कोई भी नहीं। फिर भी इन्हें ईश्वर से इन्कार है। प्रश्न उठता है : क्यों ? इन्हें ईश्वर से इन्कार क्यों है ? क्या इनके पास सचमुच ही इस बात के कोई अकाट्य प्रमाण एकत्रित हो गये हैं कि ईश्वर नहीं है, अथवा इसके पीछे कोई और बात कार्य कर रही है ?

इतिहास पढ़ने पर पता चलता है कि ईश्वर से इन्कार जब-जब भी किया गया है, इसके पीछे मुख्य कारण विशेषत: प्रतिशोध ही रहा है।

हिन्दुस्तान में ईश्वर की सत्ता से इन्कार करने वाला सर्वप्रथम व्यक्ति चार्वाक है। यही व्यक्ति है जिसने इतिहास में सर्वप्रथम ईश्वर से इन्कार पर एक सम्पूर्ण अभियान का संचालन किया था। इसके पीछे यही प्रतिशोध था।

इतिहास के मध्यकालीन अंधकार युग में इस व्यक्ति का जन्म हुआ था। यह वस्तुत: एक राजा था, जिसने अपने राज्य में एक विशाल यज्ञ का आयोजन किया। मध्यकालीन पोपों ने उस यज्ञ में तत्कालीन गंदी रीतियों के अनुसार इससे कहा कि यज्ञ "सम्पन्न" करने के लिये यह अपनी पत्नी—अपनी रानी का अश्व से सहवास कराये। रानी चीखी चिल्लाई कि यह अमानुषिक क्रिया है। किन्तु उसने उसकी पुकार पर कोई ध्यान नहीं दिया और मध्यकालीन पोपों के निर्देशानुसार उसे अश्व से सहवास करने पर विवश कर दिया। रानी मर गई। तब इसकी आंखें खुलीं। तब से वह विरक्त होकर राजपाट छोड़कर यह प्रचार करने लगा कि धर्म, ईश्वर, पर-लोक—सब बकवास हैं। इन्हें मानना छोड़ दो, और "बुद्धिवादी" दृष्टिकोण से जो जो में आये,जिसमें आनन्द आये वही कार्य करने लग जाओ। यह था चार्वाक की "बोध-प्राप्ति" का इतिहास।

देखा जा जकता है कि इसके पीछे केवल विशुद्ध प्रतिशोध की भावना थी। और वह भी ऐसी अंधी भावना कि इसे अपने वास्तविक प्रतिशोध-पात्र को पहचानने की भी समझ नहीं थी। उसकी पत्नी को अश्व से सहवास करने पर विवश करवाया पोपों ने, और यह बिगड़ बैठा ईश्वर पर ! "बुद्धिवादियों"का यह प्रथम आचार्य था ! ! ! यदि 'बुद्धि" की ऐसी अवस्था न होती तो यह पहले ही क्यों न समझा कि घोड़े से सहवास कराने पर उसकी पत्नी मरेगी नहीं तो क्या जीवित रहेगी ? ऐसे-ऐसे मूर्ख आचार्य कहलाते हैं !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर से इन्कार के पीछे प्रतिशोध एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्त्व है, इस बात के कुछ और प्रमाण हम इतिहास से यहाँ उद्धृत करेंगे।

आधुनिक युग में विज्ञान का विकास जब प्रारंभ हुआ तो हमारे ईसाई बन्धुओं ने विज्ञान की हर बात को झुठलाना प्रारंभ कर दिया, क्योंकि उनकी समझ के अनुसार वह बात बाइबिल की प्रस्थापनाओं से टकराती थी। प्रसंगवश यहाँ हम एक उदाहरण प्रस्तुत करने का लोभ संवरण नहीं कर पा रहे। पाठक ध्यान दें—

"इतिहास के वे पन्ने पढ़ते हुए आज भी रोंगटे खड़े हो जाते हैं और दानवता लज्जा से सिर नीचा कर लेती है, जिनमें ईसाइयों द्वारा हजारों विद्वानों तथा वैज्ञानिकों को नाना प्रकार की यन्त्रणायें देने, उन्हें जीवित जलाने, उन्हें जहर के प्याले पिलाने तथा उन्हें भूखे शेरों के सम्मुख फेंक देने का बीभत्स वर्णन है। न जाने कितने ज्ञान-विज्ञान सम्बन्धी अमूल्य ग्रन्थों को उस समय ईसाइयों द्वारा अग्नि की भेंट चढ़ा दिया गया। गैलीलियो ऐसे ही अभागे विद्वानों में से एक थे, जिन पर इन ईसा-भक्तों की क्रूर दृष्टि पड़ी। इतना ही नहीं. उस समय विज्ञान के बढ़ते हुए प्रभाव को देखकर ईसाई धर्म के सन्तों ने "ईसाई धर्म खतरे में" का नारा लगाया और वैज्ञानिकों के विरोध में एक भयंकर आन्दोलन खड़ा करने की चेष्टा की।"[१]

हमारा उद्देश्य यहाँ किसी मत-विशेष पर आक्षेप नहीं, प्रत्युत ऐतिहासिक तथ्यों को समक्ष लाना मात्र है।

हर क्रिया की प्रतिक्रिया होती है। जब हमारे ईसाई बंधुओं ने हजारों विद्वानों और वैज्ञानिकों के साथ यह दुर्व्यवहार करना प्रारंभ किया तो उनकी ओर से प्रत्युत्तर में ईसाई मत पर आक्षेप किया जाना भी एकदम अपरिहार्य था। उन्होंने ईसाई मत पर आक्षेप वर्षा करनी प्रारंभ कर दी। ईसाई बंधुओं ने विज्ञान की हर बात का विरोध करना प्रारंभ कर दिया। फलतः वैज्ञानिक भी कमर कसकर उठ खड़े हुए। विज्ञान की हर बात का विरोध करना ईसाइयों का मुख्य कार्य हो गया और ईसाई मत की हर बात का विरोध करना वैज्ञानिकों का मुख्य कार्य हो गया। ईसाइयों में बाइबिल को ईश्वरीय

---

१. ज्ञान विज्ञान का शत्रु ईसाई मत : प्रकाशक : जनज्ञान-प्रकाशन, दिल्ली-५ (पृ० ६)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग्रंथ माना जाता है। फलतः वैज्ञानिकों ने बाइबिल की ओर अपने आक्रमण का रुख मोड़ दिया। उन्होंने देखा कि बाइबिल उनके कार्य में बाधक बन रही है। उन्होंने बाइबिल की हर मान्यता को जड़ से उखाड़ना प्रारंभ कर दिया।

विज्ञान का प्रचार एवं प्रसार करते हुए वैज्ञानिकों ने देखा कि हर प्रकार का "धर्म" उनके रास्ते में आकर रुकावट बन रहा है, उन्हें पनपने नहीं दे रहा है, फलतः उन्होंने हर प्रकार के धर्म का विरोध करना अपने अभियान का मुख्य कार्य बना लिया, और चूँकि हर प्रकार का 'धर्म' ईश्वरवाद पर ही आधारित था, अतएव ईश्वरवाद का, फ़लतः ईश्वरास्तित्व का विरोध करना भी उन्होंने अभियान का प्रमुख ध्येय बना लिया।

यह है वह दूसरा ऐतिहासिक घटनाक्रम, जिससे नास्तिकता को बढ़ावा मिला। यह स्पष्ट है कि इसके पीछे भी प्रतिक्रियात्मक प्रतिशोध ही है। प्रतिशोध की आग में जलते हुए ईश्वरवाद के विरोधी यह नहीं सोच सके कि इन तथाकथित ईश्वरवादियों के विज्ञान-विरोध के बावजूद विज्ञान ईश्वरसमर्थित हो सकता है, ईश्वरप्रदत्त हो सकता है। प्रतिशोध लोगों को ऐसा ही अंधा कर दिया करता है। फिर वेद इनके समक्ष था भी तो नहीं, जो वे वेद का विज्ञान-सम्मत पक्ष देखकर ईश्वर का विरोध छोड़ सकते। कालान्तर में जब वेद उनके समक्ष आया भी तो प्रतिशोध की घिनौनी आग में जलते हुए वे ठंढे मस्तिष्क से उसका अध्ययन नहीं कर सके। उसके सत्यत्व का अनुभव नहीं कर सके।

ईश्वर से इन्कार के पीछे **प्रतिशोध ही** मुख्य तत्त्व है, हमारी इस प्रस्थापना के समर्थन में नास्तिकता के इतिहास के तीसरे दौर को भी खड़ा करना उचित होगा।

नास्तिकता के इतिहास का तीसरा दौर उस समय से प्रारंभ होता है, जब कार्ल मार्क्स ने ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार किया और इस प्रकार अपने दर्शन कम्युनिज्म को नास्तिकता की आधार-शिला पर खड़ा किया। काल मार्क्स ने ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार क्यों किया, इसे समझने के लिये यह समझना अनिवार्य है कि कम्युनिज्म का मूल उद्देश्य—कम्युनिज्म का ककहरा—क्या है ?

कम्युनिज्म का ककहरा है—आर्थिक क्रांति! कम्युनिज्म के प्रणेता कार्ल मार्क्स ने देखा कि मजदूरों का जीवन अत्यंत अभावमय

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एवं कष्टमय है। उनके अभाव, उनके कष्टों को दूर करने के लिए केवल अर्थ एक साधन है—यह उसे दिखाई दिया। फलतः उसने अर्थ को साधन के स्थान से उठाकर **साध्य** बना दिया और सम्पूर्ण मानव इतिहास की व्याख्या आर्थिक दृष्टिकोण से करनी प्रारंभ कर दी। उसने कहा कि अर्थ ही वह एकमात्र तत्त्व है 'जो सारे मानवीय जीवन के इतिहास में ओतप्रोत है और सारा मानव इतिहास मूलतः अर्थ के आस-पास ही घूमता है। हर युग में मनुष्यों ने अर्थ प्राप्ति के लिये ही सारी कोशिशें की हैं और इस प्रकार सारे मानव प्रयत्नों का ककहरा अर्थ ही है। कार्ल मार्क्स यह भूल गया कि अर्थ प्राप्ति के प्रयत्न मानव किसलिए करता है। वह सुख के साधनों को जुटाने के लिये ही अर्थ प्राप्ति के प्रयत्न करता है। फलतः सारे मानव प्रयत्नों का ककहरा वास्तव में अर्थ नहीं, सुख है। अर्थ तो केवल एक **साधन** है साध्य वस्तु है सुख, जिसके लिए अर्थ की आवश्यकता पड़ती है।

कहना नहीं होगा कि मार्क्स ने अर्थ को **साधन कोटि से साध्य कोटि** में बिठाकर गलती की। मानव प्रयत्नों की दिशा यहाँ से बदल गई। वह साध्य की उपेक्षा करके साधन प्राप्ति के चक्र में पड़ गया और फलतः साध्य उससे कितना दूर होते चला गया, यह वर्त्तमान समाज में स्पष्ट दिखाई दे रहा है।

अर्थ को साधन से उठाकर **साध्य** बना देना सिद्धान्त तो सरल था, किन्तु जब इसे व्यावहारिक रूप प्रदान किया जाने लगा तो मार्क्स के मार्ग में अनेकों कठिनाइयां उपस्थित होने लगीं।

सबसे बड़ी कठिनाई जो मार्क्स के मार्ग में आई—वह थी धर्म। जिस धर्म के कारण लोग आसानी से अपना राजपाट तक छोड़ कर संन्यासी हो जाते थे, जिस धर्म के कारण वे लगातार कई दिनों तक खाना-पीना छोड़कर व्रतोपवास आदि करते रहते थे, उसके रहते हुए अर्थ को साध्य बनाया जा सकना पूरी तरह बीरबल की खिचड़ी जैसी बात थी। अर्थ प्राप्ति के उद्देश्य में उन लोगों को कैसे लगाया जाये, जो धर्म के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने पर तुले रहते हों। मार्क्स के समक्ष यह बड़ी विकट समस्या थी। उसके सिद्धान्तों **को धर्म के कारण** कोई भी व्यक्ति मान्यता प्रदान नहीं कर रहा था। गिने-चुने औंधी खोपड़ी के लोगों द्वारा मान्यता मिल जाने से ही तो कार्य नहीं चल सकता था। धर्म मार्क्स के रास्ते

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का सबसे बड़ी दीवार थी। फलतः नास्तिकता के इतिहास का तीसरा दौर आचरण में आया और मार्क्स ने अपने सिद्धान्तों के अटल बाधक धर्म से प्रतिशोध लेना प्रारंभ कर दिया।

यह था तीसरा दौर और इसके मूल में भी था, वही प्रतिशोध !

प्रतिशोध !

प्रतिशोध !!

और, प्रतिशोध !!!

यही है नास्तिकता के सारे इतिहास का ककहरा। प्रतिशोध से ग्रस्त होकर ही सदैव धर्म से इन्कार किया गया और फलतः प्रतिशोध से ग्रस्त होकर ही सदैव ईश्वर से इन्कार किया गया।

ईश्वर से इन्कार करने वाले बहुत से तर्क लेकर मैदान में आते हैं किन्तु कहना नहीं होगा कि उनके ये सारे तर्क एकदम खोखले हुआ करते हैं। उनके तर्कों का धार्मिक लोगों द्वारा सदैव विस्तृत एवं विशद उत्तर दिया जाता रहा है, फिर भी नास्तिक अपनी नास्तिकता छोड़ने के लिए तैयार नहीं। आस्तिक जगत् इस पर आश्चर्यचकित है कि उसके द्वारा बार-बार उत्तर दे दिए जाने पर भी ये मुट्ठी भर नास्तिक अपना दुराग्रह क्यों नहीं छोड़ते ? वह इसका उत्तर अपने अन्दर ही खोजने की चेष्टा करता है। वह समझता है कि उसके अन्दर कहीं कोई खामी होनी चाहिये, तभी तो नास्तिक वर्ग इन एकदम स्पष्ट और सीधे-सादे सरल उत्तरों को पाकर भी संतुष्ट नहीं होता। आस्तिक अपने सीधेपन के कारण यह भूल कर बैठते हैं कि उन्हें नास्तिकों के इस असन्तोष का कारण केवल अपने यहाँ ही नहीं, नास्तिकों के यहा भी खोजना चाहिये। सो, यह है इसका सही उत्तर। नास्तिक ईश्वर के अस्तित्व से इन्कार करने के लिये तर्क नहीं, बहाने खोजते रहते हैं, इसलिए कि इन्हें उन प्रश्नों के उत्तर चाहियें ही नहीं, वे उन उत्तरों को पाकर भी मौन नहीं रहते, प्रत्युत अपने 'तर्कों' और वस्तुतः बहानों का ढोल पीटते रहते हैं।

१२ अप्रैल, १९७५ को
सर्वत्र आर्य समाज शताब्दी
समारोह धूमधाम से मनाएं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक सरल व्यंग्य गीत

—निर्भय हाथरसी

जय हिन्दी जय देवनागरी

बाबुल, बीरन, बालमा, कोई सुने न बात।
माँ के सर मौसी चढ़े, बेटा करि रहे घात ।। १ ।।
बहुगुणा के शीश पर, अकबरअली सिहात।
देवनागरी-गात पर, 'उर-दुइ' मारत लात ।। २ ।।
ओ संस्कृति के पहरेदारो !
गद्दी-गद्दों की सरकारो !
भाषाओं का भेद मिटाना 'कम्पलसरी' करो।
य० पी० में उर्दू का पढ़ाना, कम्पलसरी करो।
× × ×
'अ' की जगह पर 'अलिफ' बनाओ,
'अनादि' पर 'अल्लाह' बिठाओ,
सीधी हिन्दी को न चलाओ,
उल्टी उर्दू को लिखवाओ,
सीधे को उल्टी राह चलाना, कम्पलसरी करो।
यू०पी० में उर्दू का पढ़ाना, कम्पलसरी करो। ओ संस्कृति के पहरेदारो—
× × ×
अपनों पर आँखें चमकाओ,
पार-पड़ौसी को दाँत दिखाओ,
अपने घर की ज्योति बुझाओ,
मरे-मजार, चिराग जलाओ।
'हुक्म' के आगे पूंछ हिलाना, कम्पलसरी करो।
यू०पी० में उर्दू का पढ़ाना, कम्पलसरी करो। ओ संस्कृति के पहरेदारो—
× × ×
'हुआ-हुआ' का शोर मचाकर,
कौओं का हौआ दिखला कर,
हंसों के वंश को मिटाकर,
सरस्वती मुर्ग पर चढ़ा कर,
मुर्गे के आगे शीश झुकाना, कम्पलसरी करो।
यू०पी० में उर्दू का पढ़ाना, कम्पलसरी करो। ओ संस्कृति के पहरेदारो—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

× × ×

हिन्दी भी कोई भाषा है !
केवल स्वप्निल अभिलाषा है।
हिन्दी से भय अच्छा-खासा है—
उर्दू से वोटों की आशा है।
नेताओं का वोट पटाना, कम्पलसरी करो।
यू०पी० में उर्दू का पढ़ाना, कम्पलसरी करो। ओ संस्कृति के पहरेदारो—

× × ×

सीख लिया भाई सीख लिया

आंख दिखाने वालों ने भी, दांत दिखाना सीख लिया।
आंसू बहाकर पेट की जलती ज्वाल बुझाना सीख लिया।
ऐसे-वैसे-जैसे-तैसे निभना निभाना सीख लिया।
पेट के गेट में भाषण के भण्डार छुपाना सीख लिया।
इंदिरा माई के राज में कम खाना, गम खाना सीख लिया।

× × ×

जीवन दीप जलाते हैं, महँगाई के तूफानों पर।
कब तक अत्याचार करेगी, 'शम्मा' इन परवानों पर ?
भूख ने हमला बोल दिया, भूखे-सूखे इन्सानों पर।
सभ्य बनाये जाते हैं हम राशन की दूकानों पर।
शिक्षित हो कि अशिक्षित सबने, 'लाइन' लगाना सीख लिया—

× × ×

जंगल के शासन में गीदड़ के हाथों अनुशासन है।
सिंह बने चपरासी, बिल्ली के नीचे सिंहासन है।
हर उल्लू पर इन्द्रासन है, हर अजगर पर आसन है।
हर भूखे पर राशन है, राशन से रोता बासन है।
उल्लू के बच्चों ने दाने बिन मुर्गी का फँसाना सीख लिया—

× × ×

पग-पग बढ़ती महंगाई ने, ऐसा पांव पसार लिया।
राम का बेटा मार दिया, रहमान का बाप गुजार दिया।
बिन पैसे के धन्वन्तरि ने रोगी को दुत्कार दिया।
भँवर भरी मँझधारों में नाविक ने हमें उतार दिया।
निर्धन के घर चाहे जब 'जमराज' ने आना सीख लिया—

× × ×

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सबकी पाकिट साफ करें, यों नीयत साफ हमारी है।
सिर्फ गुदगुदी गद्दी के कारण केवल गद्दारी है।
नार असरकारी है कुछ, तो कुछ रुतबा सरकारी है।
'नोट-वोट-लूटखसोटम्', आदत की लाचारी है।
पद की बदौलत पिचके-पिचके गाल फुलाना सीख लिया—

× × ×

शूलों के स्वागत में पथ पर फूल बिछाना आता है।
निर्दोषों पर लाठी-गोली-बेंत जमाना आता है।
उँगली के एक इशारे पर, जनता को नचाना आता है।
जनता अगर विद्रोह करे तो पुलिस बुलाना आता है।
पुलिस अगर अकड़े तो उस पर फौज चढ़ाना सीख लिया—

× × ×

बन्द 'बाथरूमों' में नंगेबदन नहाने की आदत है।
गली-महल्लों-चौराहों पर सीटी बजाने की आदत है।
किसी के पीछे, किसी के आगे, आने-जाने की आदत है।
बीच सड़क पर 'बैण्ड' की धुन पर, नाच दिखाने की आदत है।
रोते हैं घर वाले तो क्या ? बाहर तो हँसना सीख लिया—

× × ×

अपनी धरती दे-देकर, दुश्मन का मान किया करते।
कर्म—'गोडसे' शर्म से गान्धी बाबा का ध्यान किया करते।
बाहर जीवन देते हैं, घर में विषपान किया करते।
चाहे न चाहे परन्तु पड़ोसी को सब कुछ दान किया करते।
कर्जे की पतवार से बेड़ा पार लगाना सीख लिया—

× × ×

खटमल खून पिये जाते हैं, फिर भी हँसना पड़ता है।
बरबादी ने घेर लिये हैं, फिर भी बसना पड़ता है।
जाल पड़े जजाल बड़े हैं, फिर भी फँसना पड़ता है।
सभी कुओं में भाँग पड़ी है, फिर भी धसना पड़ता है।
गदहों ने गीत सुनाकर सिंहों को बहकाना सीख लिया—

× × ×

बिना बात की बात, बात में बात बनाना सीख लिया।
शब्दों के आडम्बर के अम्बार उठाना सीख लिया।
'हर्रा लगे न लगे फिटकरी', रंग जमाना सीख लिया।
घर की उड़ाना सीख लिया, बेपर की उड़ाना सीख लिया—
इंदिरा माई के राज में कम खाना, गम खाना सीख लिया। □

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य समाज के सिंह, भेड़िए और भेड़ें

—बी० एन० चौबे, हैदराबाद—

अयोध्या में सिंह

आदि कवि ने अयोध्या का वर्णन करते हुए कहा है गुहा केसरिणामिव। क्या सिंह की गुहा के पास कोई वैरी आने की धृष्टता कर सकता है? अयोध्या के वैरी कदापि ध्यान में भी उस पुरी के पास फटकने की मूर्खता न करते। वनराज स्वयं अपनी श्रेष्ठता के कारण, शौर्य के कारण धाक जमा लेता है। उसे रेडियो पर भाषण देने और पत्रिकाओं में विज्ञापन देने की आवश्यकता नहीं। आर्य समाज में १८७५ से कई दशक तक इन ही धर्म प्रेमी, आत्म-बलिदानी, वीर केसरियों का बाहुल्य था। सिंह में चापलूसी, दुम हिलाने, पेट दिखाने की बीमारी नहीं होती। उसमें लालच नहीं होता। स्वयं खाता है तथा दस जीवों को भोजन पहुँचाता है। वह अपने बल को बल मानता है; अपने गर्जन से दिल दहला देता है। महाराज भर्तृहरि ने ठीक ही कहा है।

द्युति सैंहीं किं श्वा
कनकमालोपि लभते?

कुत्ते के गले में स्वर्णमाला डाल दो, क्या उसमें सिंह की द्युति आ जायेगी? नहीं, कदापि नहीं।

आर्य समाज के कुछ सिंह

आर्य समाज की स्थापना के समय ८वां नियम यह था—

इस समाज में सत्पुरुष, सदाचारी और परोपकारी सभासद् बनाये जायेंगे।

तथा २२वां नियम था—

इस समाज में प्रधानादि सब सभासदों को परस्पर प्रीतिपूर्वक, अभिमान, हठ दुराग्रह और क्रोधादि दुर्गुणों को छोड़कर उपकार और सुहृद्भाव से निर्भय होकर स्वात्मवत् सबके साथ वर्तना होगा।

२४ वां नियम अत्यावश्यक था—

जो मनुष्य इन नियमों के अनुकूल आचरण करने वाला धर्मात्मा, सदाचारी हो उसको उत्तम सभासदों में प्रविष्ट करना, इसके विपरीत को साधारण समाज में रखना और अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट को समाज से निकाल ही देना। परन्तु यह काम पक्षपात से नहीं करना, किन्तु ये दोनों कार्य श्रेष्ठ सभासदों के विचार ही से किये जायें अन्यथा नहीं।

उत्तम, साधारण तथा दुष्ट की परिभाषा नहीं की गई ऐसा नहीं कह सकते।

(१) नियमों के अनुकूलाचरण,
(२) धर्मात्मा, तथा
(३) सदाचारी होना उत्तम सभासद् होंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इसके विपरीत मार्के के शब्द हैं। ८वें नियम से मिलाकर पढ़ने से पता चलता है कि जो सत्पुरुष, सदाचारी, परोपकारी नहीं हैं वे सदस्य ही नहीं बन सकते। अतः यदि कोई धर्मात्मा नहीं है तो वह साधारण सभासद् होंगे। परन्तु वह अधर्माचारी न हो। **अत्यन्त प्रत्यक्ष दुष्ट** को निकालने का आदेश है। दुष्ट क्या है ? नियमों के विरुद्ध आचरण करने वाला दुष्ट ही है। धर्म विरुद्ध चलने वाला दुष्ट है। जो सदाचारी नहीं रहा वह दुष्ट है। महर्षि ने दो अधिक शब्द रखे हैं :—ऐसा व्यक्ति जो निष्कासित किया जाये प्रथम **अत्यन्त दुष्ट** हो अथवा द्वितीय **प्रत्यक्ष दुष्ट** हो। इन नियमों के परिपालन से आर्य समाज स्वस्थ, प्रशंसित समाज बना रहा था और आर्य सिंह उस समय कर्णधार बने रहे। इनमें से कुछ का सूक्ष्मतम नामोल्लेख आदरार्थ आवश्यक है।

श्री पं० गुरुदत्त विद्यार्थी अजमेर में ऋषि के अन्तिम दर्शन-लाभ करके आर्य बन गये थे और थोड़े ही काल में इतना अंग्रेजी भाषा में लिख गये कि प० राजपाल जी ने Wisdom of the Rishis के नाम से पं० चमूपति जी के सम्पादन में उनके संग्रहीत लेख छपवाये थे। १९ मार्च १८९० को पं० गुरुदत्त जी अत्यल्प अवस्था में चले गये, परन्तु मार्ग दर्शन करते गये। उनका कथन सत्य हुआ कि महर्षि के जीवन को अपने जीवन में ढाल लिया।

पं० लेखराम जी आर्य मुसाफिर के नाम से सुप्रसिद्ध हैं। ४ मार्च १८९७ को उन महान् आत्मा को शहीद किया गया जो कहते थे "**जानते नहीं हो मैं जान हथेली पर लिए फिरता हू।**" महर्षि के परम भक्त, कादियानी के प्रत्येक लेख का उत्तर देने वाले, श्रद्धानन्द जी द्वारा दिए गये कुछ रुपये तुरन्त वापस करने वाले धीर, वीर यह कहते मरे थे **आर्य समाज से लेख का काम बन्द नहीं होना चाहिए।**

पं० तुलसीराम जी को जैनी भाइयों ने १९०३ में आँखों में मिर्च डालकर असहाय करके मार डाला था। २६ वर्ष की आयु में २० जनवरी १९२३ को वीर रामचन्द्र के अछूतोद्धार में कार्य में रत रहने के कारण प्राणाहुति देनी पड़ी। २३ दिसम्बर १९२६ श्रद्धानन्द बलिदान दिवस प्रसिद्ध है। अगस्त १८९८ में आपने व्रत लिया कि गुरुकुल कांगड़ी के स्थापनार्थ तीस हजार रुपया इकट्ठा करके ही घर में पैर रखेंगे, अन्यथा नहीं और इस प्रकार गुरुकुल विश्वविद्यालय की नींव रखी। ४ अप्रैल १९१९ को दिल्ली की जामा मस्जिद में वेदमन्त्र का पाठ करके उस समय के एकता के वातावरण को सिद्ध किया। अमृतसर में आप ही ने काँग्रेस अधिवेशन का प्रबन्ध किया था। १९२१ में बल तथा धोखे से मुसलमान बनाए गये व्यक्तियों को शुद्ध किया। १९२३ ई० में हिन्दू शुद्धि सभा की स्थापना हुई जिसके आप प्रधान बनाये गए। अब्दुर्रशीद नामी व्यक्ति ने असगरी बेगम को शुद्ध करने के सिलसिले में स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को शहीद कर दिया।

अनेक नाम हैं जिनका परिगणन भी सुदीर्घ सूची बन जायेगी। अतः इस भाग को यहाँ समाप्त किया जाता है।

आर्य समाज के भेड़िये

वृक शब्द वेद तथा लौकिक भाषा में भेड़िये के लिए प्रसिद्ध है। ऋग्वेद (१।११६।१४) वृक के मुख से वर्तिका (चिरौटे) को छुड़ाने का आदेश है। यही (१।११७।१६) तथा (८।६७।१४) (१।११२।८) आदि अनेक स्थल पर आया है। व्रश्चू छेदने धातु से वृक तथा व्रश्चिक शब्द निष्पन्न होते हैं। वृक का अर्थ मॉनियर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विलियम्स महोदय (Tearer) फाड़ डालने वाले बताते हैं। व्रश्चिक तथा वृक नाम ऐसे जीव को दिए गये हैं जो अत्यन्त दुष्ट और प्रत्यक्ष दुष्ट हैं। अकारण कष्ट देना ही उनकी प्रकृति है। यह प्रकृति बदली नहीं जा सकती।

आर्य समाज के भेड़िये :—

(१) आर्य समाज के नियमों के प्रतिकूल चलते हैं।

(२) सदाचारी नहीं हैं।

(३) अत्यन्त दुष्ट हैं तथा

(४) प्रत्यक्ष दुष्ट हैं।

(५) धर्म के ठेकेदार बनते हुए धर्म के विपरीत चलते हैं।

(६) स्वधया चरन्ति अर्थात् मनमानी करना उनका अटल जीवन नियम है।

(७) असुरा: सन्ति अर्थात् केवल भौतिक जीवन के भोग-विलास उनको भाते हैं। समाज के पदों की विशेष लोलुपता, धन संग्रह, राजनैतिक स्वार्थ उनका स्पष्टाचरण है।

महाभारत में कणिक ने धृतराष्ट्र को कूटनीति का पाठ पढ़ाया है जो आदि-पर्व (१३९।१९) में कहा है :—

अग्न्याधानेन यज्ञेन काषायेण जटाजिनैः।
लोकान् विश्वासयित्वैव ततो लुम्पेद् यथा वृकः॥

अर्थात् (१) अग्निहोत्र, यज्ञ, सन्यासी के काषायवस्त्र, जटा, मृगचर्म धारण करके (२) जनता में अपना विश्वास पैदा कर ले फिर (३) अवसर देखकर भेड़िये की तरह शत्रु का नाश कर डाले। १९७४ ई० में अमरीका के कुछ गुप्तचर रामकृष्ण की सेवा के बहाने रामकृष्ण(हलधर)के उद्देश्य के विपरीत समाज को अधर्म की ओर ढकेल रहे हैं तथा कुछ सन्यासी बनकर आर्य समाज में कार्ल मार्क्स का प्रचार कर रहे हैं। ये सज्जन आर्य समाज को हवन सन्ध्या कम्पनी कहते हैं। वे भूल जाते हैं कि विधान के अनुसार कम्पनी धनार्जन के लिए ही बनाई जाती हैं और आर्य समाज धन केवल परोपकार पर व्यय करने के हेतु अर्जित करता है। संचय के लिए नहीं। हवन और संध्या केवल साधन हैं। धन संचय मन्दिरों में और भी अधिक विनाशकारी बन जाता है। सोमनाथ के मन्दिर पर क्या बीती ? मथुरा के बन्द तथा खुले मन्दिरों का इतिहास क्या कहता है ? काशी विश्वनाथ मन्दिर का इतिहास कुछ पाठ पढ़ाता है ?

आर्य समाज में कुछ मूर्ति पूजक, कुछ मूर्ति भञ्जक, कुछ साम्यवादी, कुछ अवसरवादी इस तरह छा गये हैं कि आर्य समाज का मूल कार्य सर्वथा बन्द हो गया है। सदाचार तथा सदाचार द्वारा तेज, ओज, तपस्या और आत्मबलिदान के अपने उदाहरण से प्रचार यही तो आर्य सिंहों की विशेषता थी। आज केवल मत पेटी में कितने मत पड़ जायें कि सत्ता हमारे हाथ से जाने न पाये यह एक ही मुख्य प्रश्न रह गया है।

पंचतन्त्र में एक कथा आती है कि अन्धे सर्प द्वारा पीड़ित पक्षियों ने एक नेवले को निमन्त्रण दिया। सर्प को उसने मार डाला परन्तु पक्षियों का वंश ही मिटने लगा। स्वार्थवश आज सत्ताधारी यही कुछ कर रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋषिवर के सिद्धांत वेद सम्मत तथा समयानुकूल हैं। मिसाल के लिए अन्त्येष्टि में २० सेर घी वायु के शुद्ध करने के लिए उचित है परन्तु यह मखौल कि ४००) रुपया में आज शुद्ध इतना घी न मिलेगा और घी न मिले तो अन्त्येष्टि संस्कार न हो, अज्ञान पर आधारित है। यदि घी न मिले तो लकड़ी की मात्रा बढ़ा दी जाये। ऋषिवर भी पुनः प्रवचन में यही कहते हैं।

एक हैदराबाद के विद्वान् कहते हैं कि घी न होगा तो मिट्टी के तेल से अन्त्येष्टि न करने देंगे, उचित बात है। परन्तु उनका २० सेर घी न होने पर अन्त्येष्टि कर्म कराने से इनकार धर्म विरुद्ध है। उनका यह कथन कि विवाह संस्कार न होगा जब तक पूर्ण सामग्री तथा उनकी फीस न आ जाये और ऐसी दशा में वर-वधू एक कमरे में बन्द होकर असंस्कृत विवाह सम्बन्ध कर सकते हैं—शायद सिनेमा का प्रचार हो तो हो पर धर्म पर आधारित नहीं है। महामहोपाध्याय स्वर्गीय पं० गिरिधर शर्मा शास्त्री चतुर्वेदी ने लिखा था कि छः आने में वैदिक विवाह संस्कार हो सकता है। अनुमानतः यह पुस्तक ३५-३७ वर्ष पूर्व लिखी थी अतः आज के मूल्य पर दृष्टि रखकर कुछ अधिक व्यय होगा। परन्तु हम देखते हैं कि पौने दो लाख के चैक, सोने, हीरे, जवाहरात, मोती के गहने, वस्त्र, वर के उपहारादि पर जो सम्पत्ति अपव्यय की जाती है वह समाज सेवा पर व्यय हो तो दुनिया बदल जाये। मुझे आश्चर्य है कि कुछ आर्य विद्वान् ऋषि की मान्यताओं में भी निर्भीक परिशोधन कर डालते हैं। यह विद्वान् भी वृक ही हैं और ये अधिक भयावह हैं।

हमने धड़ल्ले से ऋषि के मन्तव्यों को बदलकर सहूलतें निकाल ली हैं। मत-मतान्तरों का इतिहास बताता है कि इसी मार्ग पर चलकर सब जनता पथभ्रष्ट की गई है। अगर समय रहते न चेते तो डर है कि जैसे मुसलमानों के इतिहास में ६० वर्ष पर ही कर्बला का विध्वंसकारी मैदान देखा गया, कहीं आर्य समाज अपने मार्ग से पदच्युत न हो जाये। दयानन्द के मार्ग पर अनुचित आक्षेप करने वाले यह तो सोच लें कि वह आप्त नहीं हैं। इकबाल का कथन युक्तियुक्त है। वह कहता है कि दो सौ गर्दभ की खोपड़ी भी एक मानव मस्तिष्क के मनन और चिन्तन की अधिकारी नहीं हो सकती—

कि अज मग्ज दो सद खर
फिक्रे इन्सानी नमी आयद् ॥

श्रीयुत पं० गुण्डेराव हरकारे ने मेरी पुस्तक **सफल जीवन** पर अपनी सम्मति देते हुए कहा है :—

अद्यतनी परिस्थितिस्तु विचित्रा। धर्मापदेष्टार औदासीन्यग्रस्ताः प्रभावः Secularism दूषिताः अन्ये अबोधोपहताः। अतः प्रत्यहं धर्मो जीर्यते। (पृष्ठ २०३ द्रष्टव्य)

अर्थात् आज की परिस्थिति विचित्र है। धर्म उपदेष्टा उदासीन बैठे हैं। सरकारी कर्मचारी सिक्यूलरिज्म की बीमारी से पीड़ित हैं। शेष जन अबोध, अज्ञानान्धकार में फँसे हैं। अतः धर्म प्रत्यक्षतया जीर्ण-शीर्ण होता जाता है।

आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है जिससे शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति हो सके। सातवें नियम में इसकी व्याख्या कर दी गई है :—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(१) सब से प्रीतिपूर्वक वर्तना चाहिए।
(२) सब से धर्मानुसार वर्तना चाहिए।
(३) सब से यथायोग्य वर्तना चाहिए।

सब के शब्दों पर विचार करो। इसमें थलचर, जलचर, नभचर सब आ गये। परमात्मा के पूरे चल जीव प्राणी मात्र से प्रेम रखना आवश्यक है। यह नहीं कि गर्दन मरोड़ कर उनको उदरस्थ कर लिया जाये।

प्रीतिपूर्वक—धर्मानुसार—यथायोग्य ने विश्वबन्धुत्व के अगाध प्रेम को नियम में बाँधकर अनाचार पर कुठाराघात कर दिया। संन्यासी का धर्म और ब्रह्मचारी तथा गृहस्थी का धर्म अलग-अलग है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य शूद्र का धर्म अलग-अलग है। आपत् धर्म अलग है। धर्मानुसार होते हुए भी यथायोग्य की तीसरी कड़ी है। इतना सुन्दर प्रतिपादन, इतना सूक्ष्म, इतना व्यापक मिल नहीं सकता।

अत्यन्त दुष्ट और प्रत्यक्ष दुष्ट का समाज से बाहर कर दिया जाना आवश्यक है। परन्तु यह द्वेषपूर्ण भावना से न हो। विद्वानों, धर्मात्मा, सदाचारियों द्वारा हो। जीसस खीस्त ने कहा है कि व्यभिचार का दोष लगाने वाला मानसिक व्यभिचार भी न करे। यह इतनी कड़ी शर्त थी कि ईसाई मत में या तो राजनैतिक आधार पर बहिष्कार किया गया है अथवा हर एक को सम्मिलित कर लिया गया है। आज आर्य समाज इसी स्थिति में है। परमात्मा इसकी रक्षा करे।

आर्य समाज की भेड़ें

जब तक भेड़ न हो कोई भेड़िया बन ही नहीं सकता। आर्य समाज में स्वाध्याय, प्रवचन की बड़ी भारी कमी हो गई है। केवल अन्धाधुन्ध चलने की परिपाटी पड़ गई है। शस्त्र तथा शास्त्र दोनों से वंचित होकर हम भेड़ियों को आवाहन देते हैं।

कोई भी मुसलमान दस वर्ष पूर्व हैदराबाद में सिक्ख बालिकाओं के अपहरण का विचार भी नहीं ला सकता था। मुसलमान, सिक्ख, हरिजन राजनैतिक मोर्चा बनने पर काफी लड़कियाँ अपहृत हुईं। अब ब्राह्मणों की बारी आई है। घर में आग लग रही है :—

संदीप्ते भवने तू कूपखनन
प्रत्युद्यमः कीदृशः।

आप के घर में अग्नि ज्वाला अब जोर से प्रदीप्त है। अब आप कूप खोदना प्रारम्भ कर रहे हैं।

जानते हो एक देवी, (सुग्रीव की पत्नी) के प्रति अनाचार से बाली को दण्ड दिया गया। मानते हो सीता की सुरक्षा के लिए लंका दहन हुआ? परिचित हो कि दुःशासन द्वारा द्रौपदी का अपमान अठारह अक्षौहिणी सेना-संहार की भूमिका और कारण बना?

भेड़ मत बनो। भेड़िया खा जायगा। शारीरिक बल, तेज, तपस्या, आत्म-बलिदान, समाज के प्रति जागरूकता, समाज के प्रत्येक व्यक्ति पर कुठाराघात अपने

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऊपर कुठाराघात समझ उससे बचाव तथा दण्ड दिलाने का यथाशक्ति प्रयत्न हर एक का कर्तव्य है।

वैदिक धर्म ने भेड़ बनने का आदेश कदापि नहीं दिया। जीवात्मा अपने क्षेत्र में उतना ही सर्वशक्तिमान् है जितना अपने क्षेत्र में परमात्मा। महर्षि दयानन्द ने भूला हुआ वैदिक पाठ और महर्षियों, ब्रह्मर्षियों द्वारा प्रतिपादित शिक्षा सुलभ बना दी। बताया तू सिंह है। तू जाग। अपनी शक्ति को पहचान। उस शक्ति का सदुपयोग कर। यह अमोघ शक्ति है।

हमारे दोनों महान् ग्रन्थ—रामायण तथा महाभारत—राम तथा कृष्ण के परमोदार कर्तव्य परायणता का पाठ पढ़ाकर प्रत्येक व्यक्ति को राम और कृष्ण बनाना चाहते हैं। रामायण सत्य इतिहास भी है, एक इतिहास भी। इनका समझ कर पाठ करो और आचरण करो। रावण का वध प्रकृति के नियम करते ही हैं। जैसे घोड़ा अपनी धूल झाड़ लेता है पृथिवी पापियों का संहार कर देती है। भीष्म, कर्ण, जयद्रथ आदि का संहार अवश्यम्भावी ही नहीं बुद्धिमान् की दृष्टि में हो चुका था। अर्जुन केवल निमित्त मात्र था।

तुम मत भूलो इन्द्र ही वज्र चलाता है तुम दधीचि के हाड बन कर वज्र को अमोघ कर दो। सामाजिक बुराई न रहेगी यदि तुम निर्णय कर लो कि बुराई न रहने दोगे।

कृष्ण की इस पुकार पर ध्यान दो :—

क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥

(भगवद्गीता २।३)

अर्थात् अर्जुन बन, परंतप बन। क्षुद्रतापूर्ण हृदय दौर्बल्य का परित्याग कर दे। खड़ा हो जा।

सफेद दाग की अचूक दवा

हमारी सुपरीक्षित आयुर्वेदिक दवा के इस्तेमाल करने से सफेद दाग का रंग ३ दिनों में बदल जाता है। और शीघ्र मिट जाते हैं। १५ दिनों में पूर्ण लाभ प्राप्त करें। हजारों रोगी मुक्त हो चुके हैं। अब तक किसी को निराश नहीं होना पड़ा है। ऐसी गुणकारी दवा रोग विवरण लिख कर एक फायल दवा मुफ्त में प्राप्त करें।

कुष्ठ आरोग्य मन्दिर (R. D.)

(५५) पो० कतरी सराय (गया)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पूरी करने आया हूं

बलिदानों की रिक्त श्रृंखला पूरी करने आया हूँ ।
रही अधूरी कविता मेरी फिर दोहराने आया हूँ ।।

(१)

प्रथम छन्द राणा प्रताप ने लिखे शब्द गोरा-बादल ।
हल्दीघाटी अमर बनाया काटा मूली सम अरिदल ।
रेवा तट की घाटी कहती दुर्गा सम दुर्गा देखी ।
जौहर जला पद्मिनी देखी वीर भूमि तीरथ देखी ।
जयमल फत्ता के बलिदानों को फिर दोहराने आया हूँ ।
बलिदानों की रिक्त श्रृंखला पूरी करने आया हूँ ।।

(२)

शिवा छत्रपति छत्रसाल गुरु तेगबहादुर सा देखा ।
बलिदानों का स्मारक क्या वीर हकीकत अनदेखा ।
लक्ष्मी दुर्गा के सम देखी, झांसी है बलिदानों की ।
शाह बहादुर जीनत देखी, आशा है अरमानों की ।
तात्या टोपे मंगल का संदेश सुनाने आया हूँ ।
बलिदानों की रिक्त श्रृंखला पूरी करने आया हूँ ।।

(३)

तिलक, गोखले, लाल-पाल, पंजाकेसरी सुल्ताना ।
बलिदानों की गाथा कहती तुमने क्या है पहिचाना ।
बिस्मिल, वीर भगतसिंह देखे, साथी इन अशफाकों सा ।
खुशीराम का पिटना कहता, रोशन पाया रोशन सा ।
शेखर चन्द्र, भगतसिंह के बलिदान सुनाने आया हूँ ।
बलिदानों की रिक्त श्रृंखला पूरी करने आया हूँ ।।

(४)

आशु, सुभाष वीर, गीता का दिया दिव्य संदेश चाहिये ।
गांधी वीर जवाहर के आदर्शों का व्यवहार चाहिये ।
राजगुरु सुखदेव दास हैं कर्णधार बलिदानों के ।
थापा, कीलर, मेजर, शैतानसिंह, आशा हैं अरमानों के ।
अब्दुल वीर हमीद, सोम शर्मा से मिलने आया हूँ ।
बलिदानों की रिक्त श्रृंखला पूरी करने आया हूँ ।।

—श्रीचन्द्र

विश्वविद्यालय, मेरठ ★

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भारतीय इतिहास के पृष्ठ

रूपान्तरकार—आनन्दप्रकाश भारद्वाज

ऐतिहासिक उपन्यासकार श्री आचार्य चतुरसेन शास्त्री द्वारा लिखित 'तलवार की नोक' का संक्षिप्त रूपान्तर

१३ जून १२९० को सत्तर वर्ष की वृद्धावस्था में जलालुद्दीन फीरोज़ सुलतान बनकर दिल्ली के तख्त पर बैठा।

१९ जुलाई १२९६ को जलालुद्दीन की मृत्यु के पश्चात् उसका भतीजा अलाउद्दीन खिलजी दिल्ली का सुलतान बना।

सन् १३०७ के बाद अलाउद्दीन ने खम्भात में एक गुलाम छोकरा एक हजार दीनार में खरीदा, जो हजार-दीनारी के नाम से पुकारा जाने लगा। अलाउद्दीन ने उसके साहस व गुणों से खुश होकर उसे सेना के एक भाग का स्वामी बना दिया। बाद में उसने उसका नाम मलिक काफूर रख दिया।

× × ×

गुजरात के राजा कर्णदेव अपनी वयस्क पुत्री राजकुमारी देवल देवी का विवाह शंकर देव से करने के लिए उसके पिता राजा रामचन्द्र देव के पास पहुँचे।

राजा रामचन्द्र देव देवगिरि के राजा थे। उन्होंने कन्या के पिता का सहर्ष स्वागत किया। (राजा कर्णदेव जो गुजरात के राजा थे, उनका राज-पाट मलिक काफूर द्वारा छिन गया था और वे किसी तरह से वहाँ से बचकर अपनी व्यस्क पुत्री को साथ लेकर देवगिरि आ पहुँचे।)

शंकर देव के पिता राजा रामचन्द्र देव ने अपने पुत्र के विवाह का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और वे पुत्र के विवाह की तैयारियाँ करने लगे। सभी व्यस्त हो गये। खुशी का समय था। घर-घर में घी के दिये जल उठे।

थोड़ी ही देर बाद राजा रामचन्द्र देव को सूचना मिली कि बहुत सारे मुसलमान देवगिरि की ओर आ रहे हैं। "मोसलमान, कैसा मोसलमान ?" और इस बात को भूलकर वे फिर अपने काम में व्यस्त हो गये।

कुछ देर बाद मलिक काफूर सेना सहित वहाँ आ पहुँचा और उसने अचानक ही हमला कर दिया। मलिक काफूर की सेना ने इस ओर की सेना को अपने काबू में कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लिया। शंकर देव वहाँ से निकल भागने में सफल हो गया। दो महीने तक मलिक काफूर ने वहाँ भरपूर ऐशो आराम किया। न मर्द की इज्जत बची न किसी औरत की।

वह विशाल समृद्ध नगर तहस-नहस हो गया। हँसमुख और खुशहाल नागरिक फटे चिथड़े पहने उदास नजर आने लगे।

मलिक काफूर ने शहर और राज्य में यह आन फिरवा दी—रियासत का प्रत्येक हिन्दू काफिर है, वह खिराज गुजार (भेंट देने वाला) है। जब उससे चाँदी माँगी जाये तो उसे नम्रतापूर्वक सोना उपस्थित करना चाहिये। यदि मुहस्सिल (राजकर वसूल करनेवाला) किसी हिन्दू के मुंह में थूकना चाहे तो उसे—निर्विरोध भाव से मुंह खोल देना चाहिये। ऐसा करने का अर्थ यह है कि वह आज्ञा पालन और सम्मान प्रदर्शित करता है। इसमें इस्लाम का गौरव है।

उसने कहा—चूंकि हिन्दू पैगम्बर का घोरतम दुश्मन है या तो वह इस्लाम कुबूल करे या जान से मार डाला जाये। या गुलाम बना लिया जाये या जजिया (कर) दे, और अपनी तमाम दौलत शाही खजाने में जमा कर दे।

उसने हुक्म दिया—कोई भी हिन्दू न घोड़े पर चढ़े न ही कोई हथियार बाँध सकता है। (यहाँ हम पाठकों को यह बता दें कि—उस समय तलवार, तीर, भाले आदि ही हथियार थे) उसने बड़े-बड़े परिवारों की पर्दा करती औरतों को मजदूरी ढोने के काम पर लगाया।

इस प्रकार से दो महीने तक हिन्दुओं को रौरव नरक का मजा चखाकर उसने राजा रामचन्द्र देव से जिम्मी (विधर्मी) होने का इकरार कराकर और दण्डस्वरूप ६०० मन (छह सौ मन) मोती, २ मन (दो मन) हीरे, लाल, पन्ने, नीलम और १००० मन (एक हजार मन) चाँदी तथा ४००० मन (चार हजार मन) रेशमी वस्त्र और अन्य बहुमूल्य सामग्री लेकर देवगिरि का पिण्ड छोड़ा। साथ में राजकुमारी देवल देवी को भी अपने साथ लेता गया।

× × ×

देवगिरि को विजय करने के बाद अब दक्षिण के हिन्दू राजाओं को परास्त करना मलिक काफूर के लिए और आसान हो गया। वह बीहड़ जंगलों में होता हुआ वारंगल दुर्ग के सामने जा डटा। वहाँ राजा प्रतापरुद्र देव का शासन था। यह दुर्ग इतना अभेद्य था कि इस्पात का गोला भी उस पर असर नहीं कर सकता था। तीन महीने तक घेरा डाले रखने के बाद अन्त में राजा प्रतापरुद्र देव ने सन्धि कर ली। अपनी अधीनता स्वीकृति स्वरूप उसने अपनी एक स्वर्ण मूर्ति काफूर के पास भेजी जिसके गले में सोने की जंजीर भी पड़ी थी। लेकिन काफूर ने उसे पैरों से ठुकरा दिया तथा संपूर्ण खजाने की माँग की। राजा प्रताप रुद्रदेव हिचके, तो उसने राज्य में कत्ले आम करने का हुक्म दे दिया। प्रजा को सर्वनाश से बचाने के लिए राजा प्रतापरुद्र देव ने अपना सर्वस्व देकर उस बला को टाला।

× × ×

समस्त काँगू प्रदेश, कोंकण का एक भाग तथा वर्तमान काल का समस्त मैसूर प्रदेश नरसिंह के पुत्र वीर बल्लाल तृतीय के अधीन था।

देवगिरि के राजा रामचन्द्र देव और बल्लाल तृतीय की आपस में प्रतिद्वन्द्विता थी। दोनों एक दूसरे के विनाश के इच्छुक थे। यही कारण था कि समर्थ बल्लाल देवगिरि का पतन चुपचाप देख रहा था। मलिक काफूर से टकरा कर उसे भी झुकना पड़ा। उसे जिम्मी (विधर्मी)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क़रार दिया गया। और अथाह धन सम्पत्ति तथा ३६ हाथी (छत्तीस हाथी) देकर वल्लाल ने मुक्ति पाई।

× × ×

इसके बाद वह मदुरा की ओर बढ़ा। जो पाण्डेय राजाओं की राजधानी थी। वहाँ के राजा थे कुलशेखर। उनके दो पुत्र थे। बड़े का नाम था सुन्दर पाण्डेय तथा छोटे का वीर पाण्डेय।

दोनों पुत्रों के बीच राजा ने एक विवाद खड़ा कर दिया। राजा का बड़ा पुत्र सुन्दर पाण्डेय था, और वही नियमानुसार उत्तराधिकारी था। परन्तु राजा ने अपने द्वितीय पुत्र वीर पाण्डेय को, जो उनको अत्यन्त प्रिय था, उत्तराधिकारी घोषित कर दिया। पिता के इस विपरीत निर्णय को लेकर सुन्दर पाण्डेय ने पिता और भाई से विग्रह किया जो बढ़ते-बढ़ते भारी वैमनस्य का रूप धारण कर गया।

एक दिन अवसर पाकर सुन्दर पाण्डेय ने पिता का वध करके राजगद्दी हथिया ली। परन्तु शीघ्र ही वीर पाण्डेय ने अपने समर्थकों की सहायता लेकर उसे परास्त किया। विवश होकर सुन्दर पाण्डेय ने मलिक काफ़ूर को अपनी सहायता के लिए बुलाया। मलिक काफ़ूर मार्ग के मन्दिरों को ध्वस्त करता हुआ तथा हाथियों को छीनता हुआ मदुरा आ पहुँचा।

वीर पाण्डेय यह सुनते ही अपनी रानियों को लेकर महल छोड़कर भाग निकला।

मलिक को वहाँ की लूट में १२ हाथी (पाँच सौ बारह हाथी), ५००० घोड़े (पाँच हजार घोड़े), १०५ मन (एक सौ पाँच मन) मणि, माणिक्य, हीरे हाथ लगे। उसने रामेश्वरम् के प्रसिद्ध शिवलिंग को भी भंग किया।

इस प्रकार सम्पूर्ण दक्षिण को दलित कर और वहाँ की सम्पूर्ण दौलत और उस दौलत से भी बढ़कर सुन्दरी देवल देवी को लेकर वह दिल्ली अलाउद्दीन के पास पहुँचा। वह ६१२ हाथी (छह सौ बारह हाथी), २०,००० घोड़े (बीस हजार घोड़े), कई सौ मन सोना, हीरे, रत्न और मोतियों से भरे सन्दूक ऊँटों पर लाद कर ला रहा था। यह उसकी अप्रतिम विजय थी।

× × ×

उलगू खाँ भी अलाउद्दीन का खरीदा हुआ गुलाम था। उलगू खाँ को अलाउद्दीन ने पहले खरीदा था। और हजार दीनारी उर्फ मलिक काफ़ूर को काफी दिनों बाद। अलाउद्दीन मलिक काफ़ूर से ज्यादा खुश रहता था। यह बात उलगू-खाँ को पसन्द न थी। वह मन ही मन मलिक काफ़ूर से जलता था।

जब मलिक काफ़ूर सुन्दरी देवलदेवी तथा अन्य अथाह धन सम्पत्ति को लेकर दिल्ली सुलतान अलाउद्दीन के पास पहुँचा तो अलाउद्दीन उससे बहुत खुश हुआ। यह देखकर उलगू खाँ कुढ़ कर रह गया।

एक दिन उलगू खाँ अवसर देखकर सुन्दरी देवलदेवी को लेकर दिल्ली छोड़ कर भाग निकला। और छिपते-छिपते जा पहुँचा देवगिरि के नये राजा हरपाल की शरण में। (देवगिरि के पहले राजा थे रामचन्द्र देव। उनके दिवंगत होने के बाद उनके उत्तराधिकारी बने राजा हरपाल। यही देवगिरि के नये राजा थे) देवलदेवी को लेकर उलगू खाँ द्वारा फरार होने की खबर अलाउद्दीन को काफी देर बाद मिली। वह आग बबूला हो गया। मलिक काफ़ूर ने अपने भीषण शत्रु उलगू खाँ को तथा उसे आश्रय देने वाले देवगिरि के राजा हरपाल को दण्ड देने के लिए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अलाउद्दीन से आज्ञा माँगी। आज्ञा पाकर वह ३०,००० (तीस हजार) सवार लेकर फिर देवगिरि की ओर पलायन कर गया।

× × ×

उत्तर से दक्षिण तक मुसलमानी सेना का आतंक सर्वत्र फैल चुका था। सेना की अवाई सुनते ही खेत जोतते हुए किसान खेतों में हल-बैल छोड़कर और खाना बनाती हुई गाँव की स्त्रियाँ जलता चूल्हा छोड़कर भाग खड़ी होती थीं।

जिस राह से काफूर की सेना जाती थी वहाँ कोई खेत न बचता, न गाँव ही और न जंगल की घास ही। वह प्रत्येक नगर-गाँव को उजाड़ता हुआ चला जा रहा था।

× × ×

दक्षिण की दुर्व्यवस्था को देखकर देवगिरि का नया राजा हरपाल बहुत दु:खी रहता था। कैसे वह फिर से दक्षिण में सुख-समृद्धि का राज्य स्थापित करे, वह यही सोच रहा था। वह हर बार यही सोचता था कि एक बार मुसलमानों से करारी टक्कर ले ली जाये और सदैव के लिए उनकी शक्ति को खत्म कर दिया जाये। परन्तु कैसे ? दक्षिण की शताब्दियों की संचित धन सम्पदा तो दिल्ली पहुँच चुकी थी। और निरन्तर आघात सहने से लोग भग्नहृदय हो चुके थे।

फिर भी हरपाल एक भारी युद्ध के लिए संकल्प कृत था।

इसी समय उलगू खाँ और देवलदेवी ने आकर उसकी शरण ली। और अब युद्ध की सम्भावना अनिवार्य हो गयी।

राजा हरपाल अभी तरुण था। उसका रक्त गर्म था। यद्यपि दक्षिण का कोई भी राजा उसकी सहायता करने को तैयार न था। परन्तु वह अपने ही भरोसे कमर कसने लगा। वह जानता था कि दक्षिण का साहस नष्ट हो चुका है। पर उसने सोच लिया था कि इन दोनों युद्धों से प्राण बचाकर जीवित रहना कोरी कायरता है।

उसने धीरे-धीरे अपनी सेना में उत्साह, साहस और वीरता के भाव भरने आरम्भ किये। उसने योग्य सेनापतियों तथा शस्त्रास्त्रों की व्यवस्था की। वह अपने सेनापतियों के साथ परामर्श करता रहता।

उलगू खाँ भी यह समझ रहा था कि उसकी बदौलत ही बवण्डर उठने वाला है। वह स्वयं एक वीर सेनानी था। स्वयं प्राण उत्सर्ग करने को तैयार बैठा था। और इस समय देवगिरि के सैन्य संगठन में महत्त्वपूर्ण भाग ले रहा था।

राजा हरपाल ने अपनी सेना की प्रत्येक टुकड़ी को गुरिल्ला युद्ध का प्रशिक्षण दे उन्हें समूचे पहाड़ी प्रदेशों में बिखेर दिया।

× × ×

काफूर तावड़तोड़ चलकर देवगिरि आ पहुँचा, तो उसके तमाम सैनिक खेत रहे। तत्पश्चात् उसने नगर और दुर्ग को चारों ओर से घेर लिया। देवगिरि का दुर्ग बड़ा दुर्घट था। घेरा डाले सात महीने हो गये पर दुर्ग पर अधिकार नहीं हो पाया। काफूर के साहसी सैनिक सीढ़ियाँ लगाकर दुर्ग की प्राचीर पर चढ़ने की चेष्टा करते, तो ऊपर से खौलते हुए तेल और पत्थरों की बौछार से पटापट गिर कर मर जाते। पीछे से छापामार उन्हें परेशान कर रहे थे।

अन्त में मलिक ने निर्णायक युद्ध का साहस किया। और किले की दीवार के सहारे रेत के बोरों की सीढ़ियाँ बनाने में वह सफल हो गया। रस्सियों की कमन्द लगाकर उसके आदमी प्राचीर पर चढ़ गये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहले प्राचीर पर कदम रखने वाला काफूर ही था। वह उछलकर प्राचीर के एक झरोखे में लटक गया। और वहाँ से वह उस स्थान तक भी जा पहुँचा, जहां दुर्ग का फाटक जंजीर से बाँधा गया था। हजारों तलवारें उस पर छा रही थीं और तीरों का मेंह बरस रहा था, पर वह अन्त में फाटक खोलने में समर्थ हो गया। फाटक का खुलना था कि बरसाती नदी की धार की भांति उसकी सेना किले में घुस आई। मलिक हिन्दू सैनिकों के सिर काटता हुआ अन्तःपुर के द्वार तक पहुँच गया। परन्तु द्वार पर उसकी भेंट उलगू-खाँ से हो गई। दोनों ने खूनी नजरों से एक दूसरे को देखा और फिर एक दूसरे पर टूट पड़े।

अचानक मलिक ने उलगू के सिर पर एक करारा वार किया। उलगू फुर्ती से एक ओर हट गया। तलवार पत्थर की चट्टान से जा टकराई और झट से टूट गई। परन्तु पीछे हटने से उलगू का संतुलन बिगड़ गया। और पैर फिसलने के कारण गिर गया। उसकी तलवार उसके हाथ से छूटकर दूर जा गिरी। उसी क्षण सुयोग पाकर मलिक ने टूटी हुई तलवार मूठ तक जोर से उलगू के पेट में भोंक दी। उलगू जोरसे चीखा और उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

× × ×

राजा हरपाल गिरफ्तार हो जाता है। राजपरिवार में हाहाकार मच जाता है। सब स्त्री बच्चों को बन्दी बना लिया गया। सेवकों को मौत के घाट उतार दिया गया। किले का खजाना ज़र-जवाहर, हीरा, मोती, सोना सब मलिक के हाथ लगे। किले में और नगर में कत्ले आम और लूटमार का बाजार गर्म हो गया। जो जहाँ मिला मार डाला गया। स्त्रियों पर एक बार फिर कहर टूट पड़ा। बूढ़े, बच्चे, स्त्रियाँ जिधर मुंह उठा, मरते-गिरते भाग निकले। लाखों को पैरों ठुकराते, कुचलते और खुद रोते कलपते।

सारा नगर इस समय धू-धू कर जल रहा था। चारों ओर हाय-हाय की चीत्कार कानों का पर्दा फाड़े डाल रही थी।

\+ \+ \+

अन्तःपुर के गुप्त तहखाने में देवल देवी, राजमहिषी (राजा हरपाल की पत्नी एवं नगर की महारानी) तथा भीमसिंह सेनानायक थे। सेनानायक दुर्ग की स्थिति को देखने गुप्त तहखाने से बाहर निकल पड़ा। बातचीत के दौरान देवलदेवी (जो अपना क्षत्रियोचित सतीत्व गँवा चुकी थी) महारानी से बोली—"महा-रानी, मुझे मलिक काफूर के पास जाने दीजिये। उससे महाराज की प्राण रक्षा और राज्य की रक्षा माँग लूंगी।"

"नहीं, तुम नहीं जा सकतीं। महाराज की आज्ञा है कि तुम्हें सुरक्षित गुजरात भेज दिया जाये।" महारानी ने कहा।

"परन्तु मैं महाराज के अधीन नहीं हूं। मुझे जाने दीजिये।"

"मेरी छाती में कटार मार कर जा सकती हो राजकुमारी," महारानी बोलीं।

"कटार मेरे पास नहीं है। मुझे आप जाने दीजिये।"

यह कटार है; मारो।" रानी ने कटार देवल के हाथ में थमा दी। क्षण भर कटार लिये वह कुछ सोचती रही, फिर उसके चेहरे पर एक मुस्कान दौड़ गयी।

उसने कहा—"महारानी, सचमुच यह कटार तो क्षत्राणी की कटार है। इसका स्पर्श करते ही मेरे मन में भी क्षत्रियोचित हौसले आने लगे हैं।"

"क्षत्रियोचित हौसले कैसे?"

जैसे मैंने क्षत्रिय वीरबालाओं के उत्सर्ग के सुने थे।"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"यह तो अच्छी ही बात है।"

"तो महारानी, अब व्यर्थ समय गँवाने से क्या लाभ है।" इतना कहकर बिजली की तड़प से उसने वह कटार मुंह तक अपने वक्ष में घुसेड़ ली और क्षण भर में ही झूमकर पृथ्वी पर गिर गयी।

"हाय-हाय, यह तुमने क्या किया राजकुमारी।" रानी रोते-रोते देवल से लिपट गयी।

एक क्षीण ज्योति देवल के नेत्रों में उदय हुई। साथ ही उसके होठों पर एक मुस्कान फैल गई। उसने क्षीण स्वर में कहा—"विदा महारानी, अपराध क्षमा।" और उसके प्राण पखेरू उड़ गये।

इसी समय भीमसिंह ने तहखाने में प्रवेश किया। उसने राजकुमारी की दशा देखकर कहा—"यह क्या हो गया महारानी।"

"मेरी मूर्खता से राजकुमारी जूझ मरी, वह तो अपना आत्म-बलिदान मेरे लिए देना चाह रही थी, पर मैंने ही नहीं माना। सो वह प्राणों के भार से इस प्रकार मुक्त हो गई।"

भीमसिंह ने कहा—"महारानी, जो होना था सो हो गया। अब हम एक क्षण की देर नहीं कर सकते। महाराज के प्राण संकट में हैं। अब चलकर उनके प्राणों की रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।"

रानी ने अश्रुपूर्ण दृष्टि देवल की मृत देह पर डाली और अपने सिर से दुपट्टा उतारकर उसके अंग पर डाल दिया। और दीर्घ श्वास खींचकर भीमसिंह से कहा—"चलिये महावीर।"

\+ \+ \+

देवगिरि का प्रत्येक घर लुट गया। अधिकतर नागरिक मौत के घाट उतार दिये गये। सारा नगर स्वाहा कर डाला गया। मलिक काफूर के सैनिक अब भी नगर में आग लगाने और मन्दिरों को ढहाने में लगे हुए थे। राजप्रसाद जो कभी ऐश्वर्य और सुषमा की खान था, अब खण्डहर हो चुका था। मौत और विनाश की वर्षा से यह समृद्ध नगर नष्ट कर दिया गया।

फिर भी मलिक काफूर का क्रोध कम न हुआ, क्योंकि उसकी प्रियतमा देवल देवी अभी भी उसे नहीं मिली थी।

\+ \+ \+

राजा को अन्ध कूप में डलवा दिया गया और भीषण यन्त्रणायें दी गयीं, परन्तु उसने कुछ न बताया।

अन्धकूप की कोठरी में पहुँच कर मलिक ने उससे कहा—'ऐ बदबख्त, तू देवल को मेरे हवाले कर, नहीं तो तेरी जिन्दा खाल खींच ली जायेगी।'

'तू इन्सान नहीं, शैतान है। देवल मेरी शरणागत है, मैं उसे नहीं दे सकता।

'तू दोजख की मौत मारा जायेगा।'

'इसका भय नहीं।'

'मैं देवल को खोज निकालूंगा।'

'तू उसकी परछाईं भी नहीं पा सकता।'

मलिक काफूर की आँखें क्रोध में सुर्ख हो गईं। उसने जल्लादों को बुलाकर कहा—

'जल्लादो, मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ कि तुम देवगिरि के इस बदबख्त जिम्मी राजा को टिकटी से बाँध दो और कसकर उसके जिस्म के प्रत्येक हिस्से पर कोड़े लगाते रहो, जब तक कि उसका खून धरती तक न बह जाये और उसकी खाल फूलकर उभर न आये। सर्दी के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दिन हैं, राजा को ठण्ड न सताने पाये, इस लिये ध्यान रक्खो कि उसके कन्धे अच्छी तरह गर्म रक्खे जायें। और उसके बाद छुरे से उसके पेट के नीचे से उसकी जिन्दा खाल खींचो और उसे समूची उतार लो। और एहतिहात रक्खो कि वह कीमती खाल बर्बाद न होने पाये। खाल खींचने के बाद उसे तब तक जिन्दा रहने दो, जब तक कि वह जिन्दा रहना चाहे। हर खासो आम यह तमाशा देखे। राजा के दोस्त अहबाब खुशी से उसके पास रहें और उसके जिस्म का जिस तरह चाहें इस्तेमाल करें। सिर्फ उसकी खाल से मेरी तलवार की म्यान मढ़ दी जाये।'

अभागे राजा को अन्धकूप से निकाला गया। बड़ी कड़ाके की सर्दी थी। इतने दिन अन्धेरे तहखाने में रहने से उसकी आंखों में चकाचौंध लग रही थी और वह अच्छी तरह आंख नहीं खोल सकता था। पर वह असीम धैर्य से अपने पैरों की भारी-भारी बेड़ियों और जन्जीरों को घसीटता हुआ बड़े कष्ट से वध स्थली की ओर जा रहा था।

अभी एक ही पहर दिन चढ़ा था और आकाश में कोहरा छाया हुआ था। जैसे सूरज भी यह भयानक दारुण दृश्य देखते हिचकिचाता था। परन्तु सारी सेना को इस भयानक दृश्य को देखने की और उससे अपना मनोरञ्जन करने की आज्ञा मिल गयी थी।

राजा दूर से उन्हीं बेड़ियों के भार को घसीटते हुए चलकर आया था। इससे उसके दोनों पैर सूज गये थे। वह धीरे-धीरे अपनी आँखें खोलते-मींचते इधर-उधर देखते हुए चल रहा था। उसका परिवार निरुपाय खड़ा उसे वध स्थली की ओर जाते देख रहा था। अन्धकूप में उसके साथ जो अत्याचार किये गये थे, उसके चिह्न उसके अंगों पर प्रत्यक्ष दीख रहे थे। उसका सारा शरीर जख्मों से भरा था और उसमें से बहुत से जख्म सड़ कर गलीज हो गये थे। पर किसी का भी ध्यान उनकी ओर न था।

उस पर शाही नवाजिश यही की गई कि उसकी रानी और तीन बरस के छोटे बेटे को उसके पास आकर उससे मिलने की आज्ञा (इजाजत) दे दी गयी। रानी ने आकर जमीन में गिरकर उसके दोनों सूजे हुए पैर अपने अंक में भरकर छाती से लगा लिये, और हिचकियाँ लेते हुए कहा—'हाय मेरे स्वामी, तुम कैसे सहोगे ?'

राजा ने कहा—'रानी, तुम बेटे को लेकर दूर चली जाओ। यह वक्त तुम्हारे देखने के योग्य नहीं है, खासकर इस कोमल हृदय बालक का तो कलेजा ही फट जायेगा। जाओ, घर लौट जाओ, और ध्यान रखो जब तक मेरा बेटा शत्रु से बदला लेने योग्य न हो जाय, वह दुश्मन की नजर से बचा रहे।'

रानी ने कहा—'महाराज, मेरी चिता तैयार है। मैं तो आपके साथ स्वर्ग को प्रयाण करूंगी। एक क्षण भी यहाँ न रहूँगी।,

"नहीं मेरी प्यारी, हमारे प्रेम का प्रसाद तुम्हारी गोद में है। इसके लिए जीना। इसका भली भाँति लालन-पालन करना और समय पर बदला लेने को तैयार करना।"

परन्तु रानी ने बालक को राजा के चरणों में डाल दिया और स्वयं रोती हुई उसी धूल भरी भूमि में लोट गई। बालक भी रोने लगा।

राजा ने चाहा कि एक बार उसको छाती से लगाकर प्यार करे। उसने जल्लादों से प्रार्थना की कि क्षण भर के लिए वे उसके हाथ खोल द। पर जल्लादों ने बलात् रानी और राजकुमार को दूर धकेल दिया और राजा को लेकर वध-स्थली की ओर बढ़े।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राजा ने चिल्लाकर कहा—'प्रिये, जल्द यहां से चली जाओ। यह भूमि तुम्हारे ठहरने योग्य नहीं है। यह दृश्य तुम्हारे देखने योग्य नहीं है।

\+ \+ \+

काजी ने आकर उसे शाही हुक्म सुनाया। तब जल्लादों ने उसे कसकर टिकटी से बांध दिया और उसके जिस्म पर पानी के छींटे दिये गये। इसके बाद दो कद्दावर हबशी गुलाम चमड़े के चाबुक लेकर आये और उसके अगल-बगल खड़े हो गये। उन्होंने हवा में अपने कोड़े उड़ाये और कैदी पर कोड़े बरसाने लगे। असीम धैर्य से राजा यह असह्य वेदना सह रहा था। धीरे-धीरे उसकी चेतना और धारणा शक्ति लुप्त होती जा रही थी।

अन्त में वह बिल्कुल अचेत हो गया। उसका सिर नीचे लटक गया। कोड़ों की मार बन्द कर दी गयी और होश में लाने के उपचार होने लगे। उसके मुंह पर बहुत से पानी के छींटे दिये गये।

कुछ देर में उसे चेत हुआ। उसने अर्धनिमीलित नेत्रों से एक बार अपने चारों ओर खड़ी भीड़ को देखा।

इसी समय जल्लाद तेज छुरे लेकर आये और असल काम शुरू हुआ। आहिस्ता से पहिले पेट के नीचे से कमर तक उसकी खाल तराशी गई और इसके बाद उसे चीमटों से पकड़कर खींचा जाने लगा। असह्य यन्त्रणा से राजा कराहने लगा। पर शीघ्र ही उसकी कराहना भी धीमी पड़ गई और वह फिर बेहोश हो गया। जल्लाद अपना काम तेजी से करते चले गये। और उसके सीने की खाल समूची उधेड़ ली गई। देखते ही देखते राजा एक जीवित मांस का लोथड़ा रह गया। कैसा भयानक लोमहर्षक दृश्य था। राजा यद्यपि इस समय बेहोश था, पर जीवित था और सांस ले रहा था।

राजा के मांस के लोथड़े को देखते ही भय और आतंक से हृदय दहल जाता था। अब जल्लाद उसे छोड़ कर चले गये और उसके परिजनों को उसके निकट आने की आज्ञा मिल गई। वे उसे चारों ओर से घेर कर रोने लगे।

सभी चाह रहे थे कि राजा जल्द से जल्द मर जाये और इस वेदना से उसका छुटकारा हो जाये। परन्तु राजा के प्राण नहीं निकल रहे थे। वह जिन्दा था, उसका हृदय धड़क रहा था।

दिन चढ़ा, ढला, रात हुई। अब तक तमाशाइयों की जो भीड़ बनी हुई थी, वह घटने लगी। रात गम्भीर हुई, गम्भीर होती गई। रह गये राजा और रानी—दो प्राणी, प्राणों के झूले पर झूलते हुए, और उनके मूक दर्शक थे सुदूर आकाश में टिमटिमाते सितारे।

सूर्योदय हुआ पर राजा के प्राण नहीं निकले। इस समय उसकी चेतना लौटी। रानी वहीं धूल में पड़ी थी, परिजनों के बहुत कहने सुनने पर भी वह वहां से नहीं टली थी। राजा में वाणी लौट आई। उसने अत्यन्त कष्ट से सांस लेते हुए कहा 'क्यों नहीं कोई मेरा सिर काट लेता। यह वेदना तो अब सही नहीं जाती।'

रानी ने कहा—'इसकी आज्ञा नहीं है स्वामी, नहीं तो मैं यहां तक साहस कर सकती।' वह राजा के सिर पर धीरे-धीरे हाथ फेरने लगी। (सिर की खाल नहीं निकाली गई थी।) फिर उसने अपनी हथेलियां राजा की आंखों पर रख दीं।

तीन दिन राजा जीवित रहा और तब अर्द्धरात्रि को उसके वीर प्राणों ने सूर्यलोक की ओर प्रयाण किया। रानी ने तब हर्ष के आंसू बहाये। भगवान् को धन्यवाद दिया। तीन दिन तक रानी ने असंख्य बार राजा की मृत्यु-कामना की थी। अन्ततः इस समय उसकी वह इच्छा पूर्ण हुई।

राजा का देह उसके परिजनों को मिल गया और उन्होंने उसकी अन्त्येष्टि क्रिया की।

\+ \+ \+

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मेरठ विश्वविद्यालय में : दर्शन ऋषि दयानन्द का

प्रो० रत्नसिंह उपाचार्य महानन्द मिशन कालिज गाजियाबाद के प्रयत्नों से मेरठ विश्वविद्यालय में (एम० ए०) ऋषि दर्शन पर एक पेपर आता है। १९७४ में जो प्रश्नपत्र आया है वह निम्न है—

एम० ए०-१९७४ अंक—१००

कोई पाँच प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

स्वामी दयानन्द के जीवन चरित्र पर लेख लिखिए और यह बतलाइए कि उन्होंने मूर्तिपूजा के द्वारा ईश्वर की पूजा की परम्परागत रीति का त्याग कैसे किया ?

दयानन्द ज्ञान और कर्म में समन्वय किस प्रकार प्रतिपादित करते हैं ? क्या आप उससे सहमत हैं ?

अथवा

सत्कार्यवाद क्या है ? वह असत्ककार्यवाद से किस प्रकार भिन्न है ? दयानन्द के इस सिद्धान्त में क्या विचार हैं ?

क्या दयानन्द बौद्ध ज्ञान मीमांसा से सहमत हैं ? उनकी इस सिद्धान्त पर की गई आलोचना का संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

अथवा

क्या सांख्य का विकासवाद नास्तिक है ? दयानन्द उसे कहाँ तक स्वीकार करते हैं ?

नव-वेदान्त द्वारा स्वीकृत ईश्वर के दृष्टिकोण के सम्बन्ध में दयानन्द के विरोधी विचार प्रस्तुत कीजिए। क्या आप उनसे सहमत हैं ?

अथवा

शरीर के चार प्रकारों की व्याख्या कीजिए और उनकी दयानन्द के अनुसार मन की चार अवस्थाओं से तुलना कीजिए।

दयानन्द के मृत्यु के पश्चात् जीवन के सम्बन्ध में क्या विचार हैं ? क्या वे बौद्धों की भाँति पुनर्जन्म को स्वीकार करते हैं ?

१२ अप्रैल १९७५ को अपने क्षेत्र में आर्यसमाज शताब्दी धूमधाम से मनाएं। सारे नगर में धूम मचाएं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद-भाष्य का मूल्य ३० अप्रैल से १२४) होगया है।

जन-ज्ञान के जो सदस्य अभी तक भी वेद-भाष्य के सदस्य नहीं बने हैं उनके लिए विशेष रियायत : वे १११) भेजकर वेद भाष्य के सदस्य बन सकते हैं। जन-ज्ञान के प्रत्येक परिवार में वेद भाष्य होना ही चाहिए। —सम्पादक

क्या आप अपने परिवार में प्रभु की अमर वाणी वेद नहीं लाएंगे ?

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कल्पित —शशिभूषण "श्रेष्ठ"

किमाश्चर्यम् ?

एक बार ब्रह्मा के मन में यह विचार आया कि सृष्टि के सभी सन्तानों को मैं अपने भर नेत्रों देखूं। पिता का पुत्र पर स्नेह तो होता ही है। ब्रह्मा ने एक निश्चित दिन कर सभी के पास इस शुभ सूचना को भेज दिया। सृष्टि के सभी प्राणी निश्चित दिन पर ब्रह्मा के पास उपस्थित हुए। इसी अन्तराल में ब्रह्मा ने एक नये प्राणी का निर्माण किया। वह सृष्टि के सभी प्राणियों को देखकर आश्चर्य में पड़ गया तथा सभी प्राणियों का परिचय जानना चाहा। उसने ब्रह्मा से कहा कि मैं इन प्राणियों का परिचय जानना चाहता हूँ कि ये कौन हैं ? ब्रह्मा ने कहा—तुम स्वयं इनसे इनका परिचय पूछ लो।

अब उस नये प्राणी ने एक-एक कर सभी प्राणियों से परिचय पूछना प्रारम्भ किया। सबसे पहले उसने गाय से पूछा—आप कौन हैं ?

गाय ने उत्तर दिया— मेरा नाम गाय है। मुझे लोग इसी नाम से पुकारते हैं। घोड़े से पूछने पर उसने बताया— मैं घोड़ा हूँ।

इस प्रकार सभी पशु-पक्षी तथा सृष्टि के अन्य प्राणियों ने अपना सही-सही परिचय दे दिया। अन्त में मानव की बारी आयी।

जब उस नये प्राणी ने मानव से पूछा कि आप कौन हैं ? तो कोई कहता मैं हिन्दू हूँ, कोई कहता मैं मुसलमान हूँ, कोई बंगाली, कोई मद्रासी, कोई पारसी, कोई ईसाई, कोई पंजाबी, कोई अमेरिकन, कोई अंग्रेज, कोई आस्ट्रेलियन, कोई चीनी, कोई जापानी तो कोई रूसी अपने को कहता।

मानव के इस उत्तर को सुनकर ब्रह्मा आश्चर्य में पड़ गये कि सृष्टि का सर्वश्रेष्ठ प्राणी, मेरी सबसे प्यारी सन्तान मानव को यह क्या हो गया है ? कहीं मेरी सन्तान पागल तो नहीं हो गई। यह क्या अंट-संट बक रही है। मैंने तो इन्हें ऐसा बनाया नहीं था, ऐसा भेद-भाव भी नहीं किया था फिर ये भेद-भाव इनमें कैसे उत्पन्न हो गये ? मैंने इन्हें मानव बनाकर भेजा था और ये क्या से क्या बन गये ? क्या अब मानव कोई नहीं रहा ?

अपनी सबसे प्यारी सन्तान को पागल हुआ जानकर ब्रह्मा पश्चात्ताप् करने लगे। वे बार-बार सोचते कि मैंने इन्हें मानव बनाकर भेजा था परन्तु हाय आज मानव कोई नहीं रहा। आज ये आपस में भेद-भाव की दीवारें खड़ी करने लगे।

ब्रह्मा को इस बात पर सर्वाधिक आश्चर्य हुआ कि किसी मानव ने अपने वास्तविक स्वरूप का परिचय नहीं दिया। किसी ने यह नहीं कहा कि मैं मानव हूँ, मेरी जाति मानव है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब ब्रह्मा ने अपने प्रिय पुत्र मानवों को समझाना प्रारम्भ किया "प्रिय पुत्रो ! तुम मेरी सबसे प्यारी सन्तान हो। तुमने अपना जो परिचय दिया वह तुम लोगों के मध्य संघर्ष, द्वेष, भेद-भाव उत्पन्न करेगा जिससे तुम लोगों का जीवन संकटमय बन जायेगा। यह तुम्हारा सही परिचय नहीं, मानव-मानव के बीच तुम सबों ने जो भेद-भाव की दीवार खड़ी की है। यह तुम्हारे वास्तविक स्वरूप मानवता के प्रति जघन्यतम अपराध है। अगर संसार में सुख व शान्ति से रहना चाहते हो तो अपने बीच जो भेद-भाव की दीवार खड़ी किये हो उसे सात्विक विचारों से तोड़ दो, नष्ट कर दो। ये सात्विक विचार तुम्हें परमात्मा की अमर वाणी "वेद" ही दे सकते हैं जो देश, काल व सीमा के बन्धनों से मुक्त हैं, जिसका ज्ञान 'सर्व जन हिताय, सर्व जन सुखाय से युक्त है।'

ब्रह्मा ने आगे कहा—"संसार में मानव जाति के मध्य खड़ी देश, जाति, वर्ण, कुल, गोत्र एवं रंगादि सम्बन्धी भेद-भाव की समस्त दीवारें मानवता के प्रति अभिशाप हैं, कलंक हैं। अतः इसे गिरा दो, मिटा दो, नष्ट कर दो।"

काश ! आज का मानव ब्रह्मा की इस वाणी का अनुगमन करते हुए वेदाध्ययन कर, वेद ज्ञान का प्रचार एवं प्रसार कर अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता और किसी के पूछने पर कि तुम कौन हो ? इसका उत्तर मैं मानव हूँ, दे सकता तथा प्रत्येक मानव को मानव रूप में देखता।

महदाश्चर्य है कि हम मानव होते हुए भी अपना परिचय मानव कहकर नहीं देते। यह क्या कम आश्चर्य का विषय है ?

वेद कहता है—"मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्" मानव बनो, मानवता का परिवेश धारण करो और अपने दिव्य आचरण से दिव्य सन्तान उत्पन्न कर। इस प्रकार वेद मानव बनने का आदेश देता है और कहता है कि तू मानव है। तुममें भेद-भाव कैसा ? तुम सभी मानव हो।

महर्षि दयानन्द ने इसी भेद-भाव की दीवार को गिराने का जो महान् कार्य किया वह अपने आप में अनुपमेय है। इसलिए महर्षि को हम मानवोद्धारक कहते हैं।

क्या हम सीखेंगे ?

चुनाव के दिनों में लिंकन और उनका प्रतिद्वंद्वी एक ही गाड़ी में बैठकर किसी बहस में भाग लेने के लिए जा रहे थे। गाड़ी लिंकन के प्रतिद्वंद्वी की थी। एक जगह उन दोनों को किसानों के एक समूह के सामने बोलना पड़ा।

भाषण में लिंकन ने कहा—'मैं इतना गरीब हूं कि खुद की गाड़ी नहीं रख सकता। पर ये मेरे दोस्त इतने मेहरबान हैं कि मुझे अपनी गाड़ी में बैठाकर लाये हैं। अगर आप मुझे वोट देना चाहें, तो मेरे इन दोस्त को वोट दीजिये; क्योंकि ये अच्छे आदमी हैं।'

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मांसाहार स्वास्थ्य वर्धन में साधक या बाधक

—वेदप्रकाश भारद्वाज

माँसाहार की प्रवृत्ति युवा पीढ़ी में वृद्धि पर है। आधुनिकता की होड़ और स्वास्थ्य वृद्धि में सहायक होने के नाम पर माँस और अण्डा पढ़ी-लिखी पीढ़ी का प्रमुख आहार बनता जा रहा है। अनेक लोग मांस और अण्डे के भक्षण के समर्थन में विज्ञान का सहारा लेते हैं। किन्तु यह दावा कितना थोथा है, यही वर्णित है प्रस्तुत लेख में। वैज्ञानिक अनुसंधानों ने इस धारणा को किस भाँति निस्सार सिद्ध किया है पढ़िये—

—सम्पादक

मांसाहार का प्रचलन दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। मांस भक्षण आधुनिकता का द्योतक समझा जाने लगा है तथा शाकाहारियों को रूढ़िवादी कहा जा रहा है। इतना ही नहीं, माँसाहार की औचित्त सिद्ध करने के लिए विज्ञान का सहारा लिया जाता है। कहा जाता है कि विज्ञान के अनुसार मांस मानव शरीर के लिए उपयोगी ही नहीं अपितु आवश्यक है।

मांसाहार की उपयोगिता दर्शाने के लिए ये तर्क दिए जाते हैं कि मांस में जन्तु प्रोटीन एवं जन्तु वसा (Animal Fat) होती है जिसको मानव शरीर बड़ी सरलता से ग्रहण कर लेता है और उसका पाचन आसानी से ग्रहण कर लेता है और उसका पाचन भी आसानी से हो जाता है। मांस एवं अण्डों में कैलशियम (सुधांशु) और प्रोटीन बहुत अधिक होते हैं जो कि मनुष्य शरीर के विकास के लिए बहुत आवश्यक है।

प्रश्न उठता है कि क्या वास्तव में मांसाहार जीवन एवं स्वास्थ्य वृद्धि के लिये उपयोगी है ? आधुनिक पीढ़ी एवं युवा वर्ग में यह बात प्रचलित है कि मांस स्वास्थ्य निर्माण के लिए उपयोगी है। किन्तु वास्तविकता क्या है ? इस सम्बन्ध में कुछ ठोस तथ्य प्रस्तुत हैं।

वैज्ञानिक अनुसन्धानों के फलस्वरूप यह कथन पूर्णतः असत्य प्रमाणित हो चुका है। अनुसन्धानों के निष्कर्ष के आधार पर सिद्ध हो चुका है कि शरीर को मांसाहार से लाभ की अपेक्षा हानियां ही अधिक उठानी पड़ती हैं। इंग्लैंड के ख्याति प्राप्त चिकित्सक डा० आर० जे० विलियम का कथन है कि अण्डा व मांस खाने वाला प्रारम्भ में अपने को अधिक स्वस्थ अनुभव करें और दूसरे को भी ऐसा प्रतीत हो। किन्तु यह केवल आत्म विश्वास का ही परिणाम है कि वह केवल यही सोचता है कि मेरा शरीर वृद्धि कर रहा है। परन्तु कुछ समय के बाद में वह कई भयंकर रोगों से ग्रस्त हो जाता है जिनमें रक्त चाप (Blood pressure) एवं एग्जिमा जैसे भयानक रोग शामिल हैं।

किसी भी जन्तु का शरीर छोटी छोटी कोशिकाओं (cells) से बना होता है। उसकी कोशिकाओं में उसके द्वारा लिए गए भोजन के अन्तिम पदार्थ ग्लूकोज एवं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्य ऊर्जा उत्पादक (Energy reservoir) के रूप में होते हैं जो आक्सीकरण की क्रिया के फलस्वरूप ऊर्जा का निर्माण करते हैं इन क्रियाओं के फलस्वरूप अमीनों अम्ल एवं नाइट्रोजनीय पदार्थ भी होते हैं नाइट्रोजनीय पदार्थ शरीर के लिए वर्जित पदार्थ के रूप में होते हैं। और यही नाइट्रोजनीय पदार्थ मानव शरीर की भी कोशिकाओं में अन्तिम अवशिष्ट पदार्थ होते हैं जिनका शरीर से बाहर उत्सर्जित होना अत्यन्त आवश्यक होता है। मानव शरीर में यह waste product यूरिक एसिड, यूरिया एवं अमोनिया के रूप में होते हैं और इनका उत्सर्जन वृक्कों [kidney] एवं स्वेद ग्रन्थियों के द्वारा होता है। मांसाहार करने से यह विष मानव शरीर में एकत्रित होने लगता है जिसका उत्सर्जन विष मानव शरीर के उत्सर्जीय अंगों के लिए दुरूह हो जाता है और यह विष शरीर में एकत्रित होता रहता है जिससे कि बहुत से मूत्र एवं त्वचा के रोग उत्पन्न हो जाते हैं।

अमेरिकन डा० अलैक्जैण्डर हैक ने उक्त कथन की पुष्टि करते हुए बताया है कि मांस पाचन में मांस की कोशिकाओं में उपस्थित अमीनों अम्ल एवं अलकोहल के के कारण शरीर में अत्यन्त उष्मा उत्पन्न होती है। इस उष्मा के कारण गुर्दों में रक्त छानने की प्रक्रिया बहुत तेजी से होने लगती है। बोमन कैप्सूल में अत्यधिक दवाब के कारण मूत्र के साथ क्षार एवं ग्लूकोज के लवण भी बाहर जाने लगते हैं जिससे कि मधुमेह एवं अन्य बीमारियां उत्पन्न हो जाती हैं। अमेरिकी चिकित्सक डा० ए० वाचमन एवं उनके सहयोगी डा० डी० एस० बर्नस्टी ने अपने अध्ययन के फलस्वरूप घोषणा की कि मांसाहार से हड्डियां क्रमशः कमजोर होने लगती हैं एवं गलने लगती हैं क्योंकि मांसाहारियों के मूत्र में क्षारीय पदार्थ एवं लवण की मात्रा शरीर से बाहर जाने लगती है जिससे रक्त में उन पदार्थों की कमी होने लगती है रक्त इस कमी को हड्डियों से लेकर पूरी करता है इस प्रकार हड्डियां खोखली होती जाती हैं।

मांसाहारियों में सुअर का गोश्त सेवन करने वालों की आंतों में एस्केरिस एवं टेपवर्म (फीता कृमि) आदि उत्पन्न हो जाते हैं। इन कृमियों के (Egg) अण्डे सुअर के मांस के द्वारा ही मनुष्य की आंतों में पहुँच जाते हैं और फिर मनुष्य के शरीर से ही अपना आहार लेते रहते हैं। इस प्रकार मनुष्य स्वस्थ होने की अपेक्षा दिन प्रतिदिन कमजोर होता जाता है और एनीमिया तथा पेचिश आदि भयानक रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं।

एक अन्य जानकारी में डा० 'ई० वी० मैकोलम' की पुस्तक 'Newer Knowledge Of Nutrition' के अनुसार अण्डों में कार्बोहाइड्रेट बिल्कुल नहीं होता तथा कैल्शियम भी बहुत अल्प मात्रा में पाया जाता है। इस कारण ये पेट में सड़ान उत्पन्न करते हैं और पेट में गैस आदि अनेक रोगों को उत्पन्न करते हैं।

इन तथ्यों से ज्ञात होता है कि मांसाहार से लाभ की अपेक्षा हानि अधिक होती है। इतना अवश्य है कि मांस सेवन से मांस की शरीर में वृद्धि हो जाती है किन्तु इसके साथ ही प्राण घातक बीमारियां भी शरीर को सौगात रूप में मिलती हैं जो धीरे धीरे दृष्टि गोचर होती हैं किन्तु फिर भी आधुनिक युवा पीढ़ी मांस एवं अण्डों का ही अधिकांश रूप से भक्षण कर रही है। आज विदेशी प्राचीन भारतीय खाद्य पद्धति को अपनाकर शाकाहारी हो रहे हैं किन्तु दुर्भाग्य ! भारतीय उस पाश्चात्य सभ्यता के प्रतीक मांसाहार को अपना रहे हैं जिससे बल, वीर्य एवं कान्ति हीन हो रहे हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

मन तो बहुत करता है। इच्छा होती है कि कुछ ऐसा हो कि
Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संसार के कोने स स्वर गूंजे—

आर्य समाज की जय ! महर्षि दयानन्द की जय !

वैदिक धर्म की जय !!!

इसी भावना से प्रस्तुत है, एक प्रचार पुस्तक

आर्य समाज स्थापना शताब्दी पर

कम से कम

आप इसकी एक-एक हजार प्रतियां मंगा कर

अपने क्षेत्र में फैलाएँ

शताब्दी तक यह एक करोड़

विभिन्न भाषाओं में बंटे

आर्य समाज के १०० वर्ष

१८७५ से १९७५ तक आर्यसमाज ने

राष्ट्र-समाज और संशार को

क्या दिया ?

मूल्य २० पैसे : १५ रु० सैकड़ा

जन – ज्ञान प्रकाशन

१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग, नई दिल्ली-५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार की औषधियां सेवन करें

गुरुकुल कासारि

खांसी की अपूर्व गुणकारी औषधि

उपयोग—किसी भी कारण से हुई खांसी, नजला, जुकाम आदि में लाभदायक है।

सेवन विधि—दिन में तीन बार छोटी चम्मच लेकर उंगली से चाटें।

आंखों के अनेक रोगों के लिए

संसार प्रसिद्ध

भीमसेनी सुरमा

च्यवनप्राश

उत्तम स्वादिष्ट रसायन

शरीर को बलिष्ठ एवं कान्तिमय बनाता है

शारीरिक क्षीणता एवं फेफड़ों के लिये प्रसिद्ध

आयुर्वेद रसायन

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

पो० गुरुकुल कांगड़ी [सहारनपुर]

शाखा कार्यालय—चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रो-रो कह रहा खड़ा चौराहा आज

रो-रो कह रहा
खड़ा चौराहा आज
देख भरे बाजार में
लुटती माँ बहनों की लाज।
हूँ जड़, असहाय-अपंग
नहीं शक्ति है
करने को इन दुष्टों से जंग
गम यही खाये जा रहा मुझे है आज
नहीं आ सका मेरा शरीर यह
दुखिया अबलाओं के काज।

कर्ण पुरी-दिल्ली की सड़कें चीख उठीं
सीमा-उमा पाल सरीखी
कितनी ही अबलाओं की आवाज उठीं।

कर्ण-पुरी-मेरठ शान्त हुआ था—
कि दिल्ली में
उमा शर्मा पर वज्राघात हो गया
चीखा आर्य जगत्
संसद् में आवाज उठी
दुःख यही मुझे है साल रहा
नारी-सरताज न जाग सकी।

सुनता हूँ, इस अत्याचार में,
संलग्न समाज-नेतृियाँ नारी हैं।

ये स्वर मैंने सुने,
कहे किसी रक्षक अधिकारी ने
धिक्कार है ऐसी नारी पर
जो अपना नारीत्व भुलादे
माँ की ममता, स्नेह बहन का—

पाप-कर्म पर सभी लुटा दे।
जागो आर्य सपूतो
बचाओ माँ-बहनों की लाज
आर्तनाद कर रहा, खड़ा चौराहा आज।

रमेशचन्द्र 'भारती' 'दीक्षित'
परास्नातक (हिन्दी), बाराबंकी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वयं बलिदान दें

महोदय,

आपने लिखा था कि प्रश्न गूंज रहा है...............

कौन है जो उत्तर देगा ?

कौन है जो दयानन्द की तरह सिर उठाकर खड़ा होगा ?

कौन है जो समय से टकराएगा ?

आज देव दयानन्द नहीं हैं,
पर क्या कोई दयानन्द का शिष्य भी जीवित है ?

फिर आप स्वयं ही लिखते हैं कि आज नारे नहीं काम चाहिए। बलिदान चाहिए। विष के प्याले पीने वाले वीर चाहिएँ। धर्म के लिए सिर कटाने वाले चाहिएँ—मालाओं के लिए तरसने वाले नहीं।

मान्यवर, गुरु गोविन्दसिंह जी ने अपने पिता गुरु तेगबहादुर जी को कहा था कि भला आपसे बढ़कर कोई और है। आप जैसे बड़े महात्मा जो अपने सिर की बलि देकर हिन्दुओं को अत्याचारों से बचाएँ और उनके धर्म की रक्षा करें, कौन हो सकते हैं ? फिर श्री गुरु गोबिन्द सिंह ने दिल्ली में जाकर औरंगजेब जैसे महान् पक्षपाती और अत्यन्त अत्याचारी को तलाश कर कहा कि गुरु का सिक्ख अपने प्यारे पवित्र धर्म को त्यागने के बदले आप सामने खड़ा है। "मैं सिर देने को तैयार हूँ। पर अमृतसर देने को तैयार नहीं।" उस वक्त जो उन्होंने शब्द बोला था। उसका एक पद यह है—

गुरु तेग बहादर बोलया, बाँह जिन्हा दी पकड़िए। सिर दीजिए बाँह न छाँड़िए। धर्म की रक्षा के लिए सिर दीजिये पर धर्म न छोड़िए। मैं भी आपसे कहूँगा कि बलिदान के लिए आपसे अधिक सशक्त और पवित्र व्यक्तित्व किसका हो सकता है।

खतौली (मुजफ्फरनगर) **—सन्त ओंकरानन्द 'यात्री'**

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महोदय,

'जन-ज्ञान' के सफल और सोद्देश्य संचालन के लिए हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें। फरवरी १९७४ के अंक में योग विषयक स्वामी ब्रह्म मुनि जी का लेख बड़ा ही उपादेय और समसामयिक है। पुनः मार्च वाले अंक में गायत्री मन्त्र पर प्रहार' का सही उत्तर लिखने वाले पं० दुर्गा शंकर महिमवत् सत्यार्थी को हम सबों की बधाई भेज दें। यह लेख देखकर स्वामी समर्पणानन्द की लेखनी याद आती है। आज ऐसे ही लेखकों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

आप ऐसे लेखकों की खोज करने में सफल रहे हैं, अतः पुनः हमारी शुभकामनाएं स्वीकार करें। प्रभु, आपको वेद मार्ग प्रशस्त करने में सहायता दें।

आर्यसमाज, मुजफ्फरपुर **—ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी**

महोदय,

सादर नमस्कार। जन-ज्ञान का अप्रैल अंक समय पर प्राप्त हुआ। इसके लिए आपको धन्यवाद। "जन-ज्ञान" मुझे जितना दिलचस्प, ज्ञानवर्धक लगता है, उसका मैं शब्दों में वर्णन करने में असमर्थ हूँ। आपकी जागरूक दृष्टि की देख-रेख में इसका प्रकाशन हो रहा है, वह अति प्रशंसनीय है। आपने जो वैदिक धर्म प्रचार का बीड़ा उठाया है उसके लिए मैं परमपिता परमेश्वर से आपकी सकुशलता की शुभकामनाएं सदैव करता हूँ। इस अंक का मुख पृष्ठ अति पसन्द आया, इसके अलावा "सम्पादकीय", "मैं हृदय मन्दिर से लिख रहा हूँ" और किस-किस का वर्णन करूं, मुझे तो पूरी पत्रिका ही बहुत पसन्द आई।

आपका—

लाडनूं **—प्रेम प्रकाश आर्य**

प्रिय बहिन !

अग्रिम वृत्त यह है कि राखी सम्प्रेषण-पत्रिका एवं तदर्थ समाचार विदित हुआ—यह आपकी पत्रिका दिनांक ६-८ को प्राप्त हुई है। आपने अकिंचन ग्रामीण बन्धु को सम्बोधित किया है। आपका पुनीत भव्य जीवन और कहाँ मुझ जैसा अशक्त अकिंचन बन्धु। आपकी लोकोत्तर-प्रतिभा, लेखन, कौशल, ज्ञानगरिमा का पुनीत प्रसारण एवं ज्ञान वैभव अपने जैसे आप हैं।

भारतीय महिलाओं में आपका उत्कृष्ट स्थान है।

मैं तो आपके जनज्ञान की गरिमा को पूर्णतः अनुभव करता हूँ।

सिसौली टाउन, मु० नगर **—सुरेन्द्र मोहन शास्त्री**

आदरणीय,

जनज्ञान जुलाई-अगस्त अंक में शताब्दी के बारे में पढ़ा। कार्यक्रम ४ में भारत सरकार से निवेदन आदि है वहाँ पर इसके बजाय "संयुक्त राष्ट्र संघ व सब राष्ट्रीय सरकारें" ऐसा करावें। क्योंकि आर्य समाज का लक्ष्य "संसार का उपकार"

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है। क्या आप शैक्षिक-अनुसंधान सम्बन्धी कार्यक्रम भी ले रहे हैं। जैसे—

(१) सारे गुरुकुलों को विश्वविद्यालयों में सूत्रबद्ध करना।

(२) सारे आधुनिक शिक्षालयों को सूत्रबद्ध करना।

(३) विश्वविद्यालयों, शिक्षामण्डलों में वेद सम्बन्धी पाठ्यचर्या में दयानन्द वेदभाष्यभूमिका आदि वैशिष्ट कराना।

(४) ऋषि ने ५२ ग्रन्थ पढ़ने को संस्कार विधि के वेदारम्भ संस्कार में कहा है, उनमें जिन ग्रन्थों के हिन्दी अनुवाद नहीं हुये, उनका अनुवाद कराना।

(५) इन ५२ ग्रन्थों के सुगमसंस्करण (मातृ भाषा में) प्रकाशित कराना।

(६) वेद के आधार पर परमाणु दूषण निरोध, वायु-जल-पृथ्वी दूषणनाश, विद्युत् चालित विमान निर्माण, असाध्य रोगोपचार, वेद-शास्त्र संगति, वेद-अन्यमत ग्रन्थ संगति, प्राच्यशास्त्र-वर्तमान शास्त्र संगति सम्बन्ध अनुसंधान आरम्भ कराना।

(७) जहां-जहां जो-जो वैदिक अनुसंधान हो रहा है उनकी सूचना पत्रिका में प्रकाशित कराना।

(८) आर्य समाज संगठन की कमी दूर करना—जैसे राष्ट्रीय व जिला स्तर का प्रतिनिधि सभा होना, पदाधिकार वर्णाश्रम-नित्ययज्ञ पालने वाले व वैदिक स्वाध्यायी लोगों को ही।

इन पर विस्तार से चर्चा विद्यार्थी जी से हो चुकी है, उपर्युक्त कार्यक्रमों के लिये मेरी सेवायें ले सकते हैं।

अजमेर —रक्षक

महानुभाव, सादर नमस्ते !

मैं आपका ध्यान निम्न बातों की तरफ आकृष्ट करना चाहता हूँ। प्रतिवर्ष अंग्रेजी वर्ष (ग्रिग्रेटियन कलैण्डर) के अनुसार इस देश में नव-वर्ष दिवस मनाया जाता है और तदनुसार १ जनवरी से ३१ दिसम्बर तक के कलैण्डर और डायरी विभिन्न संस्थानों द्वारा बड़े भव्य-रूप एवं प्रचुर मात्रा में प्रकाशित किये जाते हैं। तथा स्वतन्त्रता के इन २६ वर्षों में भी हमारे मन, बुद्धि एवं मस्तिष्क इतने अपरिपक्व हैं कि हम अपना नव-वर्ष दिवस और संवत्सरारम्भ का महत्व समझ सकने में सर्वथा अक्षम हैं। क्यों हम दिनानुदिन वर्ष-प्रतिपदा को विस्मृत करते जा रहे हैं। यह मात्र विक्रमीय संवत् का प्रथम दिवस ही नहीं है; वरन् सृष्टि के आरम्भ की भी यही तिथि है। विश्व के किसी भी देश या जाति के पास काल-गणना का इतना पुष्ट एवं सर्वथा प्रामाणिक इतिहास नहीं है। फिर भी अपने राष्ट्रीय-गौरव के इस अति महत्वपूर्ण दिवस के प्रति हमारी उपेक्षा का कारण सम्भवतः हमारी पश्चिमामुखी मनोवृत्ति ही है। गम्भीरता-पूर्वक विचार का विषय है कि हमारी सांस्कृतिक, सामाजिक तथा धार्मिक संस्थायें वर्ष प्रतिपदा से प्रारम्भ होने वाले कलैण्डर और डायरियां प्रकाशित करें। ऐसे तिथि-पत्रों में तिथि मोटे नागरी अंकों में और तदनुसार अंग्रेजी तारीख छोटे नागरिक अंकों में मुद्रित की जानी चाहिए। मेरा ऐसा दृढ़

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वास है कि इस प्रकार के कलैण्डरों और डायरियों के प्रचार-प्रसार से जन-जन में राष्ट्रीय-गौरव एवं स्वाभिमान की सुपष्ट भावना प्रादुर्भूत होगी।

दयानन्द संस्थान स्वामी दयानन्द सरस्वती के विचारों को विश्व में फैलाने का संकल्प लेकर अनेक बाधाओं का सामना करते हुए आगे बढ़ रहा है। स्वामी जी ने प्राचीन भारतीय संस्कृति का उद्‌घोष डंके की चोट पर किया था। स्वामी जी द्वारा रचित लम्बे ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में बहुत ही प्रभावशाली ढंग से सृष्टि से लेकर आज तक की तिथियों का लेखा जोखा है।

दयानन्द संस्थान के प्रकाशन जनज्ञान में भारतीय संस्कृति स्वामी दयानन्द के सिद्धान्तों और वेदों के प्रचार प्रसार के साथ राष्ट्रीय विचारधारा की भी बहुतायत रहती है।

अतः मैं जनज्ञान का सदस्य होने के नाते संस्थान को यह सुझाव देता हूँ कि क्यों न संस्थान द्वारा इस महान् और साहसिक कदम का प्रयोग किया जाए। जिससे पाश्चात्य संस्कृति और शिक्षा के अंध-भक्तों को सीख दी जा सके। साथ ही जनज्ञान के द्वारा मत संदेश आर्यों के बीच फैलाकर उनका मत भी जाना जाए। आशा है दयानन्द संस्थान इस पर विचार करेगा और आर्यों का इसमें भरपूर सहयोग मिलेगा।

भगवान की कृपा से दयानन्द संस्थान की सदैव उन्नति होती रहे और इसके आलोचकों को सोचने के लिए बाध्य होना पड़े।

मोतिहारी (बिहार) — **रामकिशोर शर्मा**

मान्यवर,

निवेदन यह है कि आपका कृपा-पत्र आज ही मिला जब मैं अपने प्रदेश की राजधानी लखनऊ से लौटा। मुझे अत्यन्त ही हार्दिक प्रसन्नता एवं गर्व का अनुभव हुआ कि मैं भारत की राजधानी के एक ऐसे व्यक्ति विशेष को पत्र लिख रहा हूँ जिसने अपने व्यक्तित्व की छाप न केवल भारत व उसकी राजधानी में ही वरन् सम्पूर्ण आर्य जगत् में छोड़ रखी है। मैंने अन्य आर्य संस्थाओं के जैसा कि वे अपने को आर्य घोषित करती हैं द्वारा प्रतिपादित व सम्पादित पत्र-पत्रिकाओं को देखा है उन्होंने भी अपने व्यक्तिगत स्वार्थ एवं महानता के लिये आशातीत कृत्रिम एवं मनघड़न्त घटनाओं को आधार बनाकर आप के प्रति अनर्गल प्रचार करके उत्तरोत्तर बढ़ती हुई आप की व संस्थान की प्रतिष्ठा को ठेस पहुँचाने का असफल प्रयास कर रही हैं किन्तु इसके विपरीत इसकी प्रतिक्रिया आर्य जगत् में आप के अनुकूल है। दूसरे शब्दों में यह भी कहा जा सकता है कि यह किसी व्यक्ति मात्र की नहीं किन्तु इसके साथ-साथ उसके द्वारा प्रतिपादित व सम्पादित कार्यों का भी परिणाम होता है ऐसा मेरा कुछ व्यक्तिगत अनुभव है।

आपके उपरोक्त पत्र के संदर्भ में मुझे निवेदन करना है कि किसी भी कार्य के करने में एवं संकल्प को पूर्ण करने में तन, मन एवं धन की आवश्यकता होती है। जैसा कि यह सत्य है कि आप अपने अभीष्ट उद्देश्य की पूर्ति हेतु दृढ़ संकल्प हैं और इसके लिये तन एवं मन से लगे हैं, किन्तु इसके साथ-साथ धन की व्यवस्था के लिये भी क्षमता से कहीं अधिक करते हैं। यह बात इतनी ही सत्य है जितनी कि हो

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकती है। आज यह तो स्पष्ट है कि कागज के मूल्य किस गति से आगे की ओर बढ़ते जा रहे हैं। यह तो सब आप के पत्र में प्रदत्त एवं उल्लेखित समंकों से प्रदर्शित होती है।

हापुड़ —नरेन्द्रकान्तार्य

सम्पादक जी,

मैं प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप अपना स्वास्थ्य हम आर्यों के लिये बनाये रखें। जिससे कि 'जन ज्ञान' के माध्यम से बराबर हृदय को आनन्दित करने वाला लेख एवं देश को आगे बढ़ाने वाला नारा पढ़ने को मिले। आप के लेख को पढ़ने के बाद हृदय में बहुत सी भावनाएँ उठती रहती हैं कि मैं किस प्रकार आपकी मदद करूं। जिससे कि आपको कुछ राहत मिले। वैसे तो मैं इतना दूर हूँ कि चाह कर भी मैं आपको शारीरिक मदद नहीं दे सकता हूँ और इतना गरीब हूँ कि दान देने के लिये उतनी राशि भी उपलब्ध नहीं जिससे कि आपको कुछ वेद भाष्य में मदद मिले फिर भी मैंने यह प्रतिज्ञा की है कि जब तक मैं जिन्दा रहूँगा तब तब बराबर इधर-उधर से भीख मांग करके भी रु० ५१-०० भेजता रहूँगा। मार्च में ५१) हम भेज चुके हैं। इस प्रकार अपने तरह से मैं आपसे सिर्फ आशीर्वाद चाहता हूँ ईश्वर मुझे इस योग्य रखे कि मैं तन, मन और धन से महर्षि के उद्देश्यों की पूर्ति के लिये अपने को न्योछावर कर दूं।

कदम कुआ, पटना —कौशल किशोर मणि त्रिपाठी

आदरणीय श्रीमान्

भारतेन्द्रनाथ जी,

आपकी "वैदिक अर्थशास्त्र परिचय" पुस्तक मिली। पढ़ लिया। आर्यसमाजी लोगों में भी धन के बारे में बहुत ही अज्ञान था। सभी के दिमाग में दुनिया के वाद थे और वो ही वाद वेद में है ऐसा समर्थन करने निकले थे। जो असत्य है और आज लोगों ने अपनाया हैं वो ही वेदों में है। बोल कर सब लोगों को वेद को मानने उगाने का विचार आज चल रहा है और यह भी राजनैतिक ढंग से। आपने परिचयात्मक धन की व्याख्या बहुत ही अच्छी की है। उसके साथ-साथ सीलिंग, राष्ट्रीयकरण, पुत्र को पिता के धन का अधिकार आदि प्रश्नों पर कुछ आर्य समाजी लोगों के विचार समाजवाद, साम्यवाद के आधार पर चल रहे हैं। वैदिक विचारधारा आत्मतत्व और भौतिक दोनों के आधार पर है। और आज के सभी वाद केवल भौतिकवादी हैं। यह हमारे आर्य समाजी लोगों के भी दिमाग में नहीं आ रही है। आपने बहुत ही सुन्दर विश्लेषण किया है। पुस्तक तो लाजवाब है। निरपेक्ष, केवल सत्य ही आपने बताने की कोशिश की है। भूमिका भी एक महान् विचारवंत की है। पं० गुरुदत्त ने भी सही भारतीय भाव जाना है। आपको जितनी बधाई दें उतनी थोडी रही है। बहुत ही थोड़े समय में आपने आर्य जगत् को जगाने का और सही दिशा बताने का गौरवपूर्ण कार्य किया है। महर्षि दयानन्द ने दुनिया के विचार बदलने को ही इस बिगड़ी हुई दुनिया को दवा बता दी थी पर इस बीच में भूल गये थे। और अब तो ऐसे संक्रमण पर हैं कि राज्य हाथ में है। वे सब आर्य ही बना देंगे, ऐसे विचार पनप

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहे हैं। यह कपोल कल्पना भर अच्छी लगती है। पर जो दिशा बताने का काम किया है उससे आर्य जनता सीख सकती है। मुझे तो बहुत ही आनन्द होता है। प्रभु से प्रार्थना है कि आपको स्वास्थ्य, बल, धैर्य देवें और ऐसा ही महर्षि दयानन्द ने बताया। उसी रास्ते पर सभी को ले जाने की कृपा करें।

—आपका भाई

आदरणीय बहिन जी,

सेवा में निवेदन है कि रक्षा-बन्धन के पवित्र त्योहार पर आपकी भेजी हुई राखी प्राप्त हुई। धन्यवाद। ३-८-७४ को वेद प्रकाशन यज्ञ में एक छोटी सी आहूति (केवल ५१-००) मैंने भी डाली। काम आपका बहुत ही बड़ा है। ऐसे संस्थान की जितनी भी सेवा की जाये थोड़ी है। परन्तु बहिन जी ! आपका छोटा भाई केवल एक प्राईमरी पाठशाला का शिक्षक ही है और साधन सीमित हैं। मैं इकठ्ठी राशि तो अधिक नहीं दे सकता। परन्तु प्रतिवर्ष इसी दिन ५१-००) तो अवश्य ही भेजता रहूँगा।

पत्र आपका एम. ओ. करवाने के बाद मिला इस लिए व्यक्तिगत नाम से एम. ओ. करवा दिया। आगे संस्थान के नाम से ही करवाया करूंगा। इस संस्थान में कार्य करने वाले सभी देव मुझे यहीं से दिखाई देते हैं। पत्र में प्रार्थना आदि शब्द न लिखा करें। इस से बहिन जी मैं लज्जा अनुभव करता हूँ।

आपने जो इतना महान् कार्य करने का बेड़ा उठाया है। उसे परमपिता परमेश्वर अवश्य ही पूरा करेंगे। क्योंकि आप उन्हीं की आज्ञा का पालन कर रहे हैं। वेद द्वारा उन्होंने तो आदेश दिया है।

तन्तुं तन्वन् रजसो भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान्।
अनुल्बणं वयत जोगुवामपो,
मनुर्भव जनया दैव्यं जनम्॥ ऋ० १०। ५३। ६।

ज्ञान प्राप्त करो, ज्ञान को सुरक्षित रखो तथा ज्ञान का प्रकाश करो। ये सभी प्रभु की आज्ञायें हैं और आप प्रभु की आज्ञाओं का पालन कर रहें हैं सो सफलता निश्चित है।

मेरे ग्राम से कोई और भाई तैयार हुआ तो उसे भी इस यज्ञ में आहुति डालने की प्रेरणा करूंगा।

आपका अनुज भ्राता

सिरसा —चन्द्रप्रकाश शर्मा

आदरणीय भाई भारतेन्द्रनाथ जी,

हमारे भारतवर्ष का बड़ा ही सौभाग्य है कि आप जैसे भारतीय संस्कृति के अनन्य प्रेमी भक्त जन अपनी भारतीय संस्कृति व वेदों के महान् गौरव से विश्व व दिग्-दिगान्तरों में प्रकाश करने के लिये हर प्रकार का संकट उठाकर भी जो महान्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कार्य कर रहें हैं। हमारे लिए आप व आपका समस्त परिवार ही प्रशंसा के योग्य है। भगवान से यही प्रार्थना है कि आप अपने इस महान् कार्य में कितने ही संकट आवें आगे बढ़ते रहें। जब आपने महान् कार्य अपने कंधों पर उठाया है उसमें आपको अधिक से अधिक सफलता मिले। संकट तो आते ही हैं। अपने गुरुदेव दयानन्द ने भी जीवन भर संघष करके सत्य वैदिक धर्म की पताका फहराई, उस पताका को आप जैसे विद्वान् ही हिम्मत करके आगे बढ़ा रहे हैं। देश पतन के रास्ते पर जा रहा है। अधर्म, अत्याचार, पापाचार, भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता और नैतिकता का बोलबाला है, पश्चिम की अंधी आँधी में सब बहे जा रहे हैं, देश का नवजवान पथभ्रष्ट हो रहा है, उसे मार्ग दिखाने वाला चाहिये, जिसका राजा ही खराब है उसकी प्रजा का क्या होगा ?

ऋषि दयानन्द का हमारे ऊपर महान् ऋण है। ऋषि ऋण से उऋण होने के लिये हमें न मालूम कितनी बार जन्म लेना होगा, भगवान हम सब को शक्ति दें, हम अपने पथ पर अडिग रहें। आर्य समाज जो ऋषि का पुजारी कहाता है, ऋषि के सन्देश को भूल रहा है, हमारी सन्तान पथभ्रष्ट हो रही है, ईश्वर ही मदद करेंगे। मैं ५००) भेज रही हूँ। ईश्वर आप लोगों को और भी शक्ति व हिम्मत देगा।

—आपकी बहन

नागपुर —चन्द्रकान्ता विद्यालंकृता

जनज्ञान की विशेषता

(१)

जन ज्ञान रहा चल दयानन्द लक्ष ले के,
आर्ष ग्रन्थों का आज विशेष प्रचार है।
ग्राम-गाम घर-घर 'सत्यार्थ-प्रकाश रहा,
धन्य भारतेन्द्रनाथ परम विचार है॥

तड़फ वही है आज आर्य काम करने की,
वैसा ही किया है आज समय की पुकार है।
जनज्ञान, हेतु देव, रात-दिन किये एक,
असीमोत्साह साथ लगा परिवार है॥

(२)

जनज्ञान साहित्य का प्रचार विशेष होगा,
शताब्दी आई आर्य गौरव जताने को।
तब, अब आगे होगा, इसी पे विचार अवश्य,
जनज्ञान देगा सूझ-बूझ, चलें पाने को॥

जन-जन हृदय 'जनज्ञान का प्रकाश होवे,
आगे बढ़ेंगे भव्य-भावना बढ़ाने को।
वैदिक सुधर्म की गुंजायें 'धनसार' नाद,
ओ३म् का अखण्ड प्रिय ध्वज फहराने को॥

कवि कस्तूरचन्द "धनसार"
प्रधान आर्य समाज पीपाड़ शहर (राज०)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् माननीय श्री जगदेवसिंह जी 'सिद्धान्ती' द्वारा प्रस्तुत

श्री मदनमोहन, विद्युत् अभियान्त्रिकी, प्रथम वर्ष। ए-एफ-३ गंगा भवन, रुड़की विश्वविद्यालय, रुड़की (उ० प्र०) ने निम्नलिखित प्रश्न भेजकर उत्तर भेजने की अभिलाषा प्रकट की है। अतः यथामति उत्तर जनज्ञान में प्रकाशनार्थ भेजा जाता है।

प्रश्न १. आर्य को शिखा और जनेऊ क्यों आवश्यक है?

उत्तर— आर्यों के लिये वैदिक धर्म के अनुसार वर्ण-आश्रम की मर्यादा का पालन करना आवश्यक है। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चार वर्ण आर्यों में माने जाते हैं तथा ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास चार आश्रम हैं। वर्णों और आश्रमों के पृथक् पृथक् कर्त्तव्य हैं।

पहिले तीनों आश्रमों में चोटी और जनेऊ का रखना आवश्यक है, परन्तु संन्यास आश्रम ग्रहण करने पर शिखा और सूत्र (चोटी-जनेऊ) का त्याग कर दिया जाता है। अतः यह मानना कि प्रत्येक आर्य को चोटी और जनेऊ रखना अनिवार्य किया है, यह धारणा ठीक नहीं है। तीन आश्रमों (ज्ञान, कर्म और उपासना) में जिस प्रयोजन से चोटी जनेऊ रखने होते हैं, संन्यास आश्रम लेने पर वह प्रयोजन पूर्ण हो जाने पर उन दोनों का होम करना पड़ता है। यह ठीक है कि वर्ण चार हैं, परन्तु ब्रह्मचारी का वर्ण नहीं होता। गृहस्थ का ही वर्ण होता है। वानप्रस्थ और संन्यास में वर्ण के कर्त्तव्य पूरे हो जाते हैं, अतः वे दोनों वर्ण-धर्म से पृथक् हो जाते हैं। चार आश्रमों में ब्रह्मचर्य आश्रम का पालन आवश्यक होता है, अन्यथा वह पतित माना जाता है। चारों आश्रमों का पालन करना भी सब के लिये अनिवार्य नहीं। कोई ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास भी ग्रहण कर सकता है। यदि गृहस्थ हो जाता है तब सीधा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

संन्यासी हो सकता है। चाहे वानप्रस्थ न करें। यदि क्रम से आश्रमों का पालन करे तो ब्रह्मचर्य से गृहस्थ, वानप्रस्थ, फिर संन्यास ले सकता है।

केवल वैदिक धर्म के मानने वाले आर्यों में ही नहीं, अपितु जैन और बौद्ध धर्म के मानने वालों में भी चोटी-जनेऊ की प्रथा अब भी प्रचलित है। जापान आदि देशों में मोटी शिखा रखी जाती है।

जनेऊ और चोटी रखना आर्यों में धार्मिक और सामाजिक चिह्न माने जाते हैं। चिह्नों से पता हो जाता है कि ये पहिले तीन आश्रमी हैं।

ऐसे चिह्न सेना और पुलिस में भी पूरी तरह मिलते हैं। इन से पदों का बोध हो जाता है। अतः चिह्न रखना लाभदायक है।

इसी चोटी-जनेऊ रखने पर विधर्मियों द्वारा आर्यों (हिन्दुओं) ने अत्याचार के समय प्राणों की आहुतियां दी हैं। विधर्मी लोगों ने जनेऊ तुड़वाये, इस बात का वर्णन पत्रों पर अब भी लिखा जाता आ रहा है। अति खेद से लिखना पड़ता है कि आज आर्यों की सन्तान ही नहीं, अपितु बड़े बड़े विद्वान् भी जनेऊ और चोटी का त्याग कर रहे हैं। यह दुष्परिणाम आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय न करने का है। आर्यसमाज के विद्वानों ने चोटी और जनेऊ पर उत्तम-उत्तम ग्रन्थ लिखे हैं। प्रश्नकर्त्ता से निवेदन है कि पूज्य आचार्य भगवान् देव जी (स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती) ने शिखा, सूत्र और मेखला (तगड़ी) पर बहुत उत्तम ग्रन्थ लिखा है, उसको पढ़कर लाभ उठावें।

इतना ही नहीं, मुसलमानों में तुर्की टोपी के ऊपर बाहर बाल लटकाये जाते थे। यह भी चोटी का द्योतक है। आशा है कि श्री मदनमोहन जी हमारे निवेदन पर विचार करेंगे। इससे उन्हें लाभ ही हो सकता है, हानि कदापि नहीं।

प्रश्न—२. अब अत्यन्तावश्यक प्रश्न पर आगे हम विचार करते हैं—

इस प्रश्न में वह सज्जन लिखते हैं—

"कि मैं यह मानने को तैयार नहीं कि वेद ईश्वरकृत हैं"

उत्तर—२. यदि आप सत्यार्थप्रकाश का ७वां समुल्लास पढ़ लेवें जहां वेद और ईश्वर का वर्णन है तो आपकी शङ्का स्वयं दूर हो जावे। इसी प्रकार ऋग्वेदादि-भाष्य-भूमिका का वेदोत्पत्ति प्रकरण पढ़ें तब भी आपका सन्देह स्पष्ट रूप से दूर हो सकता है। खेद है कि आर्य बन्धु आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना और मानना तथा सुनना चाहते ही नहीं। दूसरे लोगों की शङ्काओं में फंस जाते हैं। लीजिये, सत्यार्थप्रकाश का स्थल पढ़िये और विचार कीजिये—

"प्रश्न— जब [ईश्वर] निराकार है तो वेदविद्या का उपदेश बिना मुख के वर्णोच्चारण कैसे हो सका होगा ? क्योंकि वर्णों के उच्चारण में ताल्वादि स्थान, जिह्वा का प्रयत्न अवश्य होना चाहिये।

उत्तर— परमेश्वर के सर्वशक्तिमान् और सर्वव्यापक होने से जीवों को अपनी व्याप्ति से वेदविद्या के उपदेश करने में कुछ भी मुखादि की अपेक्षा नहीं है, क्योंकि मुख जिह्वा से वर्णोच्चारण अपने से भिन्न को बोध होने के लिये किया जाता है, कुछ अपने लिये नहीं। क्योंकि मुख जिह्वा के व्यापार करे बिना ही मन में अनेक व्यवहारों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

का विचार और शब्दोच्चारण होता रहता है। कानों को अंगुलियों से मूंद के देखो सुनो कि विना मुख जिह्वा ताल्वादि स्थानों के कैसे कैसे शब्द हो रहे हैं, वैसे जीवों को अन्तर्यामी रूप से उपदेश किया है। किन्तु केवल दूसरों को समझाने के लिये उच्चारण करने की आवश्यकता है। जब परमेश्वर निराकार सर्वव्यापक है तो अपनी अखिल वेदविद्या का उपदेश जीवस्थस्वरूप से जीवात्मा में प्रकाशित कर देता है। फिर वह मनुष्य अपने मुख से उच्चारण करके दुसरों को सुनाता है इसलिये ईश्वर में यह दोष नहीं आ सकता।"

माननीय सज्जन! इसी प्रकार ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका को पढ़िये और विचार कीजिये। सब स्थिति स्पष्ट होकर आपके प्रश्न का उत्तर मिल जावेगा और सन्देह की निवृत्ति हो जावेगी।

पहिले आर्य बन्धु स्वाध्याय करते थे, उपदेश सुनते थे। सत्संग करते थे। योगाभ्यास करते थे। उत्सवों में जाकर शङ्काओं की निवृत्ति करते थे। खेद है कि अब आर्य सन्तान विरोधी पक्ष के समाचारपत्रों को पढ़कर मतिभ्रम में फंस जाते हैं। स्वयं भ्रम दूर करने के लिये यत्न नहीं करते। अखबारों में शङ्का प्रकाशित करा कर ही सन्तोष कर लेते हैं। परन्तु इतना तो यत्न पर्याप्त नहीं है।

आशा है हमारे आर्य भाई मेरे उपर्युक्त लेख पर विचार करेंगे और ऋषियों के ग्रन्थों का पठन और मनन करेंगे।

—जगदेवसिंह सिद्धान्ती, शास्त्री

नमन उन्हें मेरा शतबार !

=रामधारीसिंह 'दिनकर'

नमन उन्हें मेरा शतबार !
सूख रही है बोटी — बोटी,
मिलती नहीं घास की रोटी,
गढ़ते हैं इतिहास देश का, सहकर कठिन क्षुधा की मार।
नमन उन्हें मेरा शतबार !

अर्ध नग्न जिनकी प्रिय माया,
शिशु विषण्ण-मुख, जर्जर काया,
रण की ओर चरण दृढ़ जिनके, मन के पीछे करुण पुकार।
नमन उन्हें मेरा शतबार !

जिनकी चढ़ती हुई जवानी,
खोज रही अपनी कुरबानी,
जलन एक जिनकी अभिलाषा, मरण एक जिनका त्यौहार।
नमन उन्हें मेरा शतबार !

दुःखी स्वयं जग का दुःख लेकर
स्वयं रिक्त सबको सुख देकर,
जिनका दिया अमृत जग पीता, कालकूट उनका आहार।
नमन उन्हें मेरा शतबार !

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दार्शनिक चर्चा

ईश्वर की सिद्धि में प्रत्यक्ष प्रमाण भी है

जगदेवसिंह सिद्धान्ती, शास्त्री, देहली

हम इस उपर्युक्त मन्तव्य की पुष्टि में महर्षि दयानन्द रचित 'सत्यार्थप्रकाश' के प्रमाण प्रस्तुत करते हैं —

(१) इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानमव्यपदेश्यमव्यभिचारि व्यवसायात्मकम्प्रत्यक्षम् ॥ न्यायदर्शन । अ० १ । आह्निक १ । सूत्र ४ ॥

[अर्थ] "जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा और घ्राण का शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गन्ध के साथ अव्यवरहित अर्थात् आवरण रहित सम्बन्ध होता है, इन्द्रियों के साथ मन का और मन के साथ आत्मा के संयोग से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु जो व्यपदेश्य अर्थात् संज्ञासंज्ञी के सम्बन्ध से उत्पन्न होता है वह ज्ञान न हो । जैसा किसी ने किसी से कहा कि तू "जल ले आ" वह लाके उसके पास धर के बोला कि "यह जल है" परन्तु वहां "जल" इन दो अक्षरों की संज्ञा लाने वा मंगवाने वाला नहीं देख सकता । किन्तु जिस पदार्थ का नाम जल है वही प्रत्यक्ष होता है और जो शब्द से ज्ञान उत्पन्न होता है वह शब्द प्रमाण का विषय है । "अव्यभिचारि" जैसे किसी ने रात्रि में खम्भे को देख के पुरुष का निश्चय कर लिया जब दिन में उसको देखा तो रात्रि का पुरुषज्ञान नष्ट होकर स्तम्भज्ञान रहा । ऐसे विनाशिज्ञान का नाम व्याभिचारी है । सो प्रत्यक्ष नहीं कहाता । "व्यवसायात्मक" किसी ने दूर से नदी की वालू को देखके कहा कि "वहां वस्त्र सूख रहे हैं वा और कुछ है" "वह देवदत्त खड़ा है वा यज्ञदत्त" जब तक एक निश्चय न हो तब तक प्रत्यक्ष ज्ञान नहीं है किन्तु जो अव्यपदेश्य, अव्यभिचारि और निश्चयात्मक ज्ञान है उसी को प्रत्यक्ष कहते हैं ॥ (तृतीय समुल्लास)

(२) यही न्या० द० का सूत्र सप्तम समुल्लास में इस प्रकार अर्थ सहित दिया गया है । "जो श्रोत्र, त्वचा, चक्षु, जिह्वा, घ्राण और मन का शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध, सुख, दुःख, सत्यासत्य आदि विषयों के साथ सम्बन्ध होने से ज्ञान उत्पन्न होता है उसको प्रत्यक्ष कहते हैं परन्तु वह निर्भ्रम हो । अब विचारना चाहिये कि इन्द्रियों और मन से गुणों का प्रत्यक्ष होता है गुणी का नहीं । जैसे चारों त्वचा आदि इन्द्रियों से स्पर्श, रूप, रस और गन्ध का ज्ञान होने से गुणी जो पृथिवी उसका आत्मायुक्त मन से प्रत्यक्ष किया जाता है वैसे इस प्रत्यक्ष सृष्टि में रचना विशेष आदि ज्ञानादि गुणों के प्रत्यक्ष होने से परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष है और जब आत्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन और इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी बात के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है उस समय, जीव की इच्छा ज्ञानादि उसी इच्छित विषय पर झुक जाता है। उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शङ्का और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशङ्कता और आनन्दोत्साह उठता है, वह जीवात्मा की ओर से नहीं किन्तु परमात्मा की ओर से है और जब जीवात्मा शुद्ध होके परमात्मा का विचार करने में तत्पर रहता है उसको उसी समय दोनों प्रत्यक्ष होते हैं। जब परमेश्वर का प्रत्यक्ष होता है तब अनुमान आदि से परमेश्वर के ज्ञान होने में क्या सन्देह ? क्योंकि कार्य को देख के कारण का अनुमान होता है।''

(३) अब द्वादश समुल्लास में ऋषि इस प्रकार लिखते हैं :—

''क्या तुम जो प्रत्यक्ष पदार्थ हैं उन्हीं को मानते हो अप्रत्यक्ष को नहीं ? जैसे कान से रूप और चक्षु से शब्द का ग्रहण नहीं हो सकता वैसे अनादि परमात्मा को देखने का साधन शुद्धान्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास से पवित्रात्मा परमात्मा को प्रत्यक्ष देखता है जैसे विना पढ़े विद्या के प्रयोजनों की प्राप्ति नहीं होती वैसे ही योगभ्यास और विज्ञान के विना परमात्मा भी नहीं दीख पड़ता, जैसे भूमि के रूपादि गुण ही को देख जानके गुणों के अव्यवहित सम्बन्ध से पृथिवी प्रत्यक्ष होती है वैसे इस सृष्टि में परमात्मा की रचना विशेष लिङ्ग देख के परमात्मा प्रत्यक्ष होता है और जो पापाचरणेच्छा समय में भय, शङ्का, लज्जा उत्पन्न होती है वह अन्तर्यामी परमात्मा की ओर से है इससे भी परमात्मा प्रत्यक्ष होता है। अनुमान के होने में क्या सन्देह हो सकता है ॥''

(४) सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास के आरम्भ में ऋषि ने लिखा है—

''हे परमेश्वर ! आप ही अन्तर्यामीरूप से प्रत्यक्ष ब्रह्म हो। मैं आप ही को प्रत्यक्ष ब्रह्म कहूँगा क्योंकि आप सब जगह में व्याप्त होके सब को नित्य ही प्राप्त हैं।''

'यो विद्यात् ब्रह्म प्रत्यक्षम्। अथर्ववेद, काण्ड ६, अनुवाक ३, सूक्त १'

इस मन्त्र को संस्कार विधि के संन्यास प्रकरण में ऋषि दयानन्द ने उद्धृत किया है और निम्न अर्थ लिखा है :—

''जो पुरुष (प्रत्यक्षम्) साक्षात्कारता से (ब्रह्म) परमात्मा को (विद्यात्) जाने।''

(६) ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका के उपासना प्रकरण में महर्षि जी ने छान्दोग्य उपनिषद् के प्रपाठक ८, खण्ड १, श्लोक १ का अर्थ इस प्रकार लिखा है—

''जिस समय इन सब साधनों से परमेश्वर की उपासना करके उसमें प्रवेश किया चाहें उस समय इस रीति से करें कि—

(अथ यदिदं०) कण्ठ के नीचे दोनों स्तनों के बीच में और उदर के ऊपर जो हृदय देश है, जिस को ब्रह्मपुर अर्थात् परमेश्वर का नगर कहते हैं, उसके बीच में जो गर्त है उसमें कमल के आकार वेश्म अर्थात् अवकाश रूप एक स्थान है और उसके बीच में जो सर्वशक्तिमान् परमात्मा बाहर भीतर एक रस होकर भर रहा है वह आनन्दस्वरूप परमेश्वर उसी प्रकाशित स्थान के बीच में खोज करने से मिल जाता है। दूसरा उसके मिलने का कोई उत्तम स्थान वा मार्ग नहीं है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टिप्पणियाँ—

(१) संख्या में प्रत्यक्ष ज्ञान के लक्षण की विस्तृत व्याख्या की है और लक्षण में होने वाले दोषों का निराकरण किया है। स्पष्ट किया गया है कि इन्द्रियों और विषयों का सम्बन्ध आवरण रहित अर्थात् व्यवधान के विना होना चाहिये। कोई रुकावट बीच में न रहे।

(२) संख्या में बताया है कि इन्द्रियों और मन से गुणों का ग्रहण होता है गुणी का नहीं। पुनः आत्मायुक्त मन से गुणी का ग्रहण होता है। इसी प्रकार परमात्मा द्वारा रचित सृष्टि और उसके ज्ञान आदि गुणों का ग्रहण होने पर परमेश्वर का भी प्रत्यक्ष होता है तथा उदाहरण से जीव में होने वाले अच्छे वा बुरे कर्मों का परिणाम भय आदि अथवा आनन्द आदि की उत्पत्ति का कारण ईश्वर है। उपासना के समय जीव को अपने स्वरूप और परमेश्वर के स्वरूप का प्रत्यक्ष होता है। प्रथम संख्या में दोषों का निराकरण निर्भ्रम शब्द से किया है।

(३) संख्या में कहा है कि ईश्वर का साक्षात्कार जीव के शुद्धान्तःकरण, विद्या और योगाभ्यास साधनों से होता है। इसी तीसरी संख्या में एक विशेष तत्त्व की ओर ध्यान दिलाया है कि ईश्वर रचित सृष्टि विशेष ज्ञान लिङ्ग देखकर गुणी परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है यहां लिङ्ग शब्द के प्रयोग किये जाने पर आर्यजगत् के एक स्वर्गीय पूज्य विद्वान् ने अपने ग्रन्थ में लिखा है कि लिङ्ग से लिङ्गी का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण में स्पष्ट नहीं, क्योंकि यह अनुमान प्रमाण का विषय है प्रत्यक्ष प्रमाण का नहीं। खेद है कि उन विद्वान् ने इस युक्ति के भाव को स्पष्ट रूप से नहीं समझा। हम इस विषय में निवेदन करते हैं कि जहां लिङ्ग और लिङ्गी एक स्थान पर क्रियावान् नहीं होते, वहां लिङ्ग से लिङ्गी का बोध अनुमान से होता है जैसे घड़ी को देख के घड़ीसाज़ का अनुमान से ग्रहण करना, परन्तु जहां घड़ीसाज़ घड़ी को बना रहा है और घड़ी भी है। वहां घड़ी लिङ्ग से घड़ीसाज़ का अनुमान नहीं किन्तु उसका प्रत्यक्ष प्रमाण से ग्रहण होता है। क्योंकि उस समय घड़ी और घड़ीसाज एक जगह हैं। भिन्न-भिन्न स्थान पर नहीं हैं। परमात्मा सृष्टि रचना सर्वव्यापक और सर्वान्तर्यामी रूप से करता है। ईश्वर की कोई रचना विशेष ऐसी नहीं जहां ईश्वर सदा विद्यमान न हो। अतः ईश्वर की रचना विशेष का ज्ञान प्रत्यक्ष प्रमाण का विषय है अनुमान का नहीं।

(४+५) संख्या में ऋषि ने ईश्वर की सिद्धि और उपनिषद् प्रमाण द्वारा प्रत्यक्ष प्रमाण जन्य बताई है।

(६) संख्या में ईश्वर की सिद्धि की रीति और स्थान का वर्णन किया है। इस प्रमाण में ऋषि ने एक बहुत महत्त्वपूर्ण बात लिखी है कि जीव के हृदय देश के बीच में जीव की खोज करने पर ईश्वर मिल जाता है। यहाँ ऋषि ने यह नहीं कहा कि "खोज करने पर ईश्वर मिल सकता है" इससे स्पष्ट हो गया कि महर्षि दयानन्द को ईश्वर का साक्षात्कार हो चुका था। वह परम योगी थे।

हम आर्य बन्धुओं से नम्र निवेदन करते हैं कि महर्षि रचित सभी आर्ष ग्रन्थों का बार-बार पारायण करते रहना आवश्यक है। इस प्रकार वैदिक सिद्धान्तों और आर्ष मन्तव्यों को शुद्ध रूप से समझने में पूर्ण सहायता मिलती रहती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्देह-निवारण

आदरणीय सम्पादक जी,

सेवा में सविनय निवेदन है कि जन-ज्ञान (हिन्दी) के मार्च १९७४ के अंक के अन्तिम पृष्ठ पर मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र का चित्र छपा है जिस में धनुष बाण के साथ हाथ में तलवार लिये दिखाया है। अभी तक जनता राम के धनुष बाण से ही परिचित थी तलवार से नहीं। हमारी मित्र मण्डली और अन्यत्र भी यह कौतूहल का विषय बन गया है। लोगबाग कहते हैं कि आर्यसमाजी ऐसे ही अनाप शनाप छापकर झगड़ा करते रहते हैं। राम के तलवार के करिश्मे से लोग सर्वथा अपरिचित हैं। मैं भी जन-ज्ञान परिवार का एक सदस्य हूँ। आप से प्रार्थना है कि जन-ज्ञान के माध्यम से इस तलवार के विषय पर प्रकाश डालें कि कब, कहां राम ने जीवन में तलवार का प्रयोग किया है ताकि लोगों का सन्देह निवारण हो सके। रामायण के किस प्रसंग में तलवार की बात आई है। कष्ट के लिये क्षमा प्रार्थी।

तेजनारायण पाण्डेय
४९/६७ रविन्द्र सरनी रिशाड़ा हुगली।

हमने श्रीमान् जी के पत्र को यथालिखित रूप में प्रकाशित कर दिया है। अब यथामति सन्देह-निवारण का निम्न पंक्तियों में यत्न किया जाता है। आशा है आर्य बन्धुवर्ग इस पर विचार कर स्वयं तथा अन्य सज्जनों को लाभ पहुँचायेंगे।

वाल्मीकि-रामायण के उद्धरण पढ़िये—

(१) बालकाण्ड के सर्ग ३७ और ३८ में लिखा है कि महर्षि विश्वामित्र ने राम और लक्ष्मण को अनेक प्रकार के शस्त्र और अस्त्रों की शिक्षा दी तथा उनके संहार के उपाय भी कहे। ३७वें सर्ग के १४वें श्लोक में कहा है—

"असिरत्नं महाबाहो ददामि नृवरात्मज।" महर्षि विश्वामित्र ने कहा कि हे राजा दशरथ के पुत्र! तुझ महाबाहु को "असिरत्न" नामक शस्त्र बतलाता हूँ। 'असि' का अर्थ तलवार लोक प्रसिद्ध है; उसके साथ 'रत्न' शब्द लगा है अर्थात् तलवारों में भी श्रेष्ठ। हथियार मूल रूप से दो प्रकार के होते हैं। एक शस्त्र जो हाथ में रखकर चलाये जाते हैं। जैसे तलवार, लाठी और मूसल आदि। दूसरे अस्त्र कहे जाते हैं जो दूसरे पर फैंक कर चलाये जाते हैं। जैसे गोली, गोले और बम, बाण, आदि। इस श्लोक से सिद्ध है कि ऋषि ने राम को तलवार चलाने की शिक्षा दी थी। ३८वें सर्ग में सब हथियारों के प्रतिसंहार करने के उपाय भी समझाये थे। जिन सज्जनों को इनकी पूरी जानकारी लेनी हो बालकाण्ड के उक्त दोनों सर्गों को पढ़ें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(२) अरण्य काण्ड के ७० वें सर्ग के ४,८ और ६वे श्लोकों को पढ़ें—

"त्वां च मां च पुरा तूर्णमादत्ते राक्षसाधमः ।
तस्मादसिभ्यामाशु बाहू छिन्दावहै गुरू ॥" श्लोक ४॥

"ततस्तौ देशकालज्ञौ खड्गाभ्यामेव राघवौ ।
अच्छिन्दतां सुसंहृष्टौ बाहू तस्यांसदेशतः ॥" श्लोक ८ ॥

"दक्षिणो दक्षिणं बाहुमसक्तमसिना- ततः ।
चिच्छेद रामो वेगेन सव्य वीरस्तु लक्ष्मणः ॥ श्लोक ६ ॥

प्रकरण यह है कि कबन्ध नामक महाराक्षस ने राम और लक्ष्मण दोनों को पकड़ लिया । वे दोनों खड्गधारी और दृढ़ धनुष लिये हुए थे । तब राक्षस ने उनको पूछा कि खड्गधारी तुम कौन हो ? राम और लक्ष्मण ने अपना परिचय दिया । राक्षस ने दोनों भाइयों को अपनी भुजाओं में कस लिया । और उनके मांस को खाना चाहा । तब उक्त ७० सर्ग के तीनों श्लोकों में दोनों राजकुमारों ने यह विचार किया और लक्ष्मण ने राम से कहा कि—

"हे राम ! तुझे और मुझे पहिले शीघ्र यह राक्षस पकड़े और खावे तो पहिले ही हम अपनी-अपनी 'असि' तलवारों से शीघ्र ही इसकी महाभुजाओं को काट डालें ॥४॥"

"अवसर और स्थान को जानने वाले खड्गधारी दोनों राघव—राम और लक्ष्मण ने सुसंघटित राक्षस की भुजाओं को उनके कन्धों के स्थान से काट डाला ।८।" "अर्थात् दक्षिण पार्श्व स्थित राम ने बाहु को असक्त रूप से तलवार से काट दिया और वायीं ओर की भुजा को बड़े वेग से वीर लक्ष्मण ने काट दिया ॥६॥"

इस प्रकरण में वाल्मीकि मुनि ने अपने रामायण काव्य में राम और लक्ष्मण को खड्ग—असि अर्थात् तलवार धारी लिखा है और बताया है कि कवन्ध राक्षस को मारने के लिये दोनों भाइयों ने तलवार का प्रयोग किया ।

(३) इसी प्रकार युद्ध काण्ड में युद्ध के समय अन्य वीरों ने भी तलवार का प्रयोग किया था परन्तु औरों का वर्णन हम इसलिये नहीं करते क्योंकि राम के हाथ में तलवार वाला चित्र (जन-ज्ञान के अन्तिम पृष्ठ पर प्रकाशित) देखकर सन्देह कर्त्ता ने निवारण की जिज्ञासा की । तदनुसार ही हमने मूल संस्कृत वाल्मीकि रामायण के प्रमाण देकर सन्देह का निवारण करने का यत्न किया है ।

खेद है कि आर्य महानुभाव स्वयं ग्रन्थों का अध्ययन नहीं करते । भ्रम में पड़कर दूसरे लोगों से अपने सन्देहों की निवृत्ति कराना चाहते हैं । मैं सन्देहकर्त्ता पाण्डेय जी को बधाई देता हूँ कि आपने जनता में फैले सन्देह को दूर करने के लिये पत्र लिख आर्य बन्धुओं और अन्य सज्जनों को कृतार्थ किया है ।

—जगदेवसिंह सिद्धान्ती, शास्त्री

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न्दर फरनीचर का
गतिशील नाम

डिलाईट

के अनुभव और कार्यकुशलता के कारण आज डिलाईट
अलमारियाँ और फरनीचर सारे भारत में प्रसिद्ध हैं
कि यह देखने में सुन्दर, मजबूत, टिकाऊ और पक्के
में उपलब्ध हैं। दुकान हो या घर, विवाह हो या कोई
अवसर, यह सब की शोभा बढ़ाता है।

प भी आज डिलाईट फरनीचर खरीद कर
न घर, आफिस व दुकान की शोभा बढ़ावें
र आनन्द पावें।

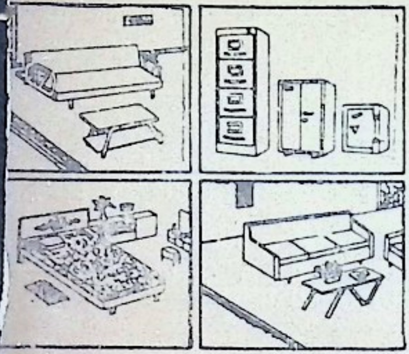

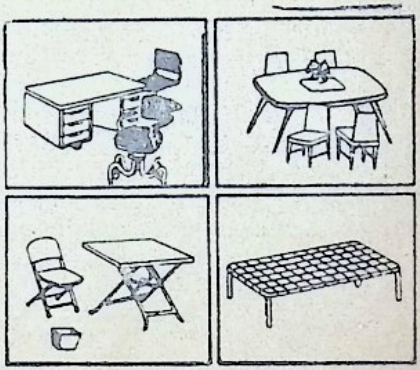

डिलाईट सेफ वर्क्स
कुतुब रोड, दिल्ली-६ फोन 511380

विक्रेता

१. काटेज स्टोर, २० विनय नगर मार्कीट, नई दिल्ली।
२. काश्मीर क्राकरी हाऊस, लक्कड़ बाजार, लुधियाना।
३. मित्तल ब्रादर्स, किरकी बाजार, भटिण्डा। ४. निहालचन्द गोपालदास अबोहर।
५. महेन्द्रा ब्रादर्स, कोर्ट रोड, मोगा।
६. जैम मेटल्स कार्पोरेशन, सेक्टर ७-सी दु० नं० ३० मध्य मार्ग, चण्डीगढ़।
७. हरयाणा आयरन एण्ड स्टील इण्डस्ट्रीज, बाजार हिसारिया, सिरसा।
८. लीला इलैक्ट्रिक कं०, ७० कोतवाली रोड, श्री गंगानगर (राज०)।
९. राणा इण्डस्ट्रीज, लाडपुरा बाजार, कोटा (राज०)
१०. आदर्श इलैक्ट्रिक एण्ड जनरल सप्लायर्ज, नैका ओली, नीमच (म० प्र०)।
११. ओवरसीज ट्रेड एजेन्सीज, केसर गंज, अजमेर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जन-ज्ञान (मासिक)
१५६७, हरध्यानसिंह मार्ग
नई दिल्ली-५

आश्विन
संवत् २०३१
सितम्बर १९७४

R. N. 107119/65
रजि० नं०
डी०—(सी०) २०१

जोधपुर के एक मध्यम वर्गीय परिवार की इस छोटीसी बच्ची शर्मिष्ठा कश्यप आयु ४ वर्ष ने अपने गुल्लक में जोड़े हुए धन को अपनी इच्छा से वेद-भाष्य प्रकाशन यज्ञ में दान देकर प्रभु का मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया है।

कन्या के पिता हैं डा० श्रीनिवास कश्यप। प्रभु नन्हीं बालिका को सब भांति सौख्य प्रदान करें।

आशीर्वाद सहित —

सम्पादक

मुद्रक—प्रकाशक—संपादक श्रीमती पं० राकेशरानी द्वारा सैनी प्रिन्टर्स दिल्ली—६ में छपा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi